दैनिक

लखनऊ से प्रकाशित एवं उ.प्र., बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, दिल्ली में प्रसारित

RNI-UPHIN/2014/58471

अमन लेखनी

यहां ले सकते हैं आप ग्राम्य जीवनशैली....

अब बड़े बैनर्स की फिल्में करने की इच्छा है : बिदिता बाग

वर्ष : 09 | अंक : 330 | लखनऊ, 06 नवम्बर, सोमवार 2023 | पृष्ठ : 08 | मूल्य : 2.00 रुपए

मौसम

अधिकतम तापमान 33.c

न्यूनतम तापमान 27.c

बाजार

सोना 5510/ g

चांदी 73.50/ g

सेंसेक्स 64,948.66

निफ्टी 19,310.15

अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, भारत के भीतर राम राज्य की उद्घोषणा की शुरूआत है : सीएम योगी

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

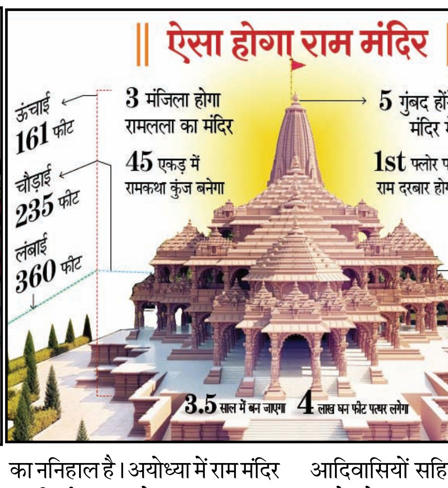

सुकमा। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को कहा कि अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारत के अंदर राम राज्य की उद्घोषणा की शुरूआत है, जहां जाति और धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा। छत्तीसगढ़ के कोंटा विधानसभा क्षेत्र में एक रैली को संबोधित करते हुए भाजपा नेता ने छत्तीसगढ़ की कांग्रेस सरकार पर राज्य में लव जिहाद और धर्मांतरण को बढ़ावा देने का आरोप लगाया।

सुकमा जिले की कोंटा सीट उन 20 विधानसभा क्षेत्रों में से एक है, जहां पहले चरण में मतदान होगा। राज्य के 90 सदस्यीय विधानसभा के लिए दो चरणों में मतदान होगा। पहले चरण में 20 सीटों पर तथा अन्य 70 सीटों पर 17 नवंबर को दूसरे चरण में मतदान होगा। पहले चरण के लिए प्रचार रविवार शाम को समाप्त हो जाएगा। योगी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा, अयोध्या में भगवान राम के मंदिर का निर्माण जनवरी में पूरा हो जाएगा। इससे उत्तर प्रदेश से अधिक छत्तीसगढ़ के लोगों को खुश होना चाहिए क्योंकि छत्तीसगढ़ भगवान राम का ननिहाल है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण भारत के अंदर राम राज्य की उद्घोषणा की शुरूआत है।

उन्होंने कहा, राम राज्य का अर्थ है ऐसा शासन जहां जाति और धर्म के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा। योजनाओं का लाभ गरीबों, वंचितों, आदिवासियों सहित हर व्यक्ति तक पहुंचे। योजना का लाभ सभी तक सीधे पहुंचना चाहिए। सभी को सुरक्षा, सुविधाएं और संसाधनों पर अधिकार मिले, यही राम राज्य है। योगी ने केंद्र सरकार की योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा, याद रखें, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने वास्तव में पिछले साढ़े नौ वर्षों में पूरे देश में राम राज्य की नींव रखी है।

योगी आदित्यनाथ ने भूपेश बघेल सरकार पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया, यहां (छत्तीसगढ़ में) सरकार लव जिहाद और धर्मांतरण की गतिविधियों पर चुप है। यहां हर तरह से ऐसी गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यह कोई सरकार नहीं है, बल्कि यह एक समस्या बन गई है। कांग्रेस अपने आप में एक समस्या बन गई है। जल्द से जल्द इस समस्या से छुटकारा पाएं और छत्तीसगढ़ के सपनों को साकार करने में सहयोग करें। उन्होंने कोयला, शराब, खनन और लोक सेवा आयोग में कथित घोटालों को लेकर भी बघेल सरकार पर हमला बोला। भाजपा ने कोंटा सीट से सोयम मुका को मैदान में उतारा है। यहां से कांग्रेस के उम्मीदवार मौजूदा विधायक और मंत्री कवासी लखमा हैं।

वोकल फॉर लोकल से जनजातियों का भी हो रहा विकास : पीएम मोदी

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नयी दिल्ली। भारत अमृत काल पहला वर्ष मना रहा है। अमृत काल के पहले वर्ष में पड़ने वाली यह दीपावली संकल्प शक्ति से युक्त भारत के नवनिर्माण की दिवाली है। यह दिवाली अमृत यात्रा से भारत को विकसित बनाकर सशक्त करने की शुरूआत करेगी। भारतीय रीति और परंपराओं के जरिए त्योहार से देश के जन-जन को एक संकल्प से जोड़ा है। इसी के जरिए राष्ट्र को आत्मनिर्भरता के मार्ग पर चलने का अवसर भी मिला है जिसका प्रमुख उदाहरण है लोकल के लिए वोकल। स्वर का लोकल का ही नतीजा है कि भारत के श्रम की महक चारों दिशाओं में फैलने लगी है। एक समय ऐसा था कि कई उत्पादों के लिए भारत को कभी आयात पर निर्भर रहना पड़ता था लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वर का लोकल और आत्मनिर्भर भारत के आह्वान से यह धारा बदल गई है। स्वर का लोकल अभियान से न केवल विकसित भारत के संकल्प का आधार बना है बल्कि दशकों से सुदूर क्षेत्र में रहने वाले आदिवासी हो या फिर अन्य वंचित पिछड़े वर्ग के लोग जिनके उत्पादन और कल को एक विशेष क्षेत्र तक सीमित कर दिया गया था उन्हें भी इस लोकल फॉर वोकल के जरिए नई उम्मीद और नया अवसर मिला है। इस अभियान के जरिए जनजातीय चेहरों पर नई मुस्कान आई है। हर भारतीय ने स्थानीय स्तर पर बने स्वदेशी उत्पाद की भावना से खुद को गर्वित महसूस किया। आज के समय में भारत में इस अभियान के तहत कड़ी के खिलौने से लेकर रक्षा से इलेक्ट्रॉनिक्स तक केंद्र सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं जिससे वह कल का लोकल और आत्मनिर्भर भारत की नींव मजबूत हुई है।

संक्षिप्त समाचार

नोएडा के ट्विन टावर की तरह दिल्ली का अपार्टमेंट भी गिराया जाएगा

नोएडा का ट्विन टावर तो सभी को याद है जिसे कुछ समय पहले ही ध्वस्त किया गया था। इसी कड़ी में अब दिल्ली की भी एक बहू मंजिला इमारत को ध्वस्त करने की तैयारी शुरू हो गई है। दिल्ली विकास प्राधिकरण ने उत्तर पश्चिम दिल्ली के मुखर्जी नगर में बनी बहु मंजिला इमारत सिगनेचर व्यू अपार्टमेंट को ध्वस्त करने के लिए तैयारियां शुरू की है। बता दे कि सिग्नेचर व्यू अपार्टमेंट का निर्माण वर्ष 2007 से 2009 के बीच किया गया था। सिगनेचर व्यू अपार्टमेंट में कुल 336 फ्लैट है जिसमें एचआईजी और एमआईजी फ्लैट्स शामिल है। इंफ्रास्टेट के निवासियों ने प्लांट में आने वाली परेशानियों की शिकायत डीडीए से की। वीडियो के आदेश पर आईआईटी दिल्ली ने सिगनेचर व्यू अपार्टमेंट का निरीक्षण किया और पता चला की इमारत संरचनात्मक रूप से असुरक्षित है। इस रिपोर्ट के आने के बाद डीडीए ने सिगनेचर व्यू अपार्टमेंट में रहने वाले लोगों को 30 नवंबर तक बिल्डिंग खाली करने के आदेश जारी किए हैं। इससे पहले सितंबर के महीने में दीदी ने सिगनेचर व्यू अपार्टमेंट के निवासियों के साथ डील फाइनल कर ली थी और सभी को 15 अक्टूबर तक संबंधित दस्तावेजों पर साइन करने का समय दिया गया था।

दिल्ली में प्रदूषण के कारण प्राथमिक विद्यालय किए गए बंद

नयी दिल्ली। दिल्ली की शिक्षा मंत्री आतिशी ने रविवार को घोषणा की कि राष्ट्रीय राजधानी में बढ़ते प्रदूषण के मद्देनजर सभी प्राथमिक विद्यालयों को 10 नवंबर तक के लिए बंद कर दिया गया है। छठी से 12वीं कक्षाओं के छात्रों को ऑनलाइन पढ़ाने का विकल्प दिया गया है। आतिशी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, प्रदूषण का स्तर बहुत ज्यादा रहने के कारण दिल्ली में प्राथमिक स्कूल 10 नवंबर तक बंद रहेंगे। स्कूलों को छठी से 12वीं तक के छात्रों के लिए ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करने का विकल्प दिया गया है। दिल्ली में रविवार को लगातार छठवें दिन जहरीली और घनी धुंध छायी रही और हवा की प्रतिकूल परिस्थितियों खासतौर से रात के दौरान हवा की मंद गति के कारण प्रदूषण स्तर एक बार फिर अत्यधित गंभीर श्रेणी में पहुंच गया है। वायु गुणवत्ता सूचकांक शनिवार शाम चार बजे के 415 से बढ़कर रविवार को सुबह सात बजे 460 पर पहुंच गया। इससे पहले, मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने घोषणा की थी कि दिल्ली में सभी सरकारी और निजी प्राथमिक विद्यालय बढ़ते प्रदूषण के कारण तीन और चार नवंबर को बंद रहेंगे।

पिछड़ों के कल्याण के लिए पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्रालय का भी गठन होना चाहिए : अनुप्रिया पटेल

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नयी दिल्ली। केन्द्रीय वाणिज्य राज्य मंत्री और अपना दल (सोनेलाल) की अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल ने शनिवार को पिछड़ों के कल्याण के लिए पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्रालय के गठन की मांग उठायी। इसके साथ ही उन्होंने जातीय जनगणना पर जोर देते हुए कहा कि जातिगत जनगणना से ही पिछड़ों-दलितों की सही स्थिति का आकलन होगा और पिछड़ों के कल्याण के लिए नीतियां तैयार होंगी। अपना दल (एस) की राष्ट्रीय अध्यक्ष पटेल ने शनिवार को पार्टी के स्थापना दिवस पर अयोध्या के राजपूत पैलेस में एक समारोह को संबोधित करते हुए कहा, पिछड़ों के कल्याण के लिए अल्पसंख्यक मंत्रालय की तर्ज पर पिछड़ा वर्ग कल्याण मंत्रालय का भी गठन होना चाहिए। इसके अलावा अखिल भारतीय न्यायिक सेवा का गठन हो ताकि न्यायपालिका में भी दलित-पिछड़ा वर्ग के होनहार युवाओं को जज बनने का अवसर मिल सके। अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के कुर्मी समाज से आने वालीं अनुप्रिया पटेल राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) का हिस्सा हैं। उनके पिता डॉक्टर सोनेलाल पटेल ने चार नवंबर, 1995 को अपना दल की स्थापना की थी। स्थापना समारोह को संबोधित करते हुए अनुप्रिया ने कहा, पार्टी के करोड़ों कार्यकताओं एवं समर्थकों की मेहनत की बदौलत आज हमारी पार्टी प्रदेश की तीसरे नंबर की पार्टी का गौरव हासिल कर चुकी है, लेकिन हमें तीसरे स्थान से संतुष्ट होने की जरूरत नहीं।

सभी महिला सैनिकों को समान रूप से दिया जाएगा मातृत्व, शिशु देखभाल अवकाश

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नयी दिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सभी महिला सैन्यकर्मियों को समान रूप से मातृत्व, शिशु देखभाल और दत्तक ग्रहण अवकाश देने संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। रक्षा मंत्रालय ने रविवार को बताया कि यह निर्णय सशस्त्र बलों में हर रैंक की महिलाओं की समावेशी भागीदारी सुनिश्चित करने के सिंह के दृष्टिकोण के अनुरूप है। उसने कहा कि इस कदम से सेना में महिलाओं को अपने पेशेवर एवं पारिवारिक जीवन को बेहतर तरीके से संतुलित करने में मदद मिलेगी तथा इससे कामकाजी स्थिति में सुधार होगा। मंत्रालय ने कहा रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने सशस्त्र बलों में महिला सैनिकों, नाविकों और वायु सैनिकों के लिए उनकी समकक्ष अधिकारियों के बराबर मातृत्व, शिशु देखभाल और दत्तक ग्रहण अवकाश देने संबंधी नियमों को लागू करने से जुड़े प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

मंत्रालय ने कहा, इन नियमों के जारी हो जाने से सेना में सभी महिलाओं को समान रूप से ये छुट्टियां मिलेंगी, भले ही वे कोई अधिकारी हो या किसी अन्य रैंक पर कार्यरत हों। अधिकारियों ने बताया कि इस समय महिला अधिकारियों को हर बच्चे के लिए 180 दिन का मातृत्व अवकाश मिलता है। यह नियम अधिकतम दो बच्चों पर लागू होता है। उन्होंने बताया कि महिला अधिकारियों को संपूर्ण सेवा कार्यालय में 360 दिन का शिशु देखभाल अवकाश मिलता है। इसके लिए बच्चे की आयु 18 वर्ष से कम होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि एक वर्ष से कम उम्र के बच्चे को गोद लेने की वैध तिथि के बाद 180 दिनों की दत्तक ग्रहण छुट्टी दी जाती है। मंत्रालय ने एक बयान में कहा, अवकाश संबंधी नियमों के विस्तार से सशस्त्र बलों में महिला-विशिष्ट पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं से निपटने में काफी मदद मिलेगी। उसने कहा, इस कदम से सेना में महिलाओं के लिए कामकाजी स्थितियों में सुधार होगा और उन्हें पेशेवर एवं पारिवारिक जीवन में बेहतर तरीके से संतुलन बनाने में मदद मिलेगी।

मंत्रालय ने कहा कि तीनों सेनाओं ने नारी शक्ति का उपयोग करने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता के अनुरूप सैनिकों, नाविकों और वायु सैनिकों के रूप में महिलाओं को शामिल करके एक बड़े बदलाव की शुरूआत की है। उसने कहा, महिला अग्निवीरों की भर्ती किए जाने से सशस्त्र बल देश की भूमि, समुद्र और हवाई सीमाओं की रक्षा के लिए महिला सैनिकों, नाविकों और वायु योद्धाओं की बहादुरी, समर्पण और देशभक्ति से सशक्त होंगे।

शतकवीर कोहली, जडेजा के पंजे ने भारत को दिलाई आठवीं जीत

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

कोलकाता के ईडन गार्डन्स में भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की। टीम इंडिया ने साउथ अफ्रीका को जीत के लिए 327 रन का लक्ष्य दिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए साउथ अफ्रीका के बल्लेबाज भारतीय गेंदबाजी का सामना नहीं कर सके। अफ्रीका की पूरी टीम 27.1 ओवर में 83 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। रवींद्र जडेजा ने पांच विकेट लिए।

वर्ल्ड कप 2023 के 37वें मैच में भारत ने साउथ अफ्रीका को एकतरफा मुकाबले में 243 रन से हराया दिया। इसके साथ ही भारत ने लगातार आठवीं जीत दर्ज की। साउथ अफ्रीका की पूरी टीम 27.1 ओवर में 83 रन बनाकर ऑल आउट हो गई। रवींद्र जडेजा को पांच विकेट मिले। कोलकाता के ईडन गार्ड-?स में भारत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की। रोहित शर्मा ने 24 गेंद पर 40 रन बनाकर भारत को तेज शुरूआत दी। इसके बाद कोहली और श्रेयस अय्यर ने भारतीय पारी को आगे बढ़ाया। दोनों के बीच 139 रन की साझेदारी हुई। श्रेयस 77 रन बनाकर पवेलियन लौटे। स्टार बल्लेबाज विराट कोहली ने अपने वनडे करियर का 49वां शतक जड़ा। कोहली ने जड़ा 49वां वनडे शतक विराट कोहली ने 121 गेंदों का सामना करते हुए 101 रन की नाबाद शतकीय पारी खेली। उन्होंने इस दौरान सचिन तेंदुलकर के वनडे में सबसे ज्यादा शतक के विश्व रिकॉर्ड की बराबरी कर ली। जडेजा ने नाबाद 29 रन का योगदान दिया। इसकी बदौलत टीम इंडिया ने साउथ अफ्रीका को जीत के लिए 327 रन का लक्ष्य दिया।

फिसड्डी साबित हुई साउथ अफ्रीका की बल्लेबाजी

लक्ष्य का पीछा करते हुए साउथ अफ्रीका के बल्लेबाज भारतीय गेंदबाजी का सामना नहीं कर सके। सिराज ने दूसरे ओवर में साउथ अफ्रीका को जो पहला झटका दिया उससे टीम उबर नहीं पाई। साउथ अफ्रीका की तरफ से मार्को यान्सन ने सर्वाधिक 14 रन बनाए। सात बल्लेबाज दहाई का आंकड़ा तक नहीं पार कर पाए।

जडेजा ने रचा इतिहास

रवींद्र जडेजा ने 9 ओवर में 33 रन देकर 5 विकेट लिए। युजवेंद्र चहल के बाद रवींद्र जडेजा दूसरे भारतीय स्पिनर बने, जिन्होंने वर्ल्ड कप में पांच विकेट लिए हैं। युजवेंद्र चहल ने 2011 में आयरलैंड के खिलाफ यह कारनामा किया था। इस मैच में शमी और कुलदीप यादव दो-दो विकेट मिले। एक विकेट सिराज के नाम रही।

मथुरा में 14 नवंबर से शुरू होगा ब्रजरज उत्सव, दो सप्ताह तक चलेगा

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

मथुरा। उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद 14 नवंबर से दो सप्ताह तक चलने वाले ब्रजरज उत्सव का आयोजन करेगी। एक प्रशासनिक अधिकारी ने रविवार को यह जानकारी दी। इस बार यह उत्सव महान कृष्णभक्त मीराबाई की 525वीं जयंती के अवसर पर आयोजित किया जा रहा है। नृत्य नाटिका का आयोजन इस उत्सव का मुख्य आकर्षण होगा जिसमें फिल्म अभिनेत्री तथा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की स्थानीय सांसद हेमामालिनी मीराबाई के किरदार में नजर आएंगी। परिषद के मुख्य कार्यपालक अधिकारी एवं मथुरा-वृन्दावन विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष नगेंद्र प्रताप ने बताया कि उप्र ब्रज तीर्थ विकास परिषद की ओर से हर साल आयोजित होने वाला ब्रजरज उत्सव मथुरा ही नहीं, आसपास के जिलों के कलाकारों के लिए एक बड़ा मंच प्रदान करता है। इस वर्ष ब्रजरज उत्सव दीपावली के ठीक बाद 14 से 27 नवंबर तक आयोजित किया जाएगा, जो कि कृष्णभक्त मीराबाई की 525वीं जयंती के अवसर पर आयोजित किया जा रहा है।

राहुल गांधी ने किया केदारनाथ के दर्शन

अखाड़ा परिषद ने धार्मिक यात्रा को बताया ढोंग

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, कांग्रेस सांसद राहुल गांधी विधानसभा चुनाव के प्रचार के बीच 5 नवंबर को केदारनाथ धाम पहुंचे हैं। राहुल गांधी पांच राज्यों और आगामी लोकसभा चुनाव में पार्टी की जीत के लिए केदारनाथ धाम पहुंचे। केदारनाथ पहुंचने के बाद उन्होंने पूजा अर्चना की और पुजारी से मुलाकात भी की। कांग्रेस सांसद आगामी तीन दिनों तक उत्तराखंड में ही रुकने वाले हैं। उत्तराखंड से दिल्ली के लिए राहुल गांधी की वापसी मंगलवार को होगी।

उत्तराखंड में राहुल गांधी का तीन दिवसीय दौरा

राहुल गांधी उत्तराखंड में तीन दिवसीय दौरे पर रहने वाले हैं। राहुल जॉली ग्रांट एयरपोर्ट पर दोपहर उतरे और यहां से केदारनाथ धाम हेलीकॉप्टर के जरिए पहुंचे हैं। राहुल गांधी ने बेहद सादगी के साथ केदारनाथ धाम में बाबा के दर्शन किए हैं। केदारनाथ धाम जाने के दौरान राहुल गांधी सुरक्षा काफिले के साथ नहीं पहुंचे। राहुल गांधी की इस उत्तराखंड यात्रा के दौरान उत्तराखंड कांग्रेस के नेताओं ने उनका स्वागत किया है। उत्तराखंड कांग्रेस ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर बताया कि राहुल गांधी निजी धार्मिक यात्रा पर उत्तराखंड पहुंचे हैं।

कांग्रेस कार्यकताओं ने राहुल गांधी की इस निजी यात्रा का सम्मान करते हुए उनका स्वागत किया है। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि अगली बार जब राहुल गांधी राजनीतिक यात्रा पर उत्तराखंड आएंगे तब कार्यकताओं से मुलाकात कर सकेंगे। वहीं राहुल गांधी की इस धार्मिक यात्रा पर राजनीति भी होने लगी है।

राहुल गांधी की इस यात्रा को लेकर अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत रवींद्र पुरी ने कहा है कि राम को नहीं मानने वाले का कभी भी भला नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की यात्रा दिखावा है। वह भी थे एक वर्ष से यात्राएं कर रहे हैं लेकिन उनके प्रवक्ता लगातार भगवान राम और सनातन धर्म का विरोध करते नजर आते हैं। कांग्रेस पार्टी के नेताओं के बयान से साफ है कि चुनाव के पहले वह सिर्फ धार्मिक यात्रा पर जाकर दिखावा कर रहे है।

भ्रष्टाचार के खिलाफ मोदी की लड़ाई नौटंकी, डर से भ्रष्टाचारी होते हैं भाजपा में शामिल: केजरीवाल

एजेंसी / अमन लेखनी समाचार

नई दिल्ली, आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार की भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई को नौटंकी करार दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जिन पर गलत कार्य करने का आरोप लगाती है, उन्हें पार्टी में शामिल होने पर मंत्री पद से सम्मानित करती है। हरियाणा के रोहतक में पार्टी के एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए दिल्ली के मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि अगर किसी ने बड़ा पाप या अपराध किया है और वह भाजपा में शामिल हो जाता है, तो केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई), प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) या आयकर विभाग के अधिकारी कभी उसे छूने की हिम्मत नहीं करेंगे। आप नेता ने कहा, कौन भ्रष्ट है? भ्रष्ट वे नहीं हैं, जिन्हें ईडी ने पकड़ा है और सलाखों के पीछे भेजा है।

भ्रष्ट वे हैं, जो ईडी के डर से भाजपा में शामिल हो गए। जिन्हें ईडी ने पकड़ा है, लेकिन भाजपा में शामिल नहीं हुए, वे कट्टर ईमानदार हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि आज नहीं तो कल वे बाहर आ जाएंगे। केजरीवाल ने कहा, लेकिन जो बेइमानी में संलिप्त हैं, वे जानते हैं कि अगर उन्हें गिरफ्तार किया गया तो पूरी जिंदगी जेल में बितानी होगी, इसलिए (वे) तुरंत भाजपा में शामिल हो जाते हैं। इसलिए समझिए कि कौन भ्रष्ट है और कौन ईमानदार। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री कहते हैं कि वह भ्रष्टाचार और भ्रष्ट के खिलाफ लड़ाई लड़ रहे हैं, लेकिन मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि अगर यह सच है तो केजरीवाल पहला व्यक्ति होगा जो आपका समर्थन करेगा। आप नेता ने किसी का नाम लिये बिना कहा कि मोदी ने राज्य का दौरा किया था और कुछ नेताओं का नाम लेकर कहा था कि वे भ्रष्ट हैं और उन्हें जेल भेजा जाएगा।

कुछ दिन बाद उन नेताओं ने भाजपा का दामन थाम लिया। उन्होंने सवाल किया, क्या यह आपकी भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई है? यह नौटंकी है। ईडी ने हाल में केजरीवाल को कथित दिल्ली आबकारी नीति घोटाले में पूछताछ और धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) के तहत बयान दर्ज कराने के लिए बुलाया था। केजरीवाल गत बृहस्पतिवार को ईडी के समक्ष उपस्थित नहीं हुए और केंद्रीय एजेंसी से उन्हें भेजे गए समन को यह कहते हुए वापस लेने को कहा कि यह अस्पष्ट, दुर्भावना से प्रेरित और कानून के समक्ष नहीं टिकने वाला है। दिल्ली के मुख्यमंत्री ने कहा कि जनता प्रधानमंत्री के मित्र को लेकर चर्चा कर रही है, जो वास्तव में देश चला रहे हैं। उन्होंने कहा, कहा जाता है कि प्रधानमंत्री केवल उस मित्र के लिए काम कर रहे हैं और यह भी कहा जाता है कि वह मित्र देश चला रहा है न कि प्रधानमंत्री।

बसपा सरकार में मंत्री रहे राज बहादुर सिंह ने ज्वाईन किया कांग्रेस

पूर्व आई0पी0एस0 उमेश कुमार सिंह ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की

लोकसभा चुनाव से पहले कांग्रेस पार्टी में ज्वाईनिंग का दौर जारी

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीतियों एवं उसकी समावेशी विचारधारा में आस्था व्यक्त करते हुए एवं कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी तथा महासचिव प्रभारी उत्तर प्रदेश प्रियंका गांधी द्वारा देश एवं संविधान की रक्षा हेतु किये जा रहे संघर्षों से प्रेरित होकर आज यहां प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर सेवानिवृत्त आई0पी0एस0 उमेश कुमार सिंह, निशी सिंह, भूपेन्द्र सिंह, पूर्व मंत्री राज बहादुर सिंह, जिला अधिवक्ता संघ लखीमपुर खीरी के महासचिव मनोज जायसवाल, रवि प्रकाश सिंह, जावेद अली खां, रितू अग्रवाल, सुनील कुमार, शाहिद खान, मो0 सलीम एवं मो0 आजम खां सहित सैकड़ों लोगों ने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष पूर्व मंत्री अजय राय के समक्ष पार्टी की प्राथमिक सदस्यता ग्रहण की।

प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता डा0 राहुल राजभर ने जानकारी देते हुए बताया कि सदस्यता ग्रहण कार्यक्रम में आये सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने कहा कि आज जनता भाजपा की जनविरोधी नीतियों से परेशान हो चुकी है। प्रदेश में कानून व्यवस्था नाम की कोई चीज ही नहीं रह गई है आए दिन अपराधियों द्वारा हत्या, डकैती, बलात्कार, लूट जैसी जघन्य आपराधिक घटनाओं को अंजाम दिया जा रहा है, जिससे प्रदेश की जनता में घोर निराशा है। नौजवान अपने आप को ठगा महसूस कर रहा है।

उन्होंने कहा कि हमारे नेता राहुल गांधी द्वारा चलाई गई ₹भारत जोड़ो यात्रा₹ का मुख्य उद्देश्य देश की जनता के दुख दर्द को समझना तथा भविष्य में उसे दूर करने का प्रयास करने का है।

जिससे प्रभावित होकर आज कई राजनैतिक दल एवं आम जनता अपना विश्वास कांग्रेस पार्टी में जता रही हैं। अब देश एवं प्रदेश की जनता को भरोसा हो गया है कि सिर्फ और सिर्फ कांग्रेस ही एक मात्र ऐसी पार्टी है जो भाजपा के कुशासन से हमें निजात दिला सकती है।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि बसपा के संस्थापक कांशीराम जी के सहयोगी रहे पूर्व मंत्री एवं पूर्व आई0पी0एस0 अधिकारी जैसे बुद्धिजीवि लोगों का कांग्रेस पार्टी में आना इस बात का संकेत है कि पार्टी उत्तर प्रदेश में तेजी से मजबूत हो रही है और हर वर्ग व हर समाज की जनता हमारे साथ खड़ी हो रही है।

सदस्यता ग्रहण करने के उपरान्त पूर्व आई0पी0एस0 उमेश कुमार सिंह ने कहा कि हमारे सदस्यता ग्रहण करने का मकसद पार्टी को मजबूत करना है ताकि कमजोरों के हक की लड़ाई लड़ी जा सके। जिस तरह से मैने पुलिस अधिकारी के तौर पर पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ काम किया और प्रदेश को अपराधियों से मुक्त रखने का प्रयास किया उसी तरह मैं कांग्रेस पार्टी में निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ काम करुंगा। यह मेरे जीवन की नई पारी है जिसमें मेरी धर्मपत्नी भी मेरे साथ आकर पार्टी को मजबूत करने में अपना योगदान करेंगी।

वैसे उमेश कुमार सिंह ने अपने सरकारी सेवाकाल में बेहद ईमानदारी, कर्तव्य निष्ठा और बहादुरी के साथ कार्य करते हुए एक अलग स्थान बना रखा था उमेश कुमार सिंह की ईमानदार और स्वच्छ छवि के अधिकारियों में गिनती होती थी। सदस्यता ग्रहण करने वालों में प्रमुख रूप से दुल्लू राम, जे0पी0 सिंह, नागेन्द्र सिंह, शीतला, राजन, ननका देवी, सुरेन्द्र प्रताप, राहुल गौतम, कु0 राखी गौतम, रचना, प्रदीप कुमार, रवि गौतम, अरविन्द, सत्य प्रकाश श्रीवास्तव, शकील चौधरी, अनिल, सूर्य प्रताप सिंह आदि शामिल रहे। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महासचिव प्रभारी प्र्शासन दिनेश कुमार सिंह, पूर्व मंत्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी, पूर्व एम0एल0सी0 दीपक सिंह, उ0प्र0 कांग्रेस अल्पसंख्यक विभाग के चेयरमैन शहनवाज आलम, प्रदेश प्रवक्ता डा0 सी0पी0 राय, पूर्व विधायक पशुपति नाथ राय, डा0 जियाराम वर्मा, मो0 तालिब अली, अमित श्रीवस्तव त्यागी, डा0 पी0 के0 त्यागी, डा0 इरफान अहमद, शशिकांत चौबे, शराफत अली, श्री छोटेलाल, राजेश काली, अनिल मिश्रा, अकील चौधरी आदि प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

जेल में बंद युवक को जांच अधिकारी ने बनाया गवाह, बनाए फर्जी हस्ताक्षर

आरोप

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के मलिहाबाद तहसील क्षेत्र का एक ऐसा मामला प्रकाश में आया है, जहां जांच अधिकारी ने एक जेल में बंद युवक को गवाह बनाकर बनाये फर्जी हस्ताक्षर, पीड़ित द्वारा की गई शिकायत पर जांच करने पहुंचे अधिकारी ने गवाह के तौर पर एक ऐसे व्यक्ति का नाम डाल दिया जो उस समय जेल में बंद था, यही नहीं जांच अधिकारी ने गवाह का फर्जी हस्ताक्षर बनाकर संबंधित विभाग को उसकी रिपोर्ट भी सौंप दी। जेल से छूटने के बाद जानकारी होने पीड़ित ने बीते शनिवार को सम्पूर्ण समाधान दिवस में दोषी कर्मचारी पर कार्यवाही करने की शिकायत की है। समाधान दिवस में तहरीर देते हुए रहीमाबाद थाना क्षेत्र के खड़ौहां निवासी नीरज तिवारी ने बताया कि उसके गांव की गीता पत्नी करुणा शंकर ने शिकायती पत्र सम्पूर्ण समाधान दिवस में दिया होगा। जिसकी जांच ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत खड़ौहा को दी गई थी। जांच अधिकारी अनुज यादव ने बीते 26 जुलाई को जांच रिपोर्ट प्रेषित की जिसमे गवाह के तौर पर हमको नामित कर दिया। जबकि मैं 18 जुलाई से 3 अक्टूबर तक जिला कारागार में बंद था।

ग्राम विकास अधिकारी ने फर्जी साइन बना, उच्च अधिकारियों को किया गुमराह

मुझे गीता के शिकायती पत्र पर जांच अधिकारी ने फर्जी गवाह बनाया गया है। मैने किसी के मामले में कोई गवाही नहीं दी है, और न ही कोई हस्ताक्षर किए हैं। फिलहाल पीड़ित ने उचाधिकारियो से न्याय की गुहार लगाई है अब देखना यह होगा कि जेल में बंद व्यक्ति को गवाह बनाने वाले जांच अधिकारी पर क्या करवाई होगी।

महिला की अश्लील फोटो व वीडियों वायरल करने वाले युवक पर मुकदमा दर्ज

लखनऊ। निगोहां थाना क्षेत्र के एक गांव की महिला ने बीते शनिवार को पुलिस से लिखित शिकायत करते हुये बताया कुछ दिन पहले उसके मोबाइल पर एक नम्बर से काल आई, जिसने इंस्टाग्राम पर अपनी बाइक के साथ फोटो लगा रखी है, बाइक का नम्बर के आधार पर पता कराया उसका नाम इम्तियाज पुत्र लतीफ निवासी शीतलगंज थाना पुरवा, जनपद उन्नाव निकला।काल ? कर युवक उल्टी सीधी अश्लील व उल्टी सीधी बाते करता है, यही नही उक्त युवक उसकी अश्लील फोटो व वीडियों वाट्स एप पर भेजकर धमकता है यही नही आरोपी युवक ने उसकी अश्लील फोटो व वीडियो रिश्तेदारो के मोबाइल पर भेजकर धमकी दी है यदि तुम मुझसे बात नही करोगी तो फोटो व वीडियो को इंटरनेट पर डालकर वायरल कर दूगा।आरोपी युवक की हरकतो से वो ओर उसका परिवार मानसिक रूप से बहुत परेशान है।इंस्पेक्टर विनोद यादव ने बताया पीड़िता की तहरीर पर आरोपी के विरूद्ध मुकदमा दर्ज कर तलाश शुरू कर दी गयी हैं।

नारी शक्ति वंदन सम्मेलन का हुआ आयोजन

अमन लेखनी समाचार

मोहनलालगंज लखनऊ, राजधानी लखनऊ के मोहनलालगंज कस्बे में स्थित सत्य शिव रिजॉर्ट में आज नारी शक्ति वंदन सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में पहुंचे प्रदेश मंत्री शंकर गिरी ०केंद्रीय राज्य मंत्री कौशल किशोर ने सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में मौजूद महिलाओं को जानकारी दी और कहां सरकार महिलाओं की सुरक्षा के लिए दृढ़ संकल्प है आज हर क्षेत्र में महिलाएं अग्रिम पंक्ति में खड़ी हुई मिलेगी वही भाजपा विधायक अमरेश कुमार रावत ने कहां भाजपा सरकार महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विभिन्न योजनाएं चला रही हैं और महिलाओं को प्रोत्साहन भी दे रही है योजनाओं का लाभ लेते हुए महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही है और हर क्षेत्र में महिलाएं अग्रिम पंक्ति में खड़ी हुई मिलेगी विनय प्रताप सिंह जिला अध्यक्ष लखनऊ, अंजू रस्तोगी जिला अध्यक्ष महिला मोर्चा, राजकुमार वर्मा जी जिला महामंत्री, श्री रामलाल जी जिला महामंत्री, भाजपा मंडल अध्यक्ष सुधांशु सिंह कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी कार्यकताओं का आभार प्रकट किया इस मौके पर शालिनी सिंह महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष मोहनलालगंज, देवेंद्र सिंह प्रधान संघ अध्यक्ष मोहनलालगंज अभय प्रताप सिंह सहित काफी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे

दो शातिर स्नैचर गिरफ्तार

बाइक समेत लुटी गई चेन का चार टुकड़े बरामद

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ, आशियाना क्षेत्र में बीते 22 अक्टूबर को मार्निंग वाक दौरान महिला के गले से चेन स्नैचिंग की वारदात को अंजाम देने वाले दो लुटेरो को आशियाना पुलिस ने रविवार को मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया है जिनके कब्जे से राह चलते लोगो से लुटी गई चार सोने की चेन का टुकड़ा एवं घटना में उपयुक्त अपाचे मोटरसाइकिल बरामद हुआ हैं पुलिस ने लुट की घटना का अनावरण करते हुए दोनों शातिरो को जेल भेज दिया हैं पुलिस उपायुक्त पूर्वी आशीष श्रीवास्तव ने घटना का खुलासा करते हुए अपने कार्यालय पर बताया कि बीते 22 अक्टूबर की सुबह अपने पति संग मार्निंग वाक कर रही महिला संग अपाचे बाइकसवार बदमाशो ने चेन लुट की वारदात को अंजाम दे मिलेनियम स्कूल की ओर फरार हो गए थे पीड़ित की शिकायत पर अज्ञात बदमाशो के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आशियाना प्रभारी छत्रपाल सिंह के नेतृत्त्व में खुलासे के टीम लगाया गया था जिसमे हेड कांस्टेबल संदीप शर्मा धर्मेंद्र तिवारी ने वहीं रविवार को मुखबिर की सूचना पर दो बदमाशो को मानसरोवर योजना सेक्टर ओ तिराहे के पास से गिरफ्तार किया हैं जिनके कब्जे से राह चलते लोगो से लुटी गई चार सोने की चेन का टुकड़ा एवं घटना में उपयुक्त अपाचे मोटरसाइकिल बरामद हुआ है पुलिस के पूछताछ में शातिरो ने अपना जुर्म कबूल करते हुए अपना परिचय वसीम उर्फ आरिफ पुत्र मोहम्मद दीन निवासी बादशाह खेडा आलमनगर मुनेश्वर पुरम थाना तालकटोरा जनपद लखनऊ एवं मनीष सोनी उर्फ आदित्य सोनी पुत्र विजय कुमार सोनी निवासी सुजानपुरा थाना आलमबाग मुलपता ग्राम बालापुर चतुर्भुजपुर थाना मिलएरिया जनपद रायबरेली के रूप में दिया हैं जिनके खिलाफ दर्ज मुकदमे में कार्यवाई करते हुए जेल भेज दिया गया हैं

बंधु महल संस्थान द्वारा शिक्षकों को किया गया सम्मानित

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ। सामाजिक संस्था बंधु महल संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मानित किए जाने के क्रम में शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया। बंधु महल संस्था के अध्यक्ष मनोज भद्रा एवम सचिव सुशांत घोष के दिशा निर्देशन में इंदिरा नगर के राजेंद्र सिंह पार्क में इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर उपस्थित विधान परिषद सदस्य विजय बहादुर पाठक एवम प्रदीप अग्रवाल ने विकासखंड चिनहट के उत्कृष्ट शिक्षकों को प्रस्तिपत्र एवम स्मृति चिन्ह प्रदान किए। अतिथियों एवम बंधु महल के संस्थापक सदस्यों ने शिक्षकों के कार्यों एवम शिक्षक प्रतिनिधि के तौर पर सुधीर सहगल के प्रयासों की भूरि भूरि सराहना की, जिस पर श्री सहगल ने अतिथियों एवम बंधु महल संस्थान को पूरे बेसिक शिक्षा विभाग की तरफ से धन्यवाद ज्ञापित किया। सम्मानित होने वाले शिक्षकों भावना सिंह, पूजा वर्मा, संगीता कुमारी, मनीष शुक्ला पांडे, ओमिका परिणीति मिश्रा, प्रेमलता सोनकर, अनुराधा पाल, अनु यशोधरा आर्य, दयाराम मौर्य उपस्थित रहे।

अमन की हत्या के पांच आरोपियों को गिरफ्तार, भेजा जेल

अमन लेखनी समाचार

मोहनलालगंज। गोपालखेड़ा गांव में चार दिन पहले पुरानी रंजिश में वाद-विवाद के बाद युवक अमन सिंह की पिटाई के बाद गला कसकर हत्या के मामले में पीड़ित भाई अभिषेक की तहरीर पर नौ नामजद समेत आधा दर्जन अज्ञात के विरूद्ध हत्या समेत अन्य धाराओ में मुकदमा दर्ज कर आरोपियो की तलाश में जुटी पुलिस टीमो ने बीते शनिवार को पांच आरोपियों शत्रोहन कश्यप, शिवराज सिंह उर्फ सज्जन, अमित कश्यप, पिंटू कश्यप, अनुज वर्मा निवासीगण गोपालखेड़ा थाना मोहनलालगंज को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया।जहां से पांचो हत्यारोपियों को जेल भेज दिया गया।इंस्पेक्टर संतोष कुमार आर्य ने बताया घटना के बाद से फरार चार आरोपियों की धरपकड़ के लिये पुलिस की कई टीमो को लगाया गया है, जल्द ही आरोपियों को गिरफ्तार कर सलाखो के पीछे भेजा जायेगा।

भाकियू धर्मेन्द्र गुट के राष्ट्रीय महामंत्री बने राकेश कुमार सिंह व प्रदेश उपाध्यक्ष कुलदीप

मोहनलालगंज में राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बैठक कर भाकियू धर्मेन्द्र गुट संगठक के खाली पदो पर पदाधिकारियो को नियुक्त

अमन लेखनी समाचार

मोहनलालगंज।मोहनलालगंज के ब्लू ऑर्चिड रिसार्ट में रविवार को आयोजित भारतीय किसान यूनियन धर्मेंद्र गुट के राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह की मौजूदगी मे पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओ की बैठक का आयोजन किया गया।बैठक में भाकियू संगठन के खाली पदो पर नये पदाधिकारियों को नियुक्त किया गया।भारतीय किसान यूनियन धर्मेन्द्र गुट के राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह ने बताया संगठन का विस्तार करते हुये मोहनलालगंज के गनियार गांव निवासी राकेश कुमार सिंह को संगठक की मजबूती के लिये राष्ट्रीय महामंत्री नियुक्त करने के साथ थी कुलदीप को प्रदेश उपाध्यक्ष व तहसील मोहनलालगंज का ब्लॉक अध्यक्ष अजीत तिवारी समेत महेंद्र कुमार लोधी को जिला सचिव व जिलाध्यक्ष युवा गिरीश द्विवेदी गुड्डू को नियुक्त किया गया । राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि किसानों की समस्याओं को अधिकारियों के सामने लाकर उन्हें न्याय दिलाना संगठन की प्राथमिकता है।इस दौरान नवनियुक्त पदाधिकारियों ने पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह को माला पहनाकर स्वागत किया उसके बाद धर्मेंद्र सिंह ने सभी पदाधिकारियों को माला पहनाकर बधाई दी।बैठक में मुख्य रूप से ग्राम अध्यक्ष माया देवी , श्रीमती विमलेश , इद्रीश , वेद प्रकाश सोनी , इंद्रजीत , भजन लाल कनौजिया , राजू रावत , शिवम शर्मा हरिश्चंद्र रावत सतीश विकास सिंह ,रामस्वरूप रावत , सिद्धान्त कुमार ,विनय कुमार पांडेय सहित सैकड़ो किसान बैठक में मौजूद रहे ।

स्वदेश सेवा संस्थान द्वारा चुप्पी तोड़ो आभियान चलाकर कई महाविद्यालयों में सेनेटरी पैड का किया गया वितरण

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ/प्रयागराज ।स्वदेश सेवा संस्थान द्वारा चुप्पी तोड़ो अभियान चलाकर कई महाविद्यालय में सेनेटरी पैड का वितरण किया गया । सैनिक बाल विकास विद्या मन्दिर स्कूल अशोक नगर में इस कार्यक्रम की शुरूआत हुई जिसमे एंबार्क फाउंडेशन की अध्यक्ष मुख्य अतिथि सुमन ऑस्कर जो की दिल्ली से चल कर प्रयागराज में इस प्रोग्राम के बारे में बच्ची तथा बच्चो को भी बताया की कैसे हम पीरियड्स टाइम में अपनी बहनों की तथा अपनी किसी भी साथी की समस्या को कैसे समझे और लड़कियों को अपने स्वास्थ तथा अपनी समस्या को बताने के लिए कैसे अपनी बात रखे सभी बातों पर प्रकाश डाला।साथ ही ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वधान में सभी बच्चो को जागरूक किया गया तथा

सेंट्री पैड का वितरण किया गया।

तृतीया कार्यक्रम स्वदेश सेवा संस्थान द्वारा सेवा बस्ती की महिलाओं के साथ तेलियरगंज तिकोना पार्क में बच्ची तथा महिलाओं को भी सेंट्री पैड का वितरण किया तथा अंत में राष्ट्र गान करा के प्रोग्राम का समापन किया गया।साथ ही हिंदू महिला विद्यालय व कैंट हाईस्कूल के बच्चियों को सुमन जी के द्वारा जागरूक किया गया। समाज में व्याप्त विभिन्न धारणाओं पर प्रकाश डालकर उन्हें अवगत कराया गया। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में डॉ आर के सर , मयंक अग्रवाल, रुचिन वर्मा, व विनय मिश्रा की उपस्तिथि रही। कार्यक्रम को सफल बनाने में स्वदेश सेवा संस्थान के स्वयंसेवक देव, हिमांशु, निशा, स्वाति, अमित, अभय, पूजा, रुद्रांश, सोनाली, आरती, सचिन, दिलीप, अनमोल, लक्ष्य इत्यादि के सहयोग से कार्यक्रम सफल हुआ।

अखिलेश यादव ने चुनावी जनसभाओं को सम्बोधित किया

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ, समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने आज मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले के जतारा विधानसभा क्षेत्र में समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी आर.आर. बंसल (बरार) और पन्ना जिले के गुन्नौर विधानसभा क्षेत्र की पार्टी प्रत्याशी अमिता बागरी के समर्थन में चुनावी जनसभाओं को सम्बोधित किया।

अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा लोकतंत्र नहीं लूटतंत्र पर भरोसा करती है। भाजपा लोकतंत्र की लूट कर रही है। उत्तर प्रदेश हो या मध्य प्रदेश भाजपा संविधान और लोकतंत्र को खत्म कर रही है। मध्य प्रदेश में गरीबी, बेरोजगारी के लिए भाजपा जिम्मेदार है। प्रधानमंत्री एक कार्यक्रम में कह रहे थे कि 13 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला। अगर इतने लोग गरीब रेखा से बाहर हो गये हैं तो यह राशन किसको दे रहे हैं?

प्रधानमंत्री जिस होटल में गरीबी पर भाषण दे रहे थे, उस होटल में दाल की कीमत एक हजार रुपए प्लेट और एक रोटी की कीमत चार सौ रुपये है। अखिलेश यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री के दावे के हिसाब से तो मध्य प्रदेश में अब कोई गरीब नहीं है। भाजपा के लोगों पर भरोसा नहीं करना है। जब चुनाव आता है तो भाजपा के लोग किसानों, गरीबों, नौजवानों से झूठे वादे करते है। चुनाव खत्म होने के बाद भूल जाते हैं।

अखिलेश यादव ने कहा कि कांग्रेस बहुत चालू पार्टी है। कांग्रेस ने समाजवादी पार्टी को धोखा दिया। मध्य प्रदेश की बदहाली के लिए भाजपा

कांग्रेस दोनों जिम्मेदार है। जिस रास्ते पर कांग्रेस चल रही थी। अब उसी रास्ते पर भाजपा चल रही है। कांग्रेस ने देष में जातीय जनगणना नहीं होने दिया था। कांग्रेस ने पिछड़ों के आरक्षण के लिए मण्डल कमीशन की रिपोर्ट को लागू नहीं होने दिया था। अब वही भाजपा कर रही है। भाजपा देश में जातीय जनगणना का विरोध कर रही है। पिछड़े और दलितों को उनकी हक और हिस्सेदारी नहीं दे रही है। भाजपा सामाजिक न्याय की दुश्मन है। कई राज्यों में मण्डल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार पिछड़ों के लिए 27फीसदी आरक्षण लागू है लेकिन मध्य प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस की सरकारों ने नहीं लागू किया। कांग्रेस और भाजपा में कोई फर्क नहीं दिखाई देता है।

यादव ने कहा कि जातीय जनगणना को लेकर समाजवादी पार्टी ने जो रास्ता दिखाया है उसका चमत्कार अब पूरे देश में देखने को मिल रहा है। सामाजिक न्याय विरोधी ताकते पहले जातीय जनगणना का विरोध कर रही थी लेकिन अब पिछड़ों की ताकत को देखकर वे विरोध का साहस नहीं जुटा पा रही है। भाजपा ने अग्निवीर योजना लाकर नौजवानों को धोखा दिया है। अग्निवीर को शहीद होने पर भाजपा सरकार सम्मान नहीं देती है। अग्निवीर को शहीद होने पर न सम्मान मिलेगा, न शहीद का दर्जा मिलेगा और न मदद मिलेगी। पंजाब में एक नौजवान शहीद हो गया उसे कोई सम्मान नहीं मिला। जो सरकार नौजवानों को फौज की आधी अधूरी नौकरी दे। क्या वह राष्ट्रवादी हो सकती है? ऐसी सरकार से सावधान रहना है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी सत्ता में आयेगी तो नौजवानों को पहले की तरह फौज में पक्की नौकरी दी जाएगी।

यादव ने कहा कि उत्तर प्रदेश में समाजवादी सरकार में अपराध नियंत्रण के लिए विश्वस्तरीय टेक्नालॉजी डायल 100 पुलिस सेवा उपलब्ध करायी गयी थी ताकि किसी झगड़े, मारपीट, लड़ाई में फोन करने पर पुलिस 15 मिनट में मदद के लिए पुलिस पहुंचे, माताओं, बहनों की सुरक्षा के लिए 1090 सेवा शुरू की थी। सुप्रीमकोर्ट ने भी 1090 सेवा की सराहना करते हुए कहा कि था कि ऐसी योजना देश के सभी राज्यों में लागू होनी चाहिए। भाजपा सरकारों ने कोई विकास नहीं किया। महिलाएं और बहन बेटियां सुरक्षित नहीं है। भ्रष्टाचार और अपराध चरम पर है।

जगन्नाथपुरी के मुख्य दैतपति सेवायत का निगोहां में स्वागत

अमन लेखनी समाचार

लखनऊ।जगन्नाथपुरी के मुख्य दैतपति सेवायत भवानीदास महराज जी का रविवार भवगान श्री जगन्नाथ मंदिर उड़ीसा से जुड़े भक्तों ने लखनऊ से फतेहपुर जाते समय निगोहा कस्बे में भव्य स्वागत किया।निगोहां के मायाराम त्रिपाठी ने बताया रविवार को उड़ीसा स्थित भगवान श्री जगन्नाथ मंदिर के मुख्य दैतपति श्री भवानीदास जी लखनऊ से फतेहपुर में जगन्नाथ जी टैम्पल का भूमि पूजन के लिये रहे थे।उसी समय निगोहा कस्बे रोककर पूर्व प्रधान अजय सिंह, सतेंद्र तिवारी, काका तिवारी अभयकांत दीक्षित सहित सैकड़ों भक्तों ने भव्य स्वागत कर आशीर्वाद लिया।

संक्षेप

पति-पत्नी के 19 विवादित जोड़े आपसी कलह भुलाकर एक साथ रहने को हुए राजी

उन्नाव।सिद्धार्थ शंकर मीना पुलिस अधीक्षक उन्नाव के कुशल निर्देशन एवं शशि शेखर सिंह अपर पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता व आशुतोष कुमार क्षेत्राधिकारी नगर के कुशल पर्यवेक्षण में रिजर्व पुलिस लाइन एवं विभिन्न थानों में स्थित महिला हेल्प डेस्क में पति-पत्नी के विवादित जोड़ों को बुलाया गया।परिवार परामर्श केन्द्र, परिवार परामर्शदाताओं एवं महिला हेल्पडेस्क की टीम द्वारा उनकी काउंसलिंग करते हुए उनके बीच उपजे विवाद को खत्म कराया गया तथा परिवार को टूटने से बचाया।तदोपरान्त परिवार परामर्श केन्द्र 08, महिला थाना से 06, रिपोर्टिंग पुलिस चौकी बीघापुर से 03, थाना फतेहपुर चौरासी व थाना बांगरमऊ से 01-01 जोड़े को बिना विवाद साथ रहने के वादे के साथ विदा किया गया।उपरोक्त पुनीत कार्य में डा0 आशीष श्रीवास्तव प्रभारी परिवार परामर्श समिति एवं सलाहकारों मे राजेन्द्र सिंह सेंगर, अबरार हुसैन, डा0 एस.के. पाण्डेय, डा0 शशि रंजना अग्निहोत्री, अबसार अली खान, डॉ0 सगीर अहमद, सहयोगी अंकित सिंह रघुवंशी व शिवेन्द्र सिंह एवं परिवार परामर्श केन्द्र से महिला उप निरीक्षक मधु श्रीवास्तव, विजेता चौधरी, महिला उप निरीक्षक भागीरथी, मंजू देवी, मिथलेश वर्मा, कुमार चिंतन, पारुल, श्रेता सोनम का विशेष योगदान रहा।

18 वर्ष पूर्ण कर चुकी युवतियों को मतदाता सूची में जोड़ने के लिए किया जागरूक

पुरवा, उन्नाव। तहसीलदार तरुण प्रताप सिंह ने कैंप लगाकर नव विवाहिताओ और 18 वर्ष पूर्ण कर चुकी युवतियों को मतदाता सूची में जोड़ने के लिए जागरूक किया तहसीलदार तरुण प्रताप सिंह कस्बे के एम आर आर एस इंटर कॉलेज तथा कटरा प्राथमिक विद्यालय में कैंप लगाकर विशेष मतदाता पुनरीक्षण दिवस के मौके पर नव विवाहित महिलाओं और 18 वर्ष पूर्ण कर चुकी युवतियों को मतदाता सूची में जुड़ने के लिए जागरूक किया मौके पर लेखपाल प्रशांत अवस्थी, पदम विशाल, रियाजुद्दीन आदि लोग मौजूद रहे

पुरानी रजिंश को लेकर चचेरे भाइयो में जमकर हुई मारपीट,

सुमेरपुर, उन्नाव।थाना-बिहार के अंतर्गत गाँव दुबाई में पुरानी रंजिश को लेकर चचेरे भाइयो में कहासुनी मारपीट में बदल गयी जिसमे एक महिला घायल भी हो गयी। पुलिस ने दोनों पक्षों के पाँच लोगो का शांति भंग में चालान कर दिया ग्राम दुबाई के निवासी विमलेश व बच्चालाल के मध्य पुरानी रंजिश को लेकर वाद विवाद मारपीट में बदल गया।मारपीट में विमलेश की माँ उर्मिला घायल हो गयी। सूचना पर पहुची पुलिस ने एक पक्ष से बच्चालाल व उसके पुत्र अनुज कुमार व दुसरे पक्ष से विमलेश कुमार व उसके भाई रजनीश कुमार व एवं पुत्र आशुतोष कुमार को गिरफ्तार कर शांति भंग में उपजिलाधिकारी न्याया० के समक्ष भेज दिया।

उन्नतशील कृषि हेतु किसानों को किया गया सम्मानित

अमन लेखनी समाचार

सुमेरपुर, उन्नाव। तहसील बीघापुर के गनेशीखेडा निवासी बृजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ राजू को उन्नतशील कृषि व किसानों को निःशुल्क मार्गदर्शन देने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया। गनेशीखेडा निवासी बृजेन्द्र सिंह उर्फ राजू को उन्नाव व आस पास के जिलों में प्रगतिशील किसान के रूप में जाना जाता है।इनके पिता उदयवीर सिंह पूर्व मा०वि० में प्रधानाध्यापक रहे है। इन्होंने अपने इकलौते पुत्र की शिक्षा में कोई कसर न छोड़ी । पिता के मार्गदर्शन में चलने के कारण बृजेन्द्र सिंह ने तीन अलग अलग विषयो से परास्नातक किया।शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात बृजेन्द्र ने कृषि क्षेत्र में विशेष प्राकृतिक खेती करने का अभियान चलाया।जिसके कारण इन्हें उद्यानपति व प्रकृति प्रेमी जाना जाने लगा। चार नवम्बर दिन शनिवार को इंटीग्रिल विश्वविद्यालय लखनऊ के केन्द्रीय प्रेक्षागृह हाल में उन्नाव को प्राकृतिक खेती को बढावा देने व किसानो को निःशुल्क मार्गदर्शन देने के परिप्रेक्ष्य में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक डा.आर सी. अग्रवाल व निदेशक इंटीग्रिल विश्वविद्यालय डा. हेरिस सिद्दीकी द्वारा अवार्ड आफ एक्सीलेन्स प्रमाण पत्र, स्मृति चिन्ह,व अंग वस्त्र से सम्मानित किया गया।इससे पूर्व राज्य स्तर पर केला व आम की खेती में प्रथम स्थान जबकि सब्जी के खेती में दूसरा स्थान प्राप्त करके मुख्यमंत्री व राज्यपाल से सम्मानित हुए। बृजेन्द्र सिंह ने गणेशीखेड़ा स्थित अपने आवास का नाम बदलकर किसान भवन कर दिया और प्रत्येक बुधवार को किसानों के साथ बैठक कर उन्नतशील कृषि के बारे में चर्चा कर निःशुल्क पाठशाला चलाते है।इसके अतिरिक्त बृजेन्द्र सिंह उन्नतशील कृषि व निशुल्क पाठशाला हेतु राज्य स्तरीय व जिले स्तरीय विभिन्न विभागों के अधिकारियों से भी सम्मानित हो चुके है।

बृजेन्द्र सिंह का कहना है उन्नतिशील कृषि करके किसान अपनी आय के साथ साथ उपज में भी बढ़ोतरी कर सकते है।

डांडिया नाईट में उमड़ पड़ा युगलों का सैलाब

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव। जिले के बहुचर्चित डांडिया नाईट सीजन 3 का आयोजन मगरवारा स्थित ए जी फार्म्स में हुआ। के टू जेनॉक्स डांडिया नाईट का शुभारंभ सदर विधायक पंकज गुप्ता, सहकारी बैंक अध्यक्ष अरुण सिंह, पालिकाध्यक्ष श्वेता मिश्रा व प्रतिनिधि प्रवीण मिश्रा भानू सहित आयोजकों अमित मिश्रा, विनय गुप्ता, डॉ मनीष सेंगर, रेनू मिश्रा, लक्ष्य निगम व संरक्षकों ओम प्रकाश मिश्रा, अनुज निगम एडवोकेट, राहुल अग्निहोत्री आदि में माँ भगवती की आरती से शुभारम्भ कराया। सेलिब्रिटी गायक अतुल पंडित और डॉ मनीष सेंगर ने संगीतकारों के साथ अम्बे तू है जगदम्बे काली आरती गाकर खचाखच भरे परिसर को भक्तिरस में लीन किया।जी जी ई एस ग्रुप और उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल की प्रस्तुति और मां गायत्री इंटरप्राइजेज व मनकेशव ऑटोमोबाइल प्रयोजक रहे। डांडिया खेलने आए सजे धजे युगलों और परिवारों ने अतुल पंडित, शिवांगी पंडित और बैंड की भक्ति, गुजराती, हिंदी, बॉलीवुड और वेस्टर्न धुनों पर देर रात तक झूम झूम कर डांडिया खेल कर आयोजन को पूरे उत्तर में कीर्तिमान के रूप में स्थापित किया।प्रबंधन टर्बो इवेंट मैनेजमेंट ने किया। अतिथियों, सहयोगियों और कलाकारों को आयोजकों सहित विजय गुप्ता, राघवेंद्र सिंह राघव, जसमीत अरोरा रिक्की सतगुरु, मनीषा अरोरा ब्यूटिशियन, संजय शुक्ला शिवा इन, आशीष दीक्षित, मृत्युंजय जायसवाल, मनीष तिवारी, मनीष गुप्ता, आशुतोष बाजपेई, राहुल कश्यप, नितिन रामजी तिवारी, निखिल यादव, शुभ बजाज, आशीष तिवारी, अमित शुक्ला, शशिकांत तिवारी आदि ने किया।कई नामचीन बॉलीवुड हस्तियों के साथ स्थापित मॉडल्स ने डांडिया खेल कर आकर्षण बढ़ाया। बड़ा शानदार संचालन डॉ मनीष सेंगर और कॉमेडियन लक्ष्य निगम ने किया। अमित मिश्रा और विनय गुप्ता ने सबके प्रति आभार जताया।

शोपीस बनी पानी की टंकी दूषित पानी पीने को मजबूर ग्रामीण

अमन लेखनी समाचार

बीघापुर, उन्नाव। मुख्यालय पाटन के अंतर्गत लोन नदी के किनारे बसे दर्जनों गांव के हजारों लोगों को शुद्ध और स्वच्छ पेयजल मुहैया कराने के लिए सरकार शुद्ध पानी पीने को नहीं दे पा रही है लोग फ्लोराइड युक्त पानी पीने को मजबूर हैं कुछ गावों में शुद्ध पानी पीने के लिए सरकार ने लाखों रुपए खर्च कर टंकी का निर्माण ग्राम अढौली अफसरी आदि गांवो में शुद्ध पानी पीने के लिए पाइप के द्धारा मुहल्लो में टूटी लगाई लेकिन कई वर्ष बीत गए हैं आज तक शुद्ध पानी लोगों को नहीं मिल पाया है केवल शो पीस बन कर रह गई है लेकिन विभागीय उदासीनता की वजह से पानी की टंकिया शोपीस बन कर रह गई है लाखों की लागत से बनी पानी टंकी और गांव में बिछाए गए पाइप के जाल और टोटी शो पीस बने हैं. लोगों को इनसे एक बूंद पानी नहीं मिल पा रहा है. वर्षों से लोग पानी के इंतजार में टोटी को देख रहे है की कब इस से पानी की धारा बहेगी और लोगों को पीने के लिए शुद्ध और स्वच्छ पानी मिलेगा जिला प्रशासन पानी को लेकर कितना तैयार है . उसकी हकीत जानना हो तो ग्रामीण क्षेत्रों का एक बार मुआयना कर लीजिए. जहां पर बड़ी-बड़ी पानी की टंकियां तो बनी हैं लेकिन वह सफेद हाथी साबित हो रही है।

आयोजित राम कथा को सुनने पहुंची राज्यमंत्री

अमन लेखनी समाचार

असोहा, उन्नाव।राम चरित मानस हमे यह संदेश देती है की मानव जीवन कैसा होना चाहिए उक्त उद्गार रामकथा में पहुंची राज्य मंत्री ने कही ।क्षेत्र के अजयपुर स्थित पावन धाम कुटी बीर बाबा में चल रहे नव दिवसीय हनुमत रुद्र महायज्ञ एवम मानस वेदांत संत सम्मेलन में राज्य मंत्री महिला कल्याण बाल विकास पुष्टाहार प्रतिभा शुक्ल ने पहुंच कर व्यास पीठ का आशीर्वाद लेते हुए रामकथा सुनी ,उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा की राम हमारे जीवन का आदर्श है , राम का चरित्र हम सबको यह सिखाता है की हमको कैसे जीना चाहिए , कितनी भी कठिनाइयां आए घबराना नहीं चाहिए और अपने कर्म से नही डिगना चाहिए ,इसलिए लोगो को रामचरित मानस से सीख लेनी चाहिए। वही रामकथा के छठवे दिन अयोध्या से आए व्यास ओमप्रकाश जी ने भक्तो को संबोधित करते हुए कहा की मां और जन्म भूमि स्वर्ग से भी अधिक मूल्यवान है , उन्होंने कहा की ।दरिद्रता से बढ़ कर कोई दुख नहीं है ,संतो के मिलने के समान कोई सुख नहीं है , मन ,वचन , कर्मो और शरीर से परोपकार करना चाहिए तभी ईश्वर की प्राप्ति संभव है । कथा में पहुंचे मोहन विधायक ब्रजेश रावत ने लोगो को संबोधित करते हुए कहा की धार्मिक कार्यक्रम हम सबको अपने धर्म से जोड़ते हुए कृत्यव्यो का बोध भी कराते है , ऐसे कार्यक्रमों से लोगो में धर्म वा परोपकार के प्रति भावना बढ़ती है ,और लोगो को ऐसे कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर भाग लेना चाहिए । आयोजक संजय शुक्ल ने राज्य मंत्री प्रतिभा शुक्ल , वा विधायक ब्रजेश रावत को अंग वस्त्र वा प्रतीक चिन्ह दे कर स्वागत किया कार्यक्रम के दौरान प्रवीण शुक्ल , जितेंद्र दीक्षित , सिवनारायण अवस्थी , दिनेश पांडे , जनार्दन प्रसाद शुक्ल , मोनू शुक्ल , फिरोज अहमद , सुनील , तेजस शुक्ल , कल्लू त्रिवेदी , बाउवा सोनी सहित सैकड़ों की संख्या में महिला पुरुष उपस्थित रहे।

कथा ने सुनाया गया कृष्ण सुदामा की मित्रता का प्रसंग

अमन लेखनी समाचार

सफीपुर, उन्नाव।विकास खंड क्षेत्र के गोपाल पुर गांव में श्रीमद्भागवत कथा के विश्राम दिवस पर कृष्ण सुदामा चरित्र का प्रसंग सुनाते हुए भगवताचार्य रवि शंकर मिश्रा ने संगीतमय मय श्रीमद्भागवत कथा में श्रोता गणों के सम्मुख व्यक्त किए उन्होंने बताया कि मनुष्य रूप में भगवान ने अनेकों लीलाओं के मध्य से सत मार्ग पर चलने का रास्ता दिखाया इसका उदाहरण कृष्ण सुदामा की मित्रता के प्रसंग में मिला है आचार्य ने कहा कि आज मनुष्य मित्रता में नहीं बल्कि एक दूसरे की चुगली में व्याप्त करता है और वह अपने जीवन में सत्कर्म करने भूल जाता है इस कलियुग में सत्यता पर निर्धारित होकर कोई कार्य करो तो उसमें सफलता अवश्य मिलेगी लेकिन आज लोग भगवान की पूजा अर्चना करने के बजाय धन की प्राप्ति के लिए भाग रहे हैं ।

उन्होंने बताया कि आज सुदामा बहुत गरीब है उसके पास खाने के लाले पडे हुए हैं तो वह अपनी पत्नी के कहने पर द्वारिकापुरी जाते हैं जहां भगवान ने मित्र सुदामा का स्वागत करते हुए उनके दुःख हर लिए मनुष्य को चाहिए कि वह सत्कर्म के साथ राम कृष्ण का जप करते रहे तो कभी दुःख उनके पास नहीं आयेगा । इस दौरान पूर्व जिला अध्यक्ष भाजपा राज किशोर रावत, भाजपा नेता ज्ञानेंद्र सिंह ,प्रधान जितेंद्र राजपूत,गजेंद्र सिंह, हारेंद्र कुमार,राघवेंद्र सिंह,श्री कांत तिवारी राज प्रकाश शास्त्री राम नाथ तिवारी,राघवेंद्र तिवारी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्त उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय कृष्ण लीला व मेला का हुआ समापन

अमन लेखनी समाचार

सुमेरपुर, उन्नाव। तहसील बीघापुर के अंतगर्त ग्राम मझिगवां सेवक में तीन दिवसीय कृष्ण लीला व मेला महोत्सव का समापन बीती रात कंश वध के साथ हुआ। मेले में निकलने वाली राधा कृष्ण व शंकर आदि की सवारियों को देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी।ये सवारियां काठ के घोड़े व हाथियों पर सवार थी।मझिगवां सेवक में काफी समय से यह महोत्सव आयोजित होता है ।यहां होने वाली कृष्ण लीला में सभी कलाकार गाँव व आस-पास के गाँवो के होते है।यहां पर प्रतिदिन कृष्ण लीला के पहले भगवान की सवारियां निकलती है।इस बार भी तीन दिवसीय समारोह में प्रथम दिन कृष्ण जन्म से लीला की शुरूवात हुई। कार्यक्रम में विशाल मेले का भी आयोजन ग्राम वासियो द्वारा किया गया ।कल शाम अंतिम दिन राजा कंश का वध व उग्रसेन को राजगद्दी के साथ लीला का समापन हुआ ।उसके बाद रात में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ जिसका पूरी रात लोगो ने आनंद लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में अपनी जनतांत्रिक पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश चन्द्र मिश्रा ने मूर्तियों का माल्यर्पण कर कहा आयोजन में जहा भी मेरी आवश्यकता होगी हमेशा साथ रहूंगा। कार्यक्रम का संचालन कृष्ण मोहन द्विवेदी ने किया।सभी कार्यक्रम ध्यानशंकर शुक्ला, संदीप शुक्ला,अनुज त्रिवेदी, रामबाबू शुक्ला, शुभम शुक्ला , भगौती प्रसाद मिश्रा, बाबू त्रिवेदी,नीरज शुक्ला, विजय शंकर,अमित त्रिवेदी, पंकज शुक्ला आदि के नेतृत्व में हुआ।

नहीं हो सका ग्राम न्यायालय का संचालन

अमन लेखनी समाचार

बीघापुर, उन्नाव।जनता को सस्ता व त्वरित न्याय दिलाने के लिए स्वीकृत ग्राम न्यायालय का संचालन अभी तक शुरू नहीं किए जानें से जनता व अधिवक्ताओं में रोष व्याप्त हैं तहसील बीघापुर मुख्यालय पाटन के अन्तर्गत क्षेत्र की जनता को सस्ता व त्वरित न्याय दिलाने के लिए स्वीकृत ग्राम न्यायालय का संचालन अभी तक शुरू नहीं किए जाने पर चिंता जताई है ।कहा है कि सरकार ने वर्ष 2023 में तहसील मुख्यालय 04किलो मीटर दूर सुमेरपुर तिराहे पर पुरानी बिल्डिंग जिसमें पूर्व में तहसील प्रारम्भ हुई थी उस बिल्डिंग में बड़े बड़े अच्छरों में कई माह ग्राम न्यायालय लिख गया था लेकिन प्रशासन के उदासीन रवैया के चलते यह अभी तक मूर्त रूप नहीं ले सकी बीघापुर अधिवक्ताओं ने कई बार साशन को प्रपत्र देकर ग्राम न्यायालय का संचालन कराए जाने की मांग की ।बताया गया कि इस संबंध में कई बार पत्रक दिए जा चुके है, लेकिन प्रशासन की उदासीनता के कारण ग्राम न्यायालय का संचालन नहीं शुरू हो पा रहा है। ग्रामीणों ने व क्षेत्रीय जनता अधिवक्ताओ ने ग्राम न्यायालय संचालन कराए जाने की मांग की है।

फसल सींचने के विवाद को लेकर दबंगो ने पति-पत्नी को पीटा

अमन लेखनी समाचार

बांगरमऊ, उन्नाव।कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी किसान ने बोरिंग से खेत में पानी लगाने का प्रयास किया ।इस पर बौखलाए दबंगों ने उसकी पिटाई कर दी।

उसकी आंख के नीचे काफी चोट आई।बचाव को आई उसकी पत्नी को भी पीटा पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर रही कोतवाली क्षेत्र के गुलाब पुरवा गांव निवासी होरीलाल पुत्र द्वारिका ने गांव के ही दबंग अनिल पुत्र फूलचंद अनुज पुत्र अनिल पर घर में घुसकर मारपीट करने का आरोप लगाया और बताया कि खेत के पास में बने बोर से फसल में इंजन रखकर सिंचाई किया जिस पर उक्त लोगो ने मारपीट की पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

दो किशोरियों को बरामद कर पुलिस ने आरोपियों को भेजा जेल

अमन लेखनी समाचार

पुरवा, उन्नाव। दो अलग अलग गांव में दो युवको ने नाबालिक किशोरी को बहला फुसला कर भगा ले गए थे परिजनो की तहरीर पर पुलिस ने दोनो किशोरियों को बरामद कर दोनो युवकों को जेल भेज दिया कोतवाली क्षेत्र के एक गांव निवासी युवक ने बीते 11 अक्टूबर को कोतवाली में तहरीर देकर बताया था की उसकी नाबालिग बेटी गांव से पुरवा कस्बे में कॉपी, किताब और पेन लेने गई थी लेकिन वो वापिस नहीं आई थी. काफी खोजबीन करने के बाद भी कुछ पता नहीं चला था. घर के एक मोबाइल नंबर पर एक अज्ञात नंबर से अधिक संख्या में एसएमएस पड़े हुए थे. पिता ने उक्त नंबर के आधार पर उसकी बेटी को युवक द्वारा भगा ले जाने का शक जाहिर किया था. पुलिस ने नंबर के आधार पर अज्ञात के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू की थी. पुलिस ने मोबाइल नंबर की डिटेल निलवाई तो नंबर सोनू उर्फ शनि पुत्र सतीश निवासी मुंडपुरीकला थाना गोविंदगढ़ जिला अलवर, राजस्थान के नाम से निकला. पुलिस ने युवक सोनू के पास से किशोरी को बरामद करने के बाद उसके बयान दर्ज कर सोनू उर्फ शनि को कोतवाली क्षेत्र के लंगरपुर चौराहे के पास से गिरफ्तार कर लिया दूसरी घटना बीती 22 अक्टूबर को किशोरी को भगा ले जाने के आरोपी युवक क्षेत्र के ग्राम पंगाखेड़ा निवासी सज्जन पुत्र बसंत को गिरफ्तार कर लिया और किशोरी के बयान के बाद पास्को एक्ट दुराचार की धारा में जेल भेज दिया गया।

पंचायत भवन में किसान पाठशाला का किया गया आयोजन

अमन लेखनी समाचार

उन्नाव।विकास खण्ड सिकंदरपुर सिरोसी के दोस्तीनगर पंचायत भवन में अपर कृषि निदेशक प्रसार आर के सिंह की अध्यक्षता में किसान पाठशाला का आयोजन किया गया। आयोजित पाठशाला में किसानों की बात किसानों के साथ का अनुसरण करते हुए रामनारायण गुप्ता, मुन्नी लाल, विजेंद्र प्रताप सिंह ने जैविक खेती तथा बागवानी फसलों की खेती के अनुभव साझा किए। आशीष, प्राविधिक सहायक प्रसार ने प्रसार से संबंधित योजनाओं की जानकारी दी।अपर कृषि निदेशक प्रसार, कृषि भवन लखनऊ द्वारा कृषकों को एफपीओ बनाने तथा गेहूं की किस्में तथा बुवाई के बारे में कृषकों को बताया।अपर कृषि निदेशक द्वारा गेहूं की बुवाई 25 नवंबर तक पूर्ण करने का आह्वान किया गया। उन्होंने कृषकों से बुवाई हेतु सुपर सीडर, सीड ड्रिल आदि यंत्रों के प्रयोग करने की सलाह दी गई तथा खाद की संतुलित मात्रा प्रयोग करने को कहा गया।उन्होंने बताया के फॉस्फोरस की 30 किलो प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। अपर कृषि निदेशक द्वारा कृषकों को सरसों की मिनीकिट पीओएस मशीन के माध्यम से वितरित किया गया तथा सरसों में विरलीकरण के महत्व को समझाया तथा वेस्ट डिकंपोजर के प्रयोग की विधि समझाते हुए डिकंपोजर के कैप्सूल वितरित किए गए। उप कृषि निदेशक उन्नाव द्वारा कृषकों को सरसों की खेती अन्न फसलों की खेती तथा विभाग की योजनाओं के बारे में बताया गया। उप सम्भागीय कृषि प्रसार अधिकारी,सदर द्वारा पराली प्रबन्धन के बारे में बताया गया। उद्यान निरीक्षक नागेन्द्र सिंह द्वारा बागवानी, सब्जी की फसलों तथा उद्यान विभाग की अन्य योजना एवं उसमें मिलने वाले अनुदान की जानकारी दी गई। कृषि विभाग के प्रभारी राजकीय कृषि बीज भण्डार,सिकंदरपुर सिरोसी तथा अन्य स्टाफ भी उपस्थित रहे।

विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने में जुटे बीएलओ पदाभिहित अधिकारी

अमन लेखनी समाचार

कैसरगंज, बहराइच। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिनांक 4, 5 नवम्बर को प्रथम विशेष संक्षिप्त प्रस्तावित कार्यक्रम 1 जनवरी 2024 को 18 वर्ष आयु पूरी कर रहे युवाओं से मतदाता बनने की अपील की जा रही है

जिसके क्रम में ग्राम पंचायत वैराकाजी के प्राथमिक विद्यालय वैराकाजी के बूथ संख्या 192, 193,194 के बी एल ओ खलील अहमद, रियाजउल हक, सुमन सोनी पदाभिहित अधिकारी शैलेंद्र कुमार एवं सुपरवाइजर (लेखपाल) शाहनवाज आलम बूथ पर बैठकर 1 जनवरी 2024 को 18 वर्ष पूर्ण करने वाले युवक, यूवतियों से फार्म 6 भरकर मतदाता बनने मतदाता सूची में किसी भी संशोधन के लिए फार्म 8 भरकर एवं मृतक मतदाता का नाम हटवाने के लिए लोगों से फॉर्म 7 भरने की अपील की जिसमें बूथ पर भाजपा मंडल अध्यक्ष विनोद कुमार वर्मा,लाल जी जायसवाल ,अनूप मौर्य, ग्राम प्रधान अब्दुल वाहिद सहित तमाम गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

महाराष्ट्र में मराठा आरक्षण की मांग फिर से सुलगने लगी है। मनोज जरांगे पाटील मराठा आरक्षण आंदोलन के नए चेहरे हैं। वे लगातार आंदोलन कर रहे हैं और सरकार पर दबाव बना रहे हैं। महाराष्ट्र की मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की गठबंधन सरकार फौरी तौर पर आरक्षण आंदोलन को स्थगित करवाने में जरूर सफल हुई है, लेकिन मराठा को कुनबी प्रमाण पत्र देने का रास्ता बहुत कठिन है और समय लगने वाला भी है। वहां आंदोलन को हवा देने के पीछे राजनीति भी है। आगे लोकसभा चुनाव है और अगले साल के अंत में महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव भी है। तोड़फोड़ की चली सियासत में विपक्षी दल मौके की तलाश में है, जबकि भाजपा नीत गठबंधन की साख दांव पर है। आजकल के इस अंक में महाराष्ट्र की राजनीति पर एक विश्लेषण...

आरक्षण कोई मौलिक अधिकार नहीं

विश्लेषण

सुशील राजेश

वरिष्ठ पत्रकार

बाबा साहेब डा. भीमराव आंबेडकर तो आरक्षण की अवधारणा के ही पक्षधर नहीं थे। बाद में आंबेडकर ने आरक्षण का समर्थन जातिवाद और सामाजिक विषमताओं के खिलाफ एक उपकरण के तौर पर किया था, उन्होंने पिछड़े, वंचित, अछूत अनुसूचित वर्गों के आर्थिक-सामाजिक-शैक्षिक उत्थान के लिए आरक्षण की पैरोकारी की थी, लेकिन आज आरक्षण के मायने बदल चुके हैं। यह एक राजनीतिक हथियार बन चुका है। समय के साथ इसका दायरा बढ़ता गया है। पहले अनुसूचित वर्ग के लिए था, अब इसमें ओबीसी व सवर्ण भी जुड़ चुके हैं। सरकारी नौकरियां घट रही हैं, राजनीतिक के चलते आरक्षण का दायरा बढ़ रहा है। मराठा, जाट, गुर्जर, पटेल, कापू जैसे समृद्ध समुदाय भी आरक्षण की मांग कर रहे हैं। लेकिन अब आरक्षण की व्यापक समीक्षा की जानी चाहिए।

संविधान सभा की बैठकों में आरक्षण के आयामों पर खूब बहस की गई थी। आरक्षण की समय-सीमा, अनुसूचित जातियों, अल्पसंख्यकों के कोटे पर बहुत मतभेद थे। जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल और डॉ. आंबेडकर आदि धार्मिक अल्पसंख्यकों को आरक्षण देने के खिलाफ थे। बाबा साहेब डा. भीमराव आंबेडकर तो आरक्षण की अवधारणा के ही पक्षधर नहीं थे। उनके अलावा, के.एम. मुंशी, महावीर त्यागी, पंडित भार्गव, नजीरुद्दीन अहमद, कृष्णामाचारी, मुनिस्वामी पिल्लै और मनमोहन दास आदि सदस्यों ने संविधान सभा में जो विचार रखे थे, वे आज इतिहास हैं। संभवतः उतने प्रासंगिक भी नहीं हैं, क्योंकि आरक्षण हमारे समय का यथार्थ है, लेकिन उसे मौलिक अधिकार की मान्यता कभी नहीं दी गई। आंबेडकर ने आरक्षण का समर्थन जातिवाद और सामाजिक विषमताओं के खिलाफ एक उपकरण के तौर पर किया, उन्होंने पिछड़े, वंचित, अछूत अनुसूचित वर्गों के आर्थिक-सामाजिक उत्थान के लिए आरक्षण की पैरोकारी की थी, लेकिन आज आरक्षण के मायने बदल चुके हैं। एक राजनीतिक हथियार है, जिन्हें आरक्षण हासिल है, वे पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनाए रखना चाहते हैं।

1892 में ही आरक्षण की कल्पना

बेशक आरक्षण की विशेष व्यवस्था आज़ादी के बाद की गई, लेकिन जाति आधारित आरक्षण के विचार की कल्पना 1892 में विलियम हंटर और ज्योतिराव फुले ने की थी। उसके बाद कोल्हापुर रियासत के महाराजा छत्रपति शाहू महराज ने गैर-ब्राह्मण और पिछड़े वर्गों के पक्ष में आरक्षण की शुरुआत की, जो 1902 में लागू किया गया। दरअसल आज जो आरक्षण प्रणाली हमारे सामने है, उसकी बुनियादी शुरुआत 1933 में की गई थी। तब ब्रिटिश प्रधानमंत्री रामसे मैकडोनाल्ड थे, जिन्होंने 'सांप्रदायिक पुरस्कार' प्रस्तुत किया था। उसके तहत मुसलमानों, सिखों, भारतीय इसाइयों, एंग्लो इंडियन, यूरोपीय, दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्रों का प्रावधान किया गया था। लंबे विमर्श के बाद महात्मा गांधी और डॉ. आंबेडकर ने 'पूना पैक्ट' पर हस्ताक्षर किए थे, जहां यह निर्णय लिया गया कि इसमें कुछ आरक्षणों के साथ एक ही हिन्दू मतदाता होगा। यह आर्थिक-सामाजिक, जातीय के बजाय राजनीतिक और चुनावी आरक्षण ज्यादा था। ब्रिटिश की सोच उपनिवेशवादी थी, जबकि विचार उभरने लगा था कि जो वर्ग आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक तौर पर विपन्न हैं, उन्हें आगे लाने के लिए आरक्षण जैसी कोई व्यवस्था की जानी चाहिए।

10 वर्ष के लिए ही आरक्षण

जब 1947 में भारत एक स्वतंत्र और संप्रभु राष्ट्र बना, तो आरक्षण का मुद्दा भी सामने आया। सबसे पहले अनुसूचित जाति और जनजाति को ही आरक्षण दिया गया। बाद में मंडल आयोग की सिफारिशों को स्वीकार किया गया, तो 1991 में

'अन्य पिछड़ी जातियों' (ओबीसी) को भी आरक्षण के दायरे में रखा गया। आरक्षण की अवधि मात्र 10 सालों के लिए तय की गई थी, लेकिन यह भी प्रावधान किया गया कि संसद के जरिए अवधि को बढ़ाया भी जा सकता है। नतीजा सामने है कि आज़ादी के 76 साल बाद भी आरक्षण विद्रूप यथार्थ है।

बढ़ता ही गया दायरा

अनुसूचित जाति को 15 फीसदी, जनजाति को 7.5 फीसदी और ओबीसी को 27 फीसदी आरक्षण दिया जा रहा है। जनवरी, 2019 में संविधान में 103वां संशोधन कर आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग को भी 10 फीसदी आरक्षण दे दिया गया। इस परिधि में सवर्ण जातियां भी शामिल की गईं। सर्वोच्च अदालत की न्यायिक पीठ ने भी ऐसे आरक्षण को 'संवैधानिक' करार दिया। संविधान के अनुच्छेद 15 (4) और 16(4) में राज्य और केंद्र सरकारों को अधिकार दिए गए हैं कि वे अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए सरकारी सेवाओं में सीटें आरक्षित कर सकती हैं। 1995 में एक संविधान संशोधन संसद में पारित कर पदोन्नति में भी आरक्षण की व्यवस्था करने के मद्देनजर अनुच्छेद 16 में नया खंड 4ए जोड़ा गया। अनुच्छेद 330 और 342 के जरिए क्रमशः संसद और राज्यों की विधानसभा में अनुसूचित जाति और जनजाति के लिए सीटों का आरक्षण तय किया गया। देश की पंचायतों और नगरपालिकाओं में भी आरक्षण की व्यवस्था लागू है। मकसद साफ़ है कि पिछड़ी जातियों के साथ ऐतिहासिक अन्याय को सुधारा जाए। उन्हें समान अवसर मिलें और उनका लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व भी पर्याप्त हो, लेकिन जिस तरह आरक्षण मांगा जा रहा है, वह आपराधिक और गुंडागर्दी है।

अतीत में हरियाणा, राजस्थान, गुजरात सरीखे अपेक्षाकृत विकसित राज्यों में आरक्षण के तांडव देखे जा चुके हैं। हरियाणा में जाट आरक्षण आंदोलन में व्यापक तोड़फोड़ व हिंसा हुई। अंततः 2016 से हरियाणा में ओबीसी के तहत 10 फीसदी कोटा दिया जा रहा है। राजस्थान में गुर्जरों ने आरक्षण के नाम पर खूब उत्पात मचाया। गुजरात में पटेलों को भी आरक्षण चाहिए था, जबकि इसे एक व्यापारिक और समृद्ध समुदाय माना जाता है। वहां भी हड़तालें और विरोध-प्रदर्शन किए गए। क्या आरक्षण ऐसे मांगा जाता है? क्या यह किसी का भी संवैधानिक अधिकार है? यही सवाल अब महाराष्ट्र सरकार के सामने है। वहां तो महातांडव जारी है। मंत्रियों के वाहन जलाए गए हैं। बसों को तोड़-फोड़ कर खंडहर बना दिया गया है। संभवतः उनकी मांग जायज हो! सर्वोच्च अदालत कई फैसलों में स्पष्ट कर चुकी है कि आरक्षण की अधिकतम सीमा 50 फीसदी होगी। सवर्णों का 10 फीसदी आरक्षण एक विशेष व्यवस्था है। अदालत आरक्षण मंजूर नहीं करेगी और आंदोलनकारी आरक्षण के नाम पर सरकारों को विवश करेंगे।

आरक्षण सिस्टम में बदलाव की जरूरत

मेरा मानना है कि अब आरक्षण की व्यापक समीक्षा की जानी चाहिए। आरक्षण से हमने क्या पाया, जिनको मिल रहा है, उनका सामाजिक शैक्षिक व आर्थिक उत्थान कितना हुआ, उन समुदाय में अब दरअसल में किनको जरूरत है? किन्हें अब इसकी जरूरत नहीं है? जब तक जातिगत आरक्षण रहेगा, जातिवाद से मुक्ति नहीं मिलेगी। ऐसे कई परिवार हैं, जिनमें आईएएस अधिकारी पीढ़ी-दर-पीढ़ी हैं, लेकिन आरक्षण अब भी लिया जा रहा है। मुझे लगता है कि ऐसे आरक्षण खत्म किए जाने चाहिए। जातीय जनगणना की राजनीति के इस दौर में इसका बहुत और आक्रामक विरोध हो सकता है। जाति समूहों के बीच ही आरक्षण आर्थिक व शैक्षिक पिछड़ेपन के आधार पर तय किया जाना चाहिए। दरअसल ज़मीनी स्तर पर शिक्षा व्यवस्था में भी क्रांतिकारी बदलाव समय की दरकार हैं। हमें अगर 2047 में विकसित देश बनना है तो आरक्षण जैसी व्यवस्था को तार्किक बनाना होगा। देश के विकास-पथ में भी विकृतियां हैं, लेकिन आरक्षण ही समाधान नहीं है। हमें आरक्षण की सियासत से बाहर आना चाहिए।

क्यों सुलग रही मराठा आरक्षण की मांग?

सियासत

रवि शंकर

वरिष्ठ पत्रकार

महाराष्ट्र में इन दिनों मराठा आरक्षण को लेकर आग लगी हुई है। किसी की समझ में नहीं आ रहा कि इस आंदोलन के अचानक उग्र होने के पीछे कौन है और सरकार का इस आंदोलन को लेकर रवैया क्या है? खैर, महाराष्ट्र अनेक समाज सुधारकों, बुद्धिजीवियों, योद्धाओं के लिए जाना जाता है, लेकिन यहां अब आरक्षण को लेकर आग लगी है।

महाराष्ट्र में मराठा की माली दशा कैसी है ये भी किसी से छिपी नहीं है। सत्ता में मराठाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग भी जाने-पहचाने हैं, इन सबके रहते आरक्षण का मुद्दा अब तक जिंदा क्यों है, इसकी समीक्षा की जानी चाहिए। सवाल ये है कि अपने आपको मराठा कहने वाले महाराष्ट्र के तमाम नेता इस मुद्दे पर अपना रुख साफ क्यों नहीं करते, क्यों अपने समाज को बिखरते देख रहे हैं? महाराष्ट्र की मौजूदा सरकार में भी मराठा हैं, उसके पहले की सरकार में भी थे और जब सूबे में अकेले कांग्रेस की सरकार होती थी तब भी मराठा सत्ता में सर्वोपरि थे, तब मराठों को आरक्षण देने की मांग इतनी बलवती क्यों नहीं थी? अब क्यों है?

मराठा आरक्षण आंदोलन की उग्रता के पीछे जातीय गणना का ताजातरीन मुद्दा भी हो सकता है। बिहार सरकार ने ये मुद्दा पैदा किया है और कांग्रेस इस मुद्दे को ले उड़ी है। कांग्रेस ने घोषणा कर दी है कि देश में जिन राज्यों में कांग्रेस की सरकारें हैं या आगे बनेंगी, इन राज्यों में जाति जनगणना कराई जाएगी। जाति जनगणना के मुद्दे पर भाजपा भ्रमित है। भाजपा इस मुद्दे को समाज के लिए विभाजनकारी मानती है, लेकिन आरक्षण के मुद्दे पर फिर गुलाटी मार जाती है। महाराष्ट्र सरकार के पास फिलहाल इंतजार करो और देखो का रुख अपनाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। निजाम युग में, मराठवाड़ा क्षेत्र में मराठों को कुनबी माना जाता था और वे ओबीसी श्रेणी में थे। हालांकि, जब यह क्षेत्र महाराष्ट्र में शामिल हो गया तो उन्होंने यह दर्जा खो दिया। अब, मनोज जारांगे जैसे कार्यकर्ता मांग कर रहे हैं कि मराठों को फिर से कुनबी के रूप में वर्गीकृत किया जाए, जिससे वे ओबीसी आरक्षण के लिए पात्र बन जाएं। अगस्त में, जारांगे ने अपने गांव अंतरवाली सारथी में विरोध प्रदर्शन और अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू की। 1 सितंबर को विरोध हिंसक हो गया और सरकार को हस्तक्षेप करना पड़ा। मुख्यमंत्री शिंदे ने घोषणा की कि कैबिनेट ने मराठवाड़ा के मराठों को कुनबी जाति प्रमाण पत्र देने का संकल्प लिया है, लेकिन वही ओबीसी, जो राज्य की आबादी का 52 प्रतिशत हिस्सा हैं और एक प्रमुख वोट बैंक हैं, मराठों के लिए इस श्रेणी के तहत आरक्षण के खिलाफ हैं। दूसरी ओर, मराठा के हितों की उपेक्षा के रूप में देखे जाने वाले किसी भी कदम की भारी राजनीतिक कीमत भी चुकानी पड़ सकती है।

सवाल अहम यह है कि आखिर ओबीसी समुदाय मराठा समुदाय को कुनबी सर्टिफिकेट देने के खिलाफ क्यों है? मराठा समुदाय को अलग से आरक्षण देने के फैसले को सुप्रीम कोर्ट ने रद कर दिया। इसके बाद मनोज जारांगे समेत कई लोग दावा कर रहे हैं कि मराठा समाज मूल रूप से कुनबी जाति से है। यानी मराठा समुदाय को यदि कुनबी प्रमाणपत्र दिया जाता है तो आरक्षण मिलने पर उसे ओबीसी कोटे से लाभ मिल जाएगा। वहीं ओबीसी समुदाय के संगठनों का मानना है कि अगर इसमें मराठा समुदाय को भी शामिल किया गया तो आरक्षण का फायदा नए प्रतिभागियों को मिलेगा। आगे राजनीति की राह पेचीदा है।

भाजपा को कड़ी मेहनत करनी होगी

महाराष्ट्र

वेंकटेश केसरी

वरिष्ठ पत्रकार व विश्लेषक

महाराष्ट्र में राजनीति तेजी से बदल रही है। 2019 से शुरू हुआ ये सिलसिला कब और कहां रुकेगा इसका अंदाजा कोई लगा नहीं सकता। सत्ता की राजनीति ने दोस्त को दुश्मन और दुश्मन को यार बनने का चमत्कार महाराष्ट्र ने इस दौरान देखा। दल बदल, दल बदलू, क्षेत्रीय दलों में टूट देखते हुए अब राजनीति मराठा आरक्षण पर आ गई है। आने वाले पांच महीनों में लोकसभा और अगले साल अक्टूबर - नवम्बर में महाराष्ट्र विधानसभा के चुनाव होने हैं। भाजपा में अपने दम पर चुनाव लड़ने की हिम्मत जुटाने क्षमता बची नहीं है। कथित ऑपरेशन कमल के तहत शिवसेना और राष्ट्रवादी कांग्रेस को तोड़ा गया, बाल ठाकरे की शिवसेना का नाम और चुनाव की निशानी बागी नेता और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे की शिवसेना को मिली। शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस के बागी नेताओं ने पवार के भतीजे अजित पवार के नेतृत्व में पार्टी पर काबिज करने की कोशिश की और सत्ता में शामिल हुए। महाराष्ट्र के सत्ता संघर्ष अब सर्वोच्च न्यायालय, चुनाव आयोग और महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष के सामने चल रहा है। भाजपा अपने प्लान बी के अनुसार सभी 48 लोकसभा सीटों पर भी चुनाव लड़ने की तैयारी में लगी है। इसका मतलब यह भी है कि भाजपा शिंदे व अजित पवार पर पूरे निर्भर नहीं रहना चाहती है।

तो मुकाबला बराबरी का होने के आसार हैं। कांग्रेस, शरद पवार, उद्धव ठाकरे, प्रकाश आंबेडकर,समाजवादी पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी और छोटे दल भाजपा फ्रंट को रोकने की कोशिश करेंगे और इसी बीच मराठा आरक्षण आंदोलन के नेता मनोज जरांगे पाटील के नेतृत्व का उदय हुआ है। जरांगे पाटील चुनाव में क्या करेंगे इसका अंदाजा नहीं है लेकिन वे खामोश नहीं रहेंगे इसमें कोई शक नहीं। मराठों को आरक्षण देना है तो संसद को कानून बनाना पड़ेगा या सर्वोच्च न्यायालय में दुबारा कानूनी लड़ाई होगी।

अकेले मराठा समुदाय के लिए केंद्र सरकार संसद में कानून पास करेगी या नहीं, इसका फैसला तो संसद के शीतकालीन अधिवेशन में होगा। समस्या है कि अगर मराठा को आरक्षण मिला तो जाट, रेड्डी, लिंगायत, पटेल, गुर्जर आदि जातियों में भी इस तरह की मांग होगी। उद्धव ठाकरे ने इस विषय पर संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग की है।

उत्तर प्रदेश के बाद महाराष्ट्र दूसरा बड़ा राज्य है, जहां से सबसे ज्यादा 48 सांसद लोकसभा में आते हैं। 1960 से अब तक महाराष्ट्र की राजनीति पर मराठों का ही कब्ज़ा रहा है। इस बीच मारोतराव कन्नमवार, वसंतराव नाईक, ए. आर, अंतुले, सुधाकरराव नाईक, मनोहर जोशी, सुशील कुमार शिंदे, देवेंद्र फडणवीस जैसे गैर मराठा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहे लेकिन उससे मराठा जाति की पकड़ कम नहीं हुई। यह इसीलिए कि उनकी आबादी तीस प्रतिशत से ज्यादा है। इसके आलावा सहकारिता क्षेत्र जिसमें चीनी मिलें, बैंक आदि आते हैं, शिक्षा क्षेत्र जिसमें

स्कूल, कॉलेज, मेडिकल, इंजीनियरिंग कॉलेज, डीम विश्वविद्यालय आदि आते हैं और सत्ता में इनकी बड़ी भागीदारी होने से इस समुदाय की पकड़ महाराष्ट्र पर रही है। 1991 से शुरू हुआ आर्थिक उदारीकरण और उससे पहले मंडल आयोग के अंतर्गत अन्य पिछड़ी जातियों (ओबीसी) मिले आरक्षण से शासन -प्रशासन में मराठा जातियों की पकड़ ढीली होती गई। इसी बीच महाराष्ट्र के खेती क्षेत्र पर उनका प्रभाव भी काम होने लगा। इसकी वजह आर्थिक है और गावों से शहरों की ओर होने वाला स्थानान्तरण भी है। जो मराठा किसी ज़माने में अपने आपको ठाकुर समझते थे , अपने नाम के आगे सिंह लगाते थे वे अभी पिछड़ी जाति बनने के लिए सड़क पर उतरे हुए हैं, आरक्षण मांग कर रहे हैं।

अब तक मराठा कांग्रेस और राष्ट्रवादी कांग्रेस की वोट बैंक थे, धीरे धीरे मराठा बाल ठाकरे की शिवसेना और भाजपा की और जाने लगे, लेकिन उनको वहां शीर्षस्थ नेतृत्व नहीं मिला, यह इसलिए कि शिवसेना और भाजपा का वोट बैंक गैर मराठा रहा है। मराठा आरक्षण के अभी हुए आन्दोलन में अब तक 19 लोगों की आत्महत्या करने की खबर है। मनोज जरांगे की भूखहड़ताल के दौरान सांसद, विधायकों को हमले का निशाना बनाया गया। उनके मकान, सरकारी दफ्तर जलाने की कोशिश हुई। इसके राजनीतिक परिणाम आगे दिखेंगे। मराठा आरक्षण आंदोलन से अन्य पिछड़ी जातियां सशंकित हैं। मंत्री छगन भुजबल, कांग्रेस नेता और विधान सभा के विरोधी दल नेता विजय वडेट्टीवार मराठा आरक्षण के विरोध में हैं। केंद्रीय मंत्री और कोंकण के मराठा नेता नारायण राणे भी आरक्षण की मांग के विरोध में हैं, लेकिन सभी राजनीतिक दलों ने आरक्षण का खुला समर्थन किया है।

महाराष्ट्र की राजनीति हिंदुत्व से अब आरक्षण की तरफ बढ़ रही है। यह मुद्दा आने वाले चुनाव को प्रभावित करेगा क्या? अगर हां, तो किस रूप में प्रभावित करेगा? इस पर अटकलों का बाजार गरम हो रहा है। इससे घबराये हुए संसद,विधायक अपने पदों से इस्तीफे दे रहे हैं। इसका मतलब उनका अपने दल पर,दल के नेता पर भरोसा कम होने लगा है। अगला चुनाव जितना है तो दल, नेता व पैसा काफी नहीं हैं, यह वे समझ चुके हैं।

महाराष्ट्र नेतृत्वहीन बना है। कहने के लिए मुख्यमंत्री है , दो उपमुख्यमंत्री, अलग अलग दलों के नेता हैं लेकिन उनमें महाराष्ट्र को प्रभावित करने की क्षमता नहीं है। वे सभी अपनी अपनी पार्टी के नेता के करिश्मा व मुदे पर निर्भर हैं। उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ जैसे भाजपा का प्रभाव पूरे महाराष्ट्र पर नहीं है। उसके बहुत कारण हैं। पृथक विदर्भ राज्य की मांग को समर्थन देने के बाद भाजपा पैन महाराष्ट्र पार्टी कैसी बन सकती है? और मोदी छत्रपति शिवाजी महाराज, वीर सावरकर की छवि के सामने हिंदुत्व का चेहरा कैसे बन सकते हैं? शिव सैनिक मोदीजी को हिन्दू हृदय सम्राट क्यों मानेंगे? राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूलाधार महाराष्ट्र है और वह भाजपा के किसी नेता को उनसे ज्यादा प्रखर हिन्दू नहीं मानते। ऐसे कई विरोधाभास हैं, जो सत्ता पक्ष की राह के कांटे हैं। नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्रित्व काल में महाराष्ट के उद्योग, सरकारी बड़े कार्यालय, डायमंड उद्योग गुजरात में जा रहे हैं और जनता को डर है कि भाजपा केंद्र में फिर से आई तो मुंबई केंद्रशासित प्रदेश बन सकता है और अलग विदर्भ राज्य भी बन सकता है। इस भय के चलते महाराष्ट्र में एक वर्ग भाजपा से दूर भी हो रहे हैं।

महाराष्ट्र में राजकीय अस्थिरता के मायने व कारण अनेक हैं। भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व महाराष्ट्र पर पकड़ बनाए रखना चाहते हैं। इससे वहां राज्य में कद्दावर नेतृत्व नहीं उभर रहा है। जिस नेता को भाजपा ने पिछले विधानसभा चुनाव में टिकट नहीं दिया, उस चंद्रशेखर बावनकुले को महाराष्ट्र भाजपा का अध्यक्ष बनाया है। आरक्षण के साथ अभी भाजपा को और बहुत कुछ करना होगा।

मराठा आरक्षण की डगर कठिन

दो टूक

प्रणय यादव

वरिष्ठ टीवी पत्रकार

मराठा आरक्षण को लेकर मनोज जरांगे पाटिल का धरना बेशक स्थगित हो गया। ये महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिन्दे के लिए फौरी तौर पर ही राहत है। दो महीने का वक्त उन्हें मिला है। उसके बाद क्या होगा। क्या वाकई में सीएम शिन्दे और डिप्टी सीएम देवेंद्र फड़णवीस की जोड़ी मराठाओं को आरक्षण दे पाएगी? इस मामले में कोई रास्ता निकलेगा और शरद पवार, उद्धव ठाकरे जैसे महायुति के नेता फिलहाल खामोश क्यों हैं? जवाब बिल्कुल साफ है। शरद पवार, पृथ्वीराज चव्हाण, अशोक चव्हाण, उद्धव ठाकरे व देवेन्द्र फणवीस चीफ मिनिस्टर रह चुके हैं, अपने अपने कार्यकाल में सबने माराठा आरक्षण के मामले को देखा है। सब इसकी पेचीदगी को समझते हैं। एकनाथ शिन्दे तो अभी अभी सीएम बने हैं, इसलिए इस मुद्दे से अकेले ही जूझ रहे हैं। अब उन्हें भी समझ आ गया होगा कि ये मामला झट मंगनी पट ब्याह वाला नहीं है। मराठा आरक्षण का मुद्दा पुराना और पेचीदा है। 42 साल पुराना ये इश्यू 42 घंटों में सुलझ जाएगा इसकी उम्मीद भी नहीं करनी चाहिए।

महाराष्ट्र में मराठा रिजर्वेशन को लेकर सबसे पहले 1981 में अन्नासाहेब पाटिल ने आंदोलन किया था। उसके बाद हर पार्टी ने मौके के हिसाब से इस पर सियासत की। इसकी वजह ये है कि महाराष्ट्र में मराठाओं की आबादी करीब तीस फीसदी है। सियासत में मराठाओं का दबदबा है। अब तक महाराष्ट्र के जो 21 सीएम हुए हैं। उनमें से 12 मराठा रहे हैं। एकनाथ शिन्दे भी मराठा हैं। उनकी सरकार में डिप्टी सीएम अजीत पवार भी मराठा हैं। 2014 में पृथ्वीराज चव्हाण ने एक बड़ा दांव खेला था। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले अध्यादेश के जरिए सरकारी नौकरियों और शिक्षा में मराठों को 16 प्रतिशत आरक्षण दे दिया। लेकिन चुनाव के बाद फड़णवीस की सरकार आई और मराठा रिजर्वेशन का मुद्दा कोर्ट में पहुंच गया। फड़णवीस की सरकार ने एमजी गायकवाड़ की अध्यक्षता वाले पिछड़ा वर्ग आयोग की रिपोर्ट के आधार पर मराठों को आरक्षण देने की मंजूरी दी। 2019 में, बॉम्बे हाई कोर्ट ने इस पर मुहर लगा दी। लेकिन मामला सुप्रीम कोर्ट में जाकर अटक गया। 2021 में, जस्टिस अशोक भूषण की अध्यक्षता वाली सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की संविधान पीठ ने मराठा आरक्षण को रद कर दिया। अब सवाल ये है कि दो महीने में एकनाथ शिन्दे ऐसा क्या कर लेंगे, जिससे सुप्रीम कोर्ट संतुष्ट हो जाए। और मराठाओं को रिजर्वेशन मिल जाए।

हकीकत ये है कि मराठा आरक्षण का मामला बहुत उलझा हुआ है। न मनोज जरांगे के मांगने से और न सरकार के कहने से आरक्षण मिलेगा। अगर ये इतना आसान होता तो 2014 में मिल गया होता। पहली और सबसे बड़ी बाधा है- आरक्षण की सीमा पचास प्रतिशत होना। दूसरी बाधा है कि कुछ लोग मांग कर रहे हैं कि अलग से आरक्षण देने के बजाय मराठाओं को पिछड़ी जाति में शामिल कर दिया जाए। ये हो सकता है, लेकिन इसमें भी दो प्रॉब्लम है, पहली ये कि पिछड़े वर्ग

की दूसरी जातियां इसका विरोध करेंगी। दूसरी समस्या मराठाओं को पिछड़ी जाति में शामिल करने के लिए इंपेरिकल डेटा की जरूरत होगी। .जो अभी है नहीं। इसको इक्कटा करने में वक्त लगेगा और मनोज जरांगे एकनाथ शिन्दे को ज्यादा वक्त देने के लिए तैयार नहीं हैं।

अब सवाल ये है कि फिर रास्ता क्या है। सीएम शिन्दे ने क्या सोचकर दो महीने का वक्त मांगा है। शिन्दे सोच रहे हैं कि मराठाओं को कुनबी जाति का सर्टिफिकेट दिया जाए। कुनबी जाति पहले से पिछड़े वर्ग में शामिल है। इस तरह मराठाओं को रिजर्वेशन मिल सकता है। लेकिन यह काम भी सरल नहीं है। जब महाराष्ट्र राज्य बना। उस वक्त महाराष्ट्र में गुजरात और हैदराबाद के निजाम के इलाके के कुछ हिस्से भी शामिल किए गए। निजाम के इलाके के जो मराठे हैं। उन्हें रिजर्वेशन नहीं मिलता। जो महाराष्ट्र में पहले से रहते थे उन्हें कुनबी कहा गया। कुनबी जाति को पिछड़े वर्ग का आरक्षण मिलता है, लेकिन बहुत कम लोगों के पास कुनबी जाति का सर्टिफिकेट है। इसलिए वो भी जरांगे के आंदोलन में शामिल हैं। मनोज जरांगे का कहना है कि आरक्षण भले बाद में दे देना, फिलहाल मराठाओं को कुनबी जाति प्रमाणपत्र तो दे दो। एकनाथ शिन्दे ने भरोसा दिलाया है कि जो पात्र हैं, उन सबको कुनबी प्रमाणपत्र दे देंगे। करोड़ों की तादाद में ऐसे मराठा हैं, जो हैं तो कुनबी लेकिन उनके पास सर्टिफिकेट नहीं हैं। सर्टिफिकेट तभी बनेगा जब पुराने रिकॉर्ड मिलेंगे और पचहत्तर साल पुराने कागजात निकलना टेढ़ी खीर है। इस मामले में एक जिले धाराशिव में काम हुआ था। प्रशासन ने चार लाख दस्तावेज खंगाले तो साढ़े तीन सौ लोगों के कुनबी जाति के कागजात मिले। अब सोच लीजिए पूरे राज्य में ये करने में कितनी मेहनत लगेगी और कितना वक्त लगेगा, जो सरकार के पास है नहीं।

सीएम शिन्दे ने पहले धरने पर बैठे मनोज जरांगे से 30 दिन मांगे थे, लेकिन चालीस दिन में भी कुछ नहीं कर पाए। ऑल पार्टी मीटिंग तक नहीं बुलाई। अगर वो पहले सभी दलों के नेताओं को बुलाकर बात करते तो कोई रास्ता निकलता या कम से कम हिंसा तो न होती। चूंकि केन्द्र में भी बीजेपी की सरकार है और महाराष्ट्र में भी। इसलिए पवार और उनकी पार्टी के नेता मराठा आरक्षण के मसले पर केन्द्र सरकार के पाले में गेंद फेंकना चाहते हैं। इसीलिए उनके लोग बार बार कह रहे हैं कि अगर मराठाओं को कोई आरक्षण दे सकता है तो केंद्र सरकार दे सकती है। इसके पीछे सियसत है। असल में विरोधी दलों के नेता एक तीर से दो शिकार करना चाहते हैं। शरद पवार उद्ध ठाकरे और नान पटोले की नजर मराठाओं के वोटबैंक पर है। लेकिन आंदोलन में हिसा के बाद जब मराठा आरक्षण को लेकर सरकार पर प्रेशर बना, तो पिछड़े वर्ग के नेताओं ने कहना शुरू कर दिया कि मराठाओं को आरक्षण दो लेकिन पिछड़े वर्ग का हक छीन कर नहीं।

शिन्दे और फड़णवीस ने बार बार ये बात कही कि पिछड़े वर्ग के कोटे पर कोई असर नहीं होगा। वो रास्ता निकालेंगे। इसके बाद विरोधी दलों के नेताओं एहसास हुआ है कि अगर उन्होंने सिर्फ मराठाओं के रिजर्वेशन पर ज्यादा जोर दिया तो पिछड़े वर्ग में रिएक्शन हो जाएगा और पिछड़े वर्ग का वोट 50 फीसदी से ज्यादा है। सियासत का तकाजा है कि 15-20 फीसदी के चक्कर में 50 प्रतिशत को नाराज नहीं किया जा सकता। चूंकि छगन भुजबल जैसे पिछड़े वर्ग के तमाम नेताओं ने अपना हक मांगने की बात शुरू कर दी है। कुल मिलाकर अब इस मामले को मराठा बनाम पिछड़ा वर्ग बनाने की कोशिश हो रही है। इसीलिए ये मामला और उलझ गया है। अभी तक महाराष्ट्र सरकार का रुख देखकर लगता है कि सीएम एकनाथ शिंदे के पास इस मामले को सुलझाने की ना समझ है और ना अनुभव। वे किसी तरह पूरे मामले को टालने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है। इसलिए इसे टाला भी नहीं जा सकता। सियासत अभी बाकी है...

संक्षेप

उप जिलाधिकारी कैसरगंज ने बूथों का किया निरीक्षण

कैसरगंज, बहराइच। उप जिलाधिकारी कैसरगंज पंकज दीक्षित ने तहसील कैसरगंज के अंतर्गत ग्राम गंदारा एवं अन्य गांव के बूथों का निरीक्षण किया एवं सभी बीएलओ को सख्त दिशा निर्देश दिया कि वोटर लिस्ट में जल्द से जल्द संशोधन एवं लोगों के ज्यादा से ज्यादा नाम जोड़ने की प्रक्रिया को अहमियत दें। एसडीएम ने सभी बीएलओ को अपने बूथों पर निर्धारित तारीख पर समय से उपलब्ध रहने का निर्देश दिया।

यातायात माह के अंतर्गत जागरूकता अभियान शुरू

कैसरगंज, बहराइच। यातायात माह के अंतर्गत थाना जरवल रोड इंस्पेक्टर दद्दन सिंह के निगरानी में चालकों को यातायात के नियम व कानून बताए गए तथा लोगों को जागरूक किया गया की जिंदगी अनमोल है इसे अपने आप खुद ही सुरक्षित रखें। गाड़ी मोटरसाइकिल, फोर व्हीलर को नियमों के तहत चलाएं। इस संबंध में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया तथा लोगों में पंपलेट वितरित किए गए।

सुलतानपुर में प्राइवेट बस ने स्कूटी को मारी टक्कर

बुजुर्ग की मौत, साथी का गंभीर हालत में मेडिकल कॉलेज में चल रहा इलाज

सुलतानपुर, सुलतानपुर में अयोध्या-प्रयागराज पर केएनआईटी की प्राइवेट बस ने स्कूटी सवार को टक्कर मार दी। दुर्घटना में स्कूटी सवार एक वृद्ध की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई, जबकि एक अन्य घायल हुआ है। घायल को इलाज के लिए राजकीय मेडिकल कॉलेज भेजा गया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम में भेजकर कार्रवाई शुरू कर दी है। गोसाईगंज थाना क्षेत्र के माधवपुर छतौना गांव निवासी मोलई सिंह (58) गांव के बब्लू शुक्ला के साथ नगर से गांव लौट रहे थे। अभी वे नगर कोतवाली के पांचोपीरन स्थित केएनआईटी के पास पहुंचे थे कि सवारी ढोने वाली गाड़ी ने टक्कर मार दिया। टक्कर इतनी भीषण थी कि मोलई सीधे सड़क पर जा गिरे। उनके सिर में गंभीर चोट आई और वे लहूलुहान हो गए, जबकि उनके स्थान मौजूद बब्लू शुक्ला को भी गंभीर चोटें आईं। आनन-फानन में घायल को प्राइवेट वाहन से अस्पताल भिजवाया। वही स्थानीय लोगों ने बस को रुकवा लिया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बस को कस्टडी में लेकर मामले में विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। नगर कोतवाल श्रीराम पाण्डेय ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम में भेजकर अन्य विधिक कार्रवाई की जा रही है।

सीमा जागरण मंच के राष्ट्रीय सयोजक का दो दिवसीय प्रवास संपन्न

- भारत नेपाल सीमा क्षेत्र में किया भ्रमण

संवाददाता

मोतीपुर, बहराइच। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सहयोगी संगठन सीमा जागरण मंच के अखिल भारतीय संयोजक गोपाल कृष्णन का दो दिवसीय प्रवास भारत नेपाल सीमा पर लगा। दो दिवसीय प्रवास के दौरान राष्ट्रीय संगठन मंत्री गोपाल कृष्णन ने बहराइच जिले के भारत नेपाल सीमा पर स्थित गांव में प्रवास कर क्षेत्र में भ्रमण कर क्षेत्र की आधार भूत संरचना, परिवेश, जीवन स्तर एवं सीमा पर समन्वय व ग्रामीणों का हाल-चाल जाना। बहराइच प्रवास के दौरान मिहींपुरवा तहसील क्षेत्र में अपनी अलग पहचान रखने वाले प्रकृति प्रेमी, गौ सेवक, बोनसाई मास्टर सोमवर्धन पांडे के निज निवास पर पहुंचकर प्राकृतिक खेती तथा पर्यावरण संरक्षण पर चर्चा की। इसके बाद एसपीवीपी इंटर कॉलेज सेमरहना में पहुंचकर छात्र-छात्राओं को संबोधित कर उनसे राष्ट्र, समाज और सीमा के बारे में चर्चा की ।सयोजक गोपाल कृष्णन ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए राष्ट्र समाज के कर्तव्य का पालन करने की पद्धति सिखाई। इसके बाद भारत नेपाल सीमा के समीप तीन तरफ कतर्नियाघाट जंगल से तथा एक तरफ नेपाल राष्ट्र की सीमा पर बसे ग्राम सलारपुर पहुंच ग्रामीण ओमनाथ सिंह चौहान के घर पर प्रवास किया । बहराइच जिले के इस सीमावर्ती गांव में भ्रमण कर ग्रामीणों से सीमा क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण चर्चा की। सलारपुर में रात्रि विश्राम के बाद रविवार की सुबह वापसी में भारत नेपाल सीमा पर बसे गांव चितलहवा नों मेंस लैंड का भ्रमण किया। नोमैंस लैंड पर बसे चितलवा निवासी संगठन के कार्यकर्ता सप्पू वर्मा के घर स्थानीय ग्रामीणों के साथ बैठकर सीमावर्ती गतिविधियों पर चर्चा की। इसके बाद बलहा विधायक सरोज सोनकर के प्रतिनिधि आलोक जिंदल से भेंट वार्ता कर सीमा क्षेत्र तथा संगठन पर चर्चा की। इस दौरान सीमा जागरण मंच के महामंत्री योगेन्द्र मौर्य, जिला उपाध्यक्ष संदीप वर्मा, एसपीवीपी इंटर कॉलेज के प्रबंधक अनिल कुशवाहा व विधायक प्रतिनिधि आलोक जिंदल ने राष्ट्रीय संगठन मंत्री गोपाल कृष्णन, प्रांत संगठन मंत्री अमरनाथ, प्रांत महामंत्री राम कृपाल शुक्ल, प्रांत युवा प्रमुख मनोज चौरसिया को स्मृति चित्र व अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया। उक्त प्रवास कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नानपारा जिला प्रचारक अजय, सीमा जागरण मंच के जिला महामन्त्री योगेन्द्र मौर्य, जिला उपाध्यक्ष संदीप वर्मा, जिला प्रचार प्रमुख अनिल कुशवाहा, सोम वर्धन पाण्डेय, हरगोविंद पाण्डेय, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला संघचालक बाबूलाल शर्मा, नगर प्रचारक महेश्वर, एसपीबीपी इंटर कालेज के प्राचार्य दुर्गेश कुशवाहा, राम किशोर वर्मा, मनीष सिंह, हर्षित शुक्ला, विजय मौर्य, अनिल मौर्य, प्रियेश सिंह, जयराम सिंह, नेपाल के सम्भाग संघचालक राजेन्द्र यादव, विवेक कुमार निषाद उर्फ मुरली, बेचू पाल, विपिन सिंह, ओम नाथ सिंह चौहान, संदीप वर्मा, सप्पू वर्मा, विनोद कुमार आदि लोग उपस्थित रहे।

कतर्नियाघाट में बाघों की संख्या डबल करने में पूर्व डीएफओ का बड़ा योगदान: लखमानी

- राष्ट्रीय पशु बाघ का चित्र भेंटकर पूर्व डीएफओ को दी विदाई

अमन लेखनी समाचार

मोतीपुर, बहराइच। कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग द्वारा कतर्नियाघाट से स्थानांतरित हुए डीएफओ आकाशदीप बधावन के विदाई समारोह में कतर्नियाघाट फ्रेंड्स क्लब की ओर से क्लब के अध्यक्ष भगवान दास लखमानी ने फील्ड डायरेक्टर ललित वर्मा और डिप्टी डायरेक्टर डी रंगाराजू को क्लब के की रिंग्स भेंट करते हुए कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग से बाराबंकी स्थानांतरित प्रभागीय वनाधिकारी आकाशदीप बधावन को बुके व क्लब के वन्य जीव छायाकार अमन लखमानी द्वारा 26 अप्रैल कतर्नियाघाट में खींचे गए बाघ का चित्र भेंटकर भावभीनी विदाई दी। कार्यक्रम में उपस्थित कतर्नियाघाट की सभी 07 रेंज के वन क्षेत्राधिकारियों वनकर्मियों, ग्राम प्रधानों व उपस्थित क्षेत्रवासियों को अपने संबोधन में क्लब अध्यक्ष ने विदाई ले रहे पूर्व डीएफओ को ₹सिंह इज किंग₹ की उपाधि देते हुए कहा कि आकाशदीप बधावन का ढाई साल का कार्यकाल उपब्धियों से परिपूर्ण रहा।उनके कार्यकाल में कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग ने नए आयाम स्थापित किए, वन एवं वन्य जीवों के संरक्षण के लिए उनकी मेहनत, समर्पण और लगन से जंगल का घनत्व बढ़ा और वन्य जीवों विशेषकर बाघों की संख्या में दोगुनी वृद्धि हुई। अब नवागंतुक डीएफओ, स्वयं सेवी संस्थाओं और इस संरक्षित वनक्षेत्र में कार्य कर रहे फील्ड स्टाफ का दायित्व है कि क्षेत्रवासियों से तालमेल बनाकर कार्य करें जिससे कि इन उपलब्धियों को और आगे ले जाया जाय, जिससे भविष्य में कतर्नियाघाट वन्य जीव प्रभाग नई ऊंचाइयों को छूता रहे। इस मौके पर काफी संख्या में ग्रामीण व वन विभाग के कर्मचारी उपस्थित रहे।

संयुक्त सचिव निर्वाचन आयोग ने बूथ का किया निरीक्षण

अमन लेखनी समाचार

कैसरगंज, बहराइच। संयुक्त सचिव निर्वाचन आयोग मनीष शुक्ला ने कैसरगंज राजकीय बालिका इंटर कॉलेज के सभी बूथों का निरीक्षण किया। मतदाता पुनरीक्षण सूची में तेजी से सुधार लाने हेतु अधिकारियों को सख्त दिशा निर्देश दिए। संयुक्त सचिव ने सभी अधिकारियों को सख्त हिदायत दिया है कि जनवरी 2024 में 18 वर्ष पूर्ण कर रहे युवाओं को मतदाता सूची में तत्काल प्रभाव से नाम शामिल किया जाए तथा मतदाता पुनरीक्षण का काम बहुत तेजी से किया जाए। किसी भी प्रकार की थिसिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस मौके पर तहसीलदार अजय कुमार यादव लेखपाल पवन चौहान राजस्व निरीक्षक वाहिद कमल राम तेज वर्मा लेखपाल आदि कर्मचारी अधिकारी मौजूद रहे।

रामजन्मभूमि परिसर की सुरक्षा के लिए कंट्रोल रूम का भूमिपूजन

- आईजी बोले; सुरक्षा से जुड़े सभी संगठनों का एकीकृत कमांड सेंटर होगा

संवाददाता

अयोध्या, अयोध्या स्थित भगवान श्रीराम की राम जन्मभूमि परिसर की सुरक्षा अभेद्य होगी। 70 एकड़ से ज्यादा विशाल इस परिसर में करीब दा हजार करोड़ से भव्य मंदिर बनकर तैयार हो रहा है। 22 जनवरी 2024 को इस मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से पहले पूरे परिसर की सुरक्षा नए सिरे से संगठित की जा रही है ।इसके लिए सुरक्षा में तैनात सभी संगठनों का एकीकृत कमांड सेंटर का भूमि पूजन किया गया। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच इस भूमि पूजन में राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय, ट्रस्टी डॉ अनिल मिश्र, आईजी प्रवीण कुमार, डीएम नीतिश कुमार, एसएसपी राज करन नैय्यर और एसपी सुरक्षा पंकज पांडेय आदि प्रमख रूप से मौजूद रहे। एसएसपी राज करन नैय्यर ने बताया कि कमांड सेंटर का भवन तीन तल का होगा जो कि अगले साल के मध्य तक बनकर तैयार हो जाएगा। सुरक्षा संबंधी सभी प्रकार की सूचनाओं पर व्यापक मंथन कर अयोध्या की सुरक्षा को सफल बनाते रहेंगे-आईजी आईजी प्रवीण कुमार ने बताया कि राम जन्मभूमि परिसर में पुलिस कंट्रोल रूम का भूमि पूजन किया गया है ।इसमें रामजन्म भूमि की सुरक्षा में लगे सुरक्षा बलों के लिए स्थायी तौर पर कंट्रोल रूम, बनाया जाएगा।

नये मतदाताओं को जोड़ने की कवायद

- विधायक प्रतिनिधि आलोक जिंदल ने की बैठक

अमन लेखनी समाचार

मोतीपुर, बहराइच। बलहा विधानसभा क्षेत्र में नए मतदाताओं को जोड़ने के लिए वोटर चेतन महा अभियान के अंतर्गत बीएलओ के साथ बैठक कर विधायक प्रतिनिधि ने चर्चा की। बलहा विधायक सरोज सोनकर के प्रतिनिधि आलोक जिंदल ने विधानसभा क्षेत्र के शक्ति केंद्र कुड़वा बूथ संख्या 242/243 /244 पर 5 तथा भाजपा बूथ अध्यक्षों के साथ बैठक कर वोटर चेतना अभियान के तहत नए मतदाताओं को जोड़ने तथा मृतक व जिन मतदाताओं के नाम डबल है उन्हें हटाने के बारे में चर्चा की। विधायक प्रतिनिधि आलोक जिंदल ने बताया कि विधानसभा क्षेत्र में अधिक से अधिक नए मतदाताओं को जोड़ने का अभियान चलाया जा रहा है जिन मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट में शामिल नहीं है वह बीएलओ से संपर्क करके अपना नाम जुड़वा ले। इस मौके पर सेक्टर अध्यक्ष बछराज लोधी, बूथ अध्यक्ष ज्ञान सागर वर्मा, संजय लोधी सहित कई अन्य कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सुलतानपुर में 1.5 करोड़ की लागत से बना वेडिंग जोन

- सांसद मेनका गांधी ने कहा- अब शहर में जाम से थोड़ी निजात मिलेगी

संवाददाता

सुलतानपुर, सुलतानपुर में कलेक्ट्रेट के पीछे 1.5 करोड़ की लागत से वेडिंग जोन बनकर तैयार हो गया। सांसद मेनका गांधी ने जिसका लोकार्पण किया है। इसके लिए सांसद ने जहां अपनी निधि से 39 लाख रुपए दिए। वहीं विधायक विनोद सिंह ने 37 लाख और एमएलसी शैलेंद्र प्रताप सिंह ने 27 लाख रुपए स्वीकृत किए थे। वेडिंग जोन में 300 प्लेटफार्म तैयार किए गए हैं। जिसमें ठेले एवं खोमचे वाले दुकान लगाकर लोग जीवनयापन करेंगे। इसके बनने के बाद शहर में जाम से भी थोड़ी निजात मिलेगी। बता दें कि डेढ़ करोड़ से बनने वाले वेडिंग जोन का निर्माण कार्यदायी संस्था आरईडी की ओर से किया गया। जिसने इसे नगर पालिका के हैंडओवर किया है। लोकापर्ण में भाजपा जिलाध्यक्ष डॉ.आरए वर्मा, एमएलसी शैलेंद्र प्रताप सिंह, विधायक विनोद सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष प्रवीन कुमार अग्रवाल सांसद मेनका गांधी के साथ में मौजूद रहे । मेनका गांधी ने कहा मैं चाहती हूं कि जिला प्रदेश का सबसे सुन्दर व हरा- भरा शहर बने। मेनका गांधी ने कहा कि मैने एक सपना देखा था कि मुख्य सड़के हैं, जहां से ठेले वाले एक ऐसी जगह पाए जहां उन्हें धूप और बारिश से बचाया जा सके। खुशी-खुशी अपना रोजगार कर सके। सबसे बड़ी बात की इतनी दूर भी न हो कि लोग पहुंच न सके। मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं विधायक शैलेन्द्र सिंह और विधायक विनोद सिंह को व धन्यवाद देती चेयरमैन को जिनकी मदद से यह बना कार्य हो सका। हम चाहते हैं कि शहर से पशुओं की डेयरी हट जाए। जहां शहर में एक डेयरी नगर बन जाए। चेयरमैन ने उसके लिए जगह देखी है।

लेकिन वह विवादित है। हम चाहते हैं कि जो मजदूर खड़े होते हैं, रोज काम ढूंढने के लिए उनके लिए जगह बनाए। ताकि वह भी पीड़ित न हो। हम चाहते है कि बस स्टैंड बाहर आ जाए। ताकि वहां पार्किंग जोन बन जाए सबके लिए यात्रा करने के लिए बेहतर हो।

अधिवक्ता हत्याकांड में इनामिया हिस्ट्रीशीटर 3 माह से फरार

देहात कोतवाली पुलिस ने 87 दिन में तैयार की 450 पेज की चार्जशीट, सीजेएम कोर्ट में की पेश

संवाददाता

सुलतानपुर, चर्चित अधिवक्ता आजाद अहमद हत्याकांड में मुख्य आरोपी एक लाख का इनामी हिस्ट्रीशीटर सिराज अहमद एसटीएफ व पुलिस को तीन माह से छका रहा है। इस बीच कोतवाली देहात पुलिस ने 87 दिनों के अंदर 450 पन्ने की चार्जशीट सीजेएम कोर्ट में पेश कर दी है। इसमें विधि एवं फॉरेंसिक विशेषज्ञों आदि की मदद ली गई है कि अपराधी को कोई लाभ ना पहुंच सके। बीते छह अगस्त की रात कोतवाली देहात थाना क्षेत्र के भुलकी चौराहे पर अधिवक्ता आजाद अहमद और उनके भाई मुनव्वर पर गोलियों से हमला कर दिया गया था। इसमें आजाद अहमद की मौके पर मौत हो गई थी और मुन्नवर बुरी तरह घायल हो गए थे। इस मामले में आजाद अहमद के पिता की तहरीर सिराज अहमद, इस्माइल उर्फ प्रिंस समेत अन्य के खिलाफ कोतवाली देहात में मुकदमा दर्ज हुआ था। इसमें सिराज को छोड़कर बाकी आरोपी गिरफ्तार भी हो चुके हैं, लेकिन एक लाख का इनामी सिराज अब तक पुलिस पकड़ से दूर है। सिराज के करीबी साथी इस्माइल उर्फ प्रिंस ने लखनऊ की एक अदालत में सरेंडर किया था। इसके बाद कोतवाली देहात पुलिस ने उसे 14 दिन की रिमांड पर लेकर कड़ी पूछताछ की। लेकिन प्रिंस ने सिराज अहमद से जुड़ा कोई खास राज पुलिस के सामने नहीं उगला। जबकि पुलिस को काफी उम्मीद थी कि प्रिंस से पूछताछ से सिराज तक पहुंचना आसान हो जाएगा। वही इस मामले में एसपी सोमेन बर्मा ने कहा कि यह बेहद संवेदनशील मामला था। इसलिए पुलिस ने हर पहलू से व्यापक तैयारी की है। फरार आरोपी सिराज अहमद से जुड़े सूत्र भी खंगाले जा रहे हैं। उम्मीद है कि जल्द ही वह पकड़ में होगा।

प्रतापगढ़ में क्रय केंद्रों पर किसानों से खरीदा गया धान

- सदर विधायक ने फीता काटकर शुभारंभ किया, किसानों ने पूछी समस्या

संवाददाता

प्रतापगढ़, प्रतापगढ़ में प्रशासन के क्रय केंद्र सक्रिय होने के दूसरे दिन गुरुवार को जिले के तीन क्रय केंद्रों पर धान खरीदने की शुरूआत हो गई। महुली स्थित विपणन विभाग के क्रय केंद्र पर इसकी शुरूआत सदर विधायक राजेन्द्र कुमार मौर्य ने फीता काटकर की। उन्होंने किसानों से केंद्र तक आने व धान की तौल कराने में हुई समस्या पूछी। किसानों का धान खरीदने और उन्हें उचित कीमत देने के लिए प्रशासन की ओर से जिले के अलग-अलग इलाकों में 80 क्रय केंद्र स्थापित किए गए हैं। इन केंद्रों पर किसानों की सहूलियत के सभी इंतजाम किए गए हैं। एक नवम्बर से सक्रिय किए गए क्रय केंद्रों पर पहले दिन सन्नाटा ही रहा। कुछ केंद्रों पर किसान पहुंचे और प्रभारी से धान की तौल कराने के बारे में जानकारी ली।

जिला विपणन अधिकारी जितेन्द्र यादव ने किसानों को धान खरीद की नीतियों की जानकारी दी।

प्रतापगढ़ में 25 हजार का इनामी बदमाश गिरफ्तार

70 हजार लूट के मामले में वांछित चल रहा था, टाइनी शाखा संचालक को लूटा था

संवाददाता

प्रतापगढ, प्रतापगढ़ में टाइनी शाखा संचालक से 70 हजार लूट के मामले में वांछित 25000 के इनामी बदमाश दिलीप यादव को चेकिंग के दौरान पट्टी पुलिस ने गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी से पूछताछ के बाद विधिक कार्रवाई करते हुए जेल भेज दिया। प्रतापगढ़ के पट्टी कोतवाली क्षेत्र में टाइनी शाखा संचालक के साथ हुई लूट के एक आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। आरोपी दिलीप यादव 25000 का इनामिया था। वर्ष 2021 में बंधवा बाजार के समीप टाइनी शाखा संचालक को असलहा सटकर 70 हजार की लूट हुई थी। इस मामले में एक आरोपी दिलीप कुमार यादव निवासी नाचरौला थाना आसपुर देवसरा भी शामिल था। पट्टी कोतवाल अर्जुन सिंह ने बताया कि रणविजय सिंह के साथ मुखबिर की सूचना पर लवेदा गांव की चाय की दुकान के पास दिलीप को गिरफ्तार किया। उसके पास से 1720 रुपए बरामद किए गए हैं। लूट की घटना के बाद से वह फरार चल रहा था।

अम्बेडकरनगर में मारपीट करने वाले दबंगों के खिलाफ दी तहरीर

- एसपी बोले – होगी कड़ी कार्रवाई, केस दर्ज; महिलाओं से की थी मारपीट

संवाददाता

अम्बेडकरनगर, अम्बेडकरनगर के राजेसुलतानपुर थाना इलाके के खरूवावा गांव की दर्जनों महिलाओं ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय में पहुंचकर पुलिस अधीक्षक अजीत कुमार सिन्हा को प्रार्थना पत्र दिया। महिलाओं ने दबंगों पर कार्रवाई की मांग किया। महिलाओं का आरोप था कि गांव का एक दबंग ने उन लोगो के साथ गाली गलौज तथा मारपीट किया और फिर झूठे मुकदमे मे फंसाने की धमकी दे रहा है। पुलिस अधीक्षक को दिए प्रार्थना पत्र में खरूवावा गांव निवासी शिव प्रसाद पुत्र राजेन्द्र प्रसाद ने बताया कि उनके घर की महिलाएं सुमित्रा देवी नीलम अनिता गांव के ही विनय सिंह पुत्र अमरजीत सिंह के खेत में शाम को शौच करने गयी थी, उसी दौरान वहां पंहुचे विनय सिंह ने महिलाओ के साथ मारपीट किया एवं गाली गलौज किया। मारपीट के दौरान दो महिला किसी तरह भाग गयी, लेकिन उनकी वृद्ध मां वही गिर गयी, जिसे आरोपी ने लातघूंसों से जमकर पीटा और जाति सूचक शब्द कहा। इस दौरान रोने की आवाज सुनकर वे लोग मौके पर पंहुचे और डायल 112 पर फोन कर पुलिस को सूचना दिया।

संक्षेप

दो बाइकों की भीषण टक्कर में लेखपाल घायल

औंग, फतेहपुर। जनपद के औंग थाना क्षेत्र अंतर्गत औंग कस्बे से अभय पुर गांव जा रहे राजस्व लेखपाल शुभम सिंह को सामने से आ रही बाइक से भीषण टक्कर लगी जिससे उन्हें गंभीर चोट पहुंची यह दृश्य देख आसपास के दुकानदारों ने दौड़कर घायल शुभम सिंह को उठाया तथा नजदीकी अस्पताल पहुंचाया चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के पश्चात गंभीर चोट देख हैलट कानपुर के लिए रेफर कर दिया लेखपाल शुभम सिंह के साथी लेखपाल अभिषेक गुप्ता द्वारा मिली जानकारी के अनुसार शुभम सिंह के कंधे में चोट पहुंची है जो थाना क्षेत्र के अभय पुर गांव में तैनात हैं

मतदाता फॉर्म भरकर भाजपाइयों ने जनमानस को किया जागरूक

अमौली, फतेहपुर। जनपद की जिलाधिकारी सी इंदुमती के निर्देशन पर संपूर्ण जनपद में आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर निर्वाचन नामावली की प्रक्रिया प्रारंभ हुई मिली जानकारी के अनुसार मतदाता सूची में नाम बढ़ाने हेतु सभी पार्टियों के पदाधिकारियों ने अपने-अपने अभिन्न मित्र गण नवयुवक नारी समाज को जागरुक करते हुए आगामी चुनाव के लिए मतदाता फॉर्म भरवाने का कार्य प्रारंभ किया भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों ने ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर मतदाताओं से अपील करते हुए मतदाता सूची में नाम अंकित करने के लिए प्रेरित किया जनपद के अमौली विकासखंड क्षेत्र के गांव पूरे राहत अली कुंदे रामपुर साल्हेपुर रामपुर कुर्मी सठिगवां इटरा आजमपुर गढ़वा मदरी कोठा बखरिया मवई समेत दर्जनों ग्राम पंचायतों में पहुंचकर भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों ने मतदाता सूची में नाम बढ़ाने हेतु फार्म भरवाऐ अमौली मंडल के लगभग 15 बूथों में पहुंचकर मंडल अध्यक्ष संतोष गुप्ता बुंदेलखंड क्षेत्रीय उपाध्यक्ष वी के साहू सत्य प्रकाश शुक्ला देवेंद्र अवस्थी संदीप साहू रणधीर सिंह बीएलओ सीमा सिंह सरला देवी बेबी गुप्ता शिव कांति संतोष सविता सभी शिक्षक एवं विभागीय कर्मचारियों ने इस कार्य में सराहनीय योगदान दिया जहानाबाद विधानसभा के विधायक राजेंद्र पटेल ने भी आम जनमानस से मुलाकात करते हुए आगामी लोकसभा चुनाव के लिए निर्वाचन नामावली में नाम बढ़वाने हेतु अपील की

मारपीट के मामले में पुलिस ने चार पर दर्ज किया केस

गोरखपुर। सहजनवा थाना क्षेत्र स्थित के ग्राम पंचायत तिलौरा निवासी दिलीप कुमार दुबे पुत्र बृजलाल दुबे से गांव के दो लोग रास्ते के लिए 50 हजार रुपया मांग रहे थे। शनिवार को सुबह 9 बजे दरवाजे पर ईट गिराने से मना करने पर पीट कर घायल कर दिए। पुलिस ने प्रेम दुबे, अजय कुमार दुबे निवासी तिलौरा के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। वही घघसरा निवासी सुरेश निषाद पुत्र ओरी को पट्टीदार बटवारे को लेकर पिटकर घायल कर दिए थे। पुलिस ने आरोपी बनारसी निषाद, ममता के खिलाफ मारपीट, जान से मारने की धमकी देने का केस दर्ज कर लिया है।

कपरवार-रूद्रपुर मार्ग बनाने की मांग को लेकर सपाइयों ने किया प्रदर्शन

गांव-गांव मिट्टी मागने वाले जनप्रतिनिधि नहीं दस साल मे अपने गोद लिए गांव की सडक व नाली नहीं बनवापाए

सासद के गोद लिए कपरवार गांव विकास से अछूता - विजय

दस साल से सांसद के गोद लिए गाँव में नहीं हुआ विकास - विजय रावत

अमन लेखनी समाचार

देवरिया। बरहज विधानसभा के कार्यकर्ताओ ने सपा नेता विजय रावत के नेतृत्व में कपरवार- रूद्रपुर मार्ग व सासद के गोद लिए गांव की सडक नाली के विकास को लेकर कपरवार मे ग्रामीणों के साथ साकेतिक प्रदर्शन किया इस दौरान सपा नेता विजय रावत ने कहा कि अगर दस साल से सासदके गोद लिए गांव का विकास नहीं हो पाया तो और कया विकास होगा आज भाजपा सरकार के छ साल से ऊपर के कार्यकाल से कपरवार- रूद्रपुर सडक का बुरा हाल हैं लेकिन इस सडक को बनाने के व्जाय जनता को धोखा दे रही हैं भाजपा के जनप्रतिनिधि गांव गांव घुम कर मिट्टी मांग कर सडक बनाने के लिए मिट्टी तो मांग रहे है पर अपने गोद लिए गांव और घर जाने वाली सडकों सहित क्षेत्र का विकास नहीं करा पा रहे और सिर्फ जनता को गुमराह कर रहे है। कपिल मुनि गोड ने कहा कि भाजपा सरकार ने जनता को धोखा व गुमराह करने का काम कर रही हैं इसको विकास से कुछ लेना नहीं है जिसका जिता जागता सबुत भाजपा सासद द्वारा दस साल से कपरवार गोद लिया गांव हैं जिसमें आज तक कोई विकास नहीं हुआ ना ही कोई सडक बनी ना ही नाली जिसकी देन बरसात के दिन पुरा गाँव व घर जल मगन हो जाता हैं। छात्र नेता यशवंत यादव ने कहा कि कपरवार- रुद्रपुर मार्ग पर काम तो कई बार हुआ लेकिन बस लुट हुई इस लिए हमारी मांग है कि सडक पर कितनी बार काम हुआ इस जाच हो।

मां गंगा की स्वच्छता के लिए तत्पर गौ रक्षा सेवा मंच

- भव्य आरती के साथ मनाया गया भिटौरा घाट में गंगा महोत्सव

अमन लेखनी समाचार/शोभित शुक्ला

फतेहपुर। जनपद के भिठौरा विकासखंड अंतर्गत भिठौरा गंगा घाट में गंगा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया महोत्सव में पहुंचे ब्लॉक प्रमुख अमित तिवारी राष्ट्रीय महासचिव गौ माता गौ रक्षा सेवा मंच सुशांत श्रीवास्तव समाजसेवी का पूनम श्रीवास्तव समेत सभी पदाधिकारियों ने मां गंगा की आरती कर भव्य पूजन किया सरकार द्वारा घोषित किए गए 4 नवंबर को गंगा महोत्सव के रूप में मनाए जाने को लेकर समिति के सदस्यों ने वर्तमान सरकार की सराहना की पदाधिकारियों ने बताया कि मां गंगा हिमालय की गंगोत्री पहाड़ों से निकली हुई है सभी सनातन भक्तगण उद्गम स्थल से लेकर अनवरत संपूर्ण भारतवर्ष में गंगाजल में डुबकी लगाकर अपने को पवित्र महसूस करते हैं सभी नदियों में माता गंगा का एक उत्कृष्ट स्थान है जिसके द्वारा भक्तगणों के साथ-साथ स्थानीय किसानों को सिंचाई तथा बिजली के भी कार्य संपन्न हो रहे हैं

वेद पुराणों में भी मां गंगा का उल्लेख मिलता है वहीं गंगा नदी हमारे भारतवर्ष की प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति बताई जाती है सभी पदाधिकारियों ने भव्य आरती करते हुए स्वच्छता पर विशेष देने ध्यान देने के लिए आम जनमानस से अपील की तथा गंगा माता को स्वच्छ रखने के लिए दृढ़ संकल्पित हुऐ

चोरों ने सूने घर को बनाया निशाना, लाखो का मॉल पार

अमन लेखनी समाचार

बकेवर, फतेहपुर। बकेवर थाना क्षेत्र में चोरी की घटनाओं का सिलसिला जारी है। थाना क्षेत्र के गाँव जगदीशपुर बकेवर में चोरों ने पूर्व प्रधान के सूने घर में घुस कर सोने-चांदी के आभूषणों व नगदी सहित लगभग तीन लाख रुपये कीमत का सामान चोरी कर लिया। चोरी की तहरीर पीड़ित पूर्व प्रधान द्वारा बकेवर थाने में दे दी गई है।जगदीशपुर गाँव निवासी पूर्व प्रधान अवधेश कुमार मौर्य पड़ोस में अपने भाई दिनेश मौर्य के घर मे विगत रात सोया था और उसका घर सूना पड़ा था। पीडित अवधेश गाँव मे अकेला ही रहता है और उसका बड़ा बेटा प्रवेश कानपुर व छोटा बेटा संतोष नोएडा में परिवार सहित रहता हैं। पीड़ित की छोटी बहू व संतोष की पत्नी के जेवरात गाँव के ही घर पर अलमारी में रखें थे। विगत देर रात आसपास चोर किसी सहारे से मकान में घुस आए और उन्होंने एक कमरे का कुंडा तोड़ दिया लेकिन वहाँ कुछ न मिलने पर सामने बने कमरे का ताला तोड़कर घुसे और अवजारो का सहारा लेकर वहाँ रखी अलमारी ताला तोड़कर व लॉकर तोड़ उसमें रखा एक सोने का हार, एक जोड़ी विछुआ चाँदी के, दो जोड़ी चांदी की पायलें, एक जोड़ी चाँदी के तोड़िया व एक चाँदी का गुच्छा समेत बीस हजार रुपये की नगदी चुरा ले गए।आज रविवार की सुबह लगभग 4:30 बजे अवधेश जागा और अपने घर की ओर आया। कमरे के कुंडा व ताला टूटा हुआ व सामन बिखरा हुआ देखा तो उनके होश उड़ गए। तभी चोरी की घटना का पता चला और तुरंत घटना की सूचना 112 को दी।

विशिष्ट बीटीसी अध्यापकों की बैठक संपन्न

- सूची में शामिल न होने वाले 2004 बैच के शिक्षकों ने जताया गहरा आक्रोश

अमन लेखनी समाचार/शोभित शुक्ला

फतेहपुर। जनपद के विद्या निकेतन इंटर कॉलेज रानी कॉलोनी फतेहपुर में विशिष्ट बीटीसी वेलफेयर एसोसिएशन के जनपद इकाई की बैठक संपन्न हुई बेसिक शिक्षा निदेशक उत्तर प्रदेश द्वारा निर्गत किए गए आदेश के अनुसार शिक्षकों ने भारी संख्या में पहुंचकर बैठक संपन्न करते हुए अपने-अपने विचार व्यक्त किया कार्यक्रम में मौजूद विशिष्ट बीटीसी शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष डॉ प्रशांत पाण्डेय ने पुरानी पेंशन बहाली को लेकर सरकार पर गहरा तंज कसा वही अपने उद्बोधन में शिक्षक ने पुरानी पेंशन बहाली के लिए निरंतर आंदोलन जारी रखने का जय घोष किया इसी प्रकार बैठक में उपस्थित पदाधिकारी अजय मिश्रा विजय कुमार त्रिपाठी नीरज तिवारी जयप्रकाश यादव ललितेश कुमार तिवारी लाल देवेंद्र प्रताप मनोज कुमार द्विवेदी समेत अन्य पदाधिकारियों ने भी अपने-अपने वक्तव्य प्रस्तुत किया वही वर्ष 2004 बैच के विशिष्ट बीटीसी शिक्षकों को सूची में शामिल न किए जाने पर शिक्षकों ने वर्तमान सरकार पर आक्रोश जताया शिक्षकों ने कहा यदि सरकार हमारी मांगे पूरी नहीं करती तो निश्चित रूप से सभी शिक्षक प्रदेश की कार्यकारिणी का नेतृत्व लेकर धरना प्रदर्शन में आमादा होंगे इस मौके पर शिक्षक शिवेश त्रिपाठी दिनेश सोनी अनिल उमराव शैलेंद्र सचान पंकज श्रीवास्तव ओम नारायण प्रजापति संतोष कुमार गुप्ता संदीप उत्तम महेंद्र कुमार मौर्य समेत लगभग डेढ़ सैकड़ा से अधिक शिक्षक मौजूद रहें

शार्ट सर्किट से आटो मोबाइल की दुकान में लगी आग, 40 लाख का सामान जला

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। गीडा सेक्टर 22 में स्थित आटो मोबाइल की दुकान में शार्ट सर्किट से आग लगने से करीब 40 लाख रुपए का नुकसान बताया जा रहा है। फायरबिग्रेड की मदद से आग पर काबू पाया जा सका। मिली जानकारी से गीडा थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत भपसा निवासी महेंद्र यादव जो गीडा सेक्टर 22 में कामना कंचन आटो मोबाइल के नाम से दुकान खोले हुए है। जहां पर ट्रक,बस, हाईबा, जेसीबी,पोकलैंड,टेलर,केंटेनर, सहित भारी वाहनों के पार्ट बेचे जाते है। रात्रि में दुकान बन्द कर मकान पर चले गए थे। रात्रि में 1 बजे के करीब शार्ट सर्किट से दुकान में भीषण आग लग गई। दुकान से आग की लपटे देखकर पड़ोस के लोगो ने फोन से जानकारी। मौके पर पहुंचे दुकान मालिक ने फायरबिग्रेड और पुलिस को सूचना दिए। मौके पर पर पहुंची फायरबिग्रेड की टीम ने करीब ढाई घंटे कड़ी मेहनत कर आग पर काबू पाया। इस दौरान ट्रक, बस, हाइबा, जेसीबी, पोकलैंड,टेलर, केंटेनर सहित भारी वाहन के पार्ट पुर्जे, के साथ छः ड्रम मोबिल,15 बाल्टी,मोबिल,15 बाल्टी ग्रीस,12 बाल्टी मोबिल,100 लीटर मोबिल,16 गत्ता मोबिल,20 बाल्टी मोबिल जल कर खाक हो गया है। तीन मंजिले तक की दिवारे और छत फट गए है। करीब 40 लाख से ऊपर का नुकसान बताया जा रहा है।

रामदूत अंगद का पांव भी नहीं हिला पाए रावण के सूरमा

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां तहसील अंतर्गत विकासखंड पिपरौली क्षेत्र स्थित ग्राम पंचायत खरैला में आदर्श रामलीला समिति के तत्वाधान ने चल रही रामलीला में सेतु निर्माण, रामेश्वरम की स्थापना व अंगद और रावण संवाद एवं लक्ष्मण शक्ति तक की लीला का मंचन किया गया।रामलीला में विभीषण अपने भाई रावण से अपमानित होकर श्रीराम की शरण में आता है

इसके बाद श्रीराम समुद्र के किनारे भगवान भोलेनाथ से विजय का आशीर्वाद लेने के लिए रामेश्वरम की स्थापना करते हैं इसके बाद भगवान ने समुद्र पर पुल बनवाया समुद्र पार कर भगवान की वानर सेना लंका जा पहुंची इसके पश्चात भगवान ने रावण के पास अपना दूत बनाकर अंगद को भेजा अंगद ने रावण को समझाया कि अपना भला चाहते हो तो माता सीता को लौटा कर भगवान की शरण में आ जाओ इस पर रावण क्रोधित हो जाता है तब अंगद ने रावण को अपना पैर हिलाने की चुनौती दी। अंगद रावण का परस्पर तीखा संवाद होता है रामलीला को देखने के लिए दर्शको की भारी भीड़ मौजूद रही।इससे पहले क्षेत्रीय विधायक प्रदीप शुक्ला ने राम लक्ष्मण की आरती उतारकर कर रामलीला की शुरूआत की।उन्होंने कहा कि राम के आदर्शो पर चलकर ही देश और समाज आगे बढ़ सकता है।इस दौरान संयोजक गौरव सिंह सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

भरत मिलाप के बाद श्रीराम के राज्याभिषेक से गदगद हुए नगर वासी

भारी सुरक्षा के बीच ऐतिहासिक भरत मिलाप सम्पन्न

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर।पिपराइच मुख्य बाजार में सदर सांसद रवि किशन शुक्ल ने कहा श्रीराम हमारे आदर्श है ।आज रामलीला के माध्यम से माता, पिता गुरु का आदर भाइयों का प्रेम ,त्याग व बलिदान देश के प्रति राजा का कर्त्तव्य का बोध कराया जा रहा है ।हमें मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के आदर्शो को अपनाने की प्रेरणा मिलती है। यह बातें उन्होंने रविवार सुबह पिपराइच मुख्य बाजार में भरत मिलाप समारोह में बतौर मुख्य अतिथि कहे। क्षेत्रीय विधायक महेंद्र पाल सिंह नें कहा आज हमें जाति धर्म पर बांटने के लिए गठबंधन का सहारा लेना पड़ रहा है। लेकिन एकता व सामंजस्य के बल पर बानरों की सेना नें समुद्र पर पुल बनाकर लंका पर चढ़ाई रावण जैसे प्रतापी राजा को पराजित किया ।तथा योगी व मोदी सरकार के विकास कार्यों को इसी संदर्भ से जोड़ा। इसके पूर्व शनिवार रात भारी सुरक्षा व्यवस्था के बीच रामलीला के मंचन में मयार्दा पुरूषोत्तम श्री राम भगवान मां सीता व भाई लखन लाल के साथ नगर में विशाल शोभायात्रा निकाली गयी। इस खुशी नगर वासियों सहित ग्रामीण क्षेत्र के दर्जन भर अखाड़ा कलाकारों ने अपने अपने कला का प्रदर्शन किया । अनेक मनमोहक झांकियां निकाली गई। रविवार सुबह मुख्य बाजार में श्रीराम व भरत मिलन देख जय श्री राम के जयघोष से सभी ऋराममय हो गये ।, इस अवसर पर पूर्व प्रमुख आनन्द शाही, दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री राधेश्याम सिंह,चेयरमैन संजय मद्धेशिया , रामलीला कमेटी अध्यक्ष डॉ्ङ उमाशंकर शर्मा,जीतेन्द्र जायसवाल , आदि ने राम दरबार की आरती उतारी ।तथा श्री राम जी के राज्याभिषेक हुआ है। तो खुशी में अयोध्या नगरी में धूम मच गयी।

आम आदमी पार्टी ने जिलाधिकारी कार्यालय घेरा

- कहा- अरविंद केजरीवाल की लोकप्रियता से घबरा रही भाजपा, ईडी से बनवा रही दबाव

संवाददाता

मेरठ, मेरठ में ईडी द्वारा दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल से पूछताछ करने के विरोध में कार्यकताओं ने जिला मुख्यालय का घेराव किया। उन्होंने ईडी का पुतला फूंकते हुए प्रदर्शन किया। इसके बाद कार्यकताओं ने राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन प्रशासनिक अधिकारी को सौंपा। आम आदमी पार्टी के जिला अध्यक्ष अंकुश चौधरी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आम आदमी पार्टी को खत्म करना चाहते हैं। यही कारण है कि एक के बाद एक झूठे केस बनाकर, बेबुनियाद आरोप लगाकर आम आदमी पार्टी के नेताओं को गिरफ्तार किया जा रहा है। ईडी का नोटिस अरविंद केजरीवाल के काम की राजनीति को रोकने की एक साजिश है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अरविंद केजरीवाल मॉडल आफ गवर्नेंस से घबराए हुए हैं। नरेंद्र मोदी 2014 में प्रधानमंत्री बने हैं, तबसे एक आदमी से वह सबसे ज्यादा परेशान हैं, सबसे ज्यादा डरते हैं, वह अरविंद केजरीवाल हैं। नरेंद्र मोदी को लगता था कि उनका अश्वमेध का रथ कोई नेता या पार्टी रोक सकती है तो उसका नाम आम आदमी पार्टी है। 2014 के चुनाव के बाद एक के बाद एक हर राज्य के चुनाव में भाजपा जीत रही थी तो फरवरी 2015 में प्रधानमंत्री की हर कोशिश के बावजूद अरविंद केजरीवाल ने भाजपा को मात्र तीन सीटों पर दिल्ली में समेट दिया।

विधायक प्रदीप ने घर घर जाकर नये वोटर्स बनने के लिए की अपील

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। सहजनवां विधानसभा के अंतर्गत घाघसरा व डोहरिया में वोटर चेतना विशेष महा अभियान के तहत बूथ संख्या 34, 35, 46, 65, 67, 71 पर फार्म 6 और 7 भरवाया कर जमा किया गया कार्यक्रम विधायक प्रदीप शुक्ला ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि लोकतंत्र के सबसे बड़े पर्व चुनाव में आप सभी मताधिकार का प्रयोग अवश्य करें। जो युवा जनवरी 2024 में 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहे हैं ।यह आवश्यक मतदाता बने इसके साथ ही जिन गलत लोगों का नाम वोटर लिस्ट में है उन्हें हटवाने का भी प्रयास करें विधायक ने विवाहित महिलाओं से अपील करते हुए कहा कि जो बहने विवाह के बाद अन्य जगह आई हैं और उनका नाम वोटर लिस्ट में नहीं है। वह अपना नाम फॉर्म भरकर अवश्य सूची में जुड़वा ले मतदाता आप सभी का अधिकार है इसका प्रयोग अवश्य करें विधायक ने कहा कि चुनाव आयोग 1 जनवरी 2024 में 18 वर्ष की आई पूरी करने वाले युवाओं को मतदाता बनाने के लिए 27 अक्टूबर से 11 दिसंबर के बीच विशेष अभियान चलाया जा रहा है आप सभी इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लें इस दौरान मंडल अध्यक्ष शिवचरन प्रसाद, दयाशंकर सिंह, शिवराम कृष्णा, ध्रुव सिंह शिवराम कुमार ,उमाशंकर पांडे ध्रुव कुमार गुप्ता रामनगर सिंह, संजय त्रिपाठी समेत कार्यकर्ता मौजूद है।

स्टूडेंट लेड कान्फ्रेस में छात्रों ने दिखाई शैक्षणिक प्रतिभा

अमन लेखनी समाचार

गोरखपुर। क्षेत्र के अभ्युदय पब्लिक स्कूल राजगढ रविवार को स्टूडेंट लेड कान्फ्रेस का आयोजन किया गया ।जिसमे कक्षा प्रथम से कक्षा आठ के छात्रों ने अपने अपने कक्षा से क्रमश हिन्दी अंग्रेजी गणित विज्ञान सामाजिक विज्ञान कम्प्यूटर जीके विषयों के माडल तैयार कर अपनी प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया।अभ्युदय पब्लिक स्कूल राजगढ़ गोरखपुर में छात्रों द्वाराअपने अपने कक्षा के अध्यापकआ अध्यापिकाओं के कुशल नेतृत्व में बच्चों ने विभिन्न मॉडल्स को सुरक्षितता के साथ प्रस्तुत करके अपने ज्ञान का प्रदर्शन किया।छात्रों को शिक्षा के माध्यम से विकास करने का एक उत्कृष्ट मौका प्रदान किया है। यह स्टूडेंट लेड कान्फ्रेस ने उन छात्रों को मंच पर लाने का मौका दिया जिन्होंने विभिन्न शिक्षा मॉडल्स को प्रस्तुत किया। आज के इस कार्यक्रम में छात्रों ने विज्ञान गणित सामाजिक विज्ञान और अन्य विषयों में अपने प्रदर्शन के माध्यम से अपनी साक्षरता को प्रदर्शित किया। छात्रों ने नहीं सिर्फ अपने ज्ञान का प्रदर्शन किया, बल्कि उन्होंने विभिन्न विषयों में अपनी महाराष्ट्रीयता और आत्म-विश्वास को भी प्रकट किया।संवाद सभा के प्रमुख अतिथि सीएचसी अधिक्षक अमरेन्द्र नाथ ठाकुर व विशिष्ट अतिथि अनिस कुमार सिंह हल्का इंचार्ज थाना गोला ने बच्चों की मेहनत और माडल प्रदर्शन कौशल की सराहना की और उन्हें अपनी उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता की शुभकामनाएं दी।

विद्यालय मे इस तरह के आयोजन से समृद्धि ज्ञान और कौशल को बढ़ावा मिलता है। इससे छात्रों मे आत्मविश्वास का विकास होता है। अभ्युदय पब्लिक स्कूल का प्रबंधन टीम छात्रों के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी छात्रों को बधाई और धन्यवाद देता है।इस स्टूडेंट लेड कांफ्रेंस के माध्यम से छात्रों ने अपने के क्षेत्र में उनके सामर्थ्य और आत्म कौशल को सुधारने का एक अद्वितीय अवसर प्राप्त किया है।

खास समाचार

समाधान दिवस पर दादी और पोते के द्वारा पट्टे की जमीन को लेकर आत्मदाह करने के प्रयास के मामले में एसडीएम, तहसीलदार ने विवादित भूमि का निरीक्षण किया

अमन लेखनी समाचार

न्यायालय के आदेश होने तक दोनों पक्ष नहीं करेंगे नया कार्य

गाजीपुर जिले के कासिमाबाद कोतवाली क्षेत्र के बहरामपुर निवासी दादी और उसके पोते द्वारा पट्टे की जमीन को लेकर आत्मदाह करने के प्रयास के मामले में शनिवार को एसडीएम, तहसीलदार और क्षेत्राधिकारी ने विवादित भूमि का निरीक्षण किया। दोनों पक्षों में न्यायालय से आदेश होने तक लिखित समझौता कर विवाद को समाप्त किया गया। यह निर्णय लिया गया कि दोनों पक्ष न्यायालय के आदेश होने तक उस जमीन पर नया निर्माण नहीं करेंगे। इससे पहले तहसील समाधान दिवस पर पीड़ित पक्ष एवं अधिकारियों के बीच बहस हो जाने से पीड़ित पक्ष को शांति भंग में पुलिस ने चालान कर दिया गया था। एसडीएम राजेश प्रसाद ने बताया कि कलावती देवी के पक्ष के साथ विपक्षी राम वचन यादव एवं अन्य के बीच लिखित रूप से समझौता कराया गया है। जब तक सिविल न्यायालय में दोनों पक्षों का मुकदमा चलेगा कोई भी पक्ष नया कार्य नहीं करेगा। इसके साथ ही यह तय हुआ कि दोनों पक्ष इस समझौते को न्यायालय के फैसले तक इंतजार करेंगे और विवाद नहीं करेंगे। इस दौरान क्षेत्राधिकारी बलराम, तहसीलदार जया सिंह, प्रभारी निरीक्षक महेंद्र सिंह यादव के साथ हल्का कानूनगो एवं लेखपाल प्रमुख रूप से मौके पर उपस्थित रहे।

अब नहीं है सोचना जन चेतना के जरिए निखरेगा चोपन का कोना - कोना

अमन लेखनी समाचार

चोपन/सोनभद्र। कहा जाता है भारत युवाओं का देश है और युवा किसी भी देश की तरक्की में बड़ा योगदान देते है। युवा अगर किसी कार्य को करने की ठान ले तो उस कार्य को पूरा करके ही दम लेते है। ऐसा ही एक नजराना देखने को मिला चोपन नगर में जहां के युवाओं ने नगर को गड्ढा मुक्त करने की ठानी और नारा दिया अब नहीं है सोचना जन चेतना के जरिए निखरेगा चोपन का कोना-कोना।

आपको बताते चलें कि चोपन नगर के कुछ युवाओं ने आपसी सहयोग से सेवा कार्य करने की योजना बनाई और इस योजना को अपने युवा साथियों के सामने रखा। जिसके बाद एक के बाद एक युवा सेवा कार्य में जुटता चला गया। चोपन नगर में कई ऐसी सड़के है व नालियां हैं जिनमे नए कार्य कराने के 6 महीने के भीतर भ्रष्टाचार की वजह से नालियों व सड़कों ने दम तोड़ दिया है। फिलहाल युवाओं ने सेवा कार्य के जरिए अभी तो नालियों पर ही फोकस किया है। आने वाले समय में नगर में सीसी रोड व खड़ंजे को दुरुस्त करते दिखेंगे। सेवा कार्य करते हुए युवाओं ने कहा कि, चोपन नगर पंचायत में भ्रष्टाचार चर्म पर है मानक के अनरूप कार्य न होने की वजह से नालियों को कवर करने वाली पटिया में बड़े-बड़े गड्ढे हो गए हैं। जिससे बराबर वदबू आती है और जानवर व मोटरसाइकिल सवार सहित अन्य लोग उसमे गिरकर घायल हो जाते है। साथ ही नालियों की वजह से उनमें खतरनाक मच्छर पैदा होते हैं और गंभीर बीमारियां फैलाते है। तमाम प्रकार की समस्या को नगर वासी जूझ रहे हैं। युवाओं का कहना है कि कई बार नगर पंचायत कार्यालय पर इस बाबत शिकायत भी की गई लेकिन समस्या को समाधान की कोई किरण नहीं दिखी। मजबूर होकर चोपन नगर को गड्ढा मुक्त करने का संकल्प लिया गया। नगर के गणमान्य लोगों से अपील करते हुए युवाओं ने कहा कि, नगर में कहीं भी गड्ढा युक्त नालियां मिलेंगी तो हमें बताने का कष्ट करें। हम सब आपसी सहयोग से उसे कार्य को तुरंत करवाएंगे और जिले क्या राज्य नगर पंचायतों में एक मिशाल बनाएंगे। आसपास की जनता युवाओं की सोच के आगे नतमस्तक होकर उनकी तारीफ करते नहीं थक रहे। युवाओं की माने तो हर मोहल्ले व वार्ड वाले सिर्फ अपने गली और आसपास की नालियों की जिम्मेदारी स्वयं ले लें तो पूरा नगर गड्ढा मुक्त हो जाएगा यही असली नर सेवा और नारायण सेवा होगी। राज्य सरकार सभी नगर पंचायतों को अच्छा खासा फंड उपलब्ध कराती है नगर के विकास के लिए। लेकिन चंद पैसों की लालच में आकर कार्यदायी संस्था मानक के अनरूप कार्य नहीं करती और इसमे शायद जिम्मेदार अधिकारियों की भी पूरी हामी होती है। अधिकारियों को भी होगा सोचना कैसे चमकेगा नगर का कोना कोना।

अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय के अध्यक्षता में पुलिस लाइन, चुर्क में समस्त थानों के पैरोकारों की की गयी मीटिंग

अमन लेखनी समाचार

सोनभद्र। पुलिस महानिदेशक के निदेर्शों के अनुपालन में चलाये जा रहे अभियान ऑपरेशन कान्विक्शन के तहत आज दिनांक 05.11.2023 को अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) सोनभद्र कालू सिंह द्वारा पुलिस लाइन चुर्क, सभागार कक्ष में जनपद के समस्त थानों के पैरोकारों के साथ मीटिंग की गयी अपर पुलिस अधीक्षक द्वारा बताया गया कि पैरोकार न्यायालय व थाना के बीच सामंजस्य बनाये रखने के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी है तथा मीटिंग के दौरान उपस्थित सभी पैरोकारों को न्यायालय मे समय से पहुंचकर माननीय न्यायालय के आदेशों-निदेशों का अनुपालन कराने व विचाराधीन मुकदमों मे समय से गवाहों के लिए सम्मन/वारण्ट भेजने और तामीलशुदा सम्मन/वारण्ट को न्यायालय में समय से प्रस्तुत करने, महत्वपूर्ण मुकदमों जैसे-हत्या, पॉक्सों एक्ट या महिला सम्बन्धित मुकदमों में पैरवी कर गवाहों को पेश करने व अधिक से अधिक मुकदमों में अभियुक्तों को सजा दिलाने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

दो दिवसीय राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का समापन

अमन लेखनी समाचार

गाजीपुर के विशुनपुरदत्ता लावा खेल मैदान में महावीर क्लब के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का समापन हुआ। जिसके फाइनल मुकाबले में नोएडा ने वाराणसी को 37-22 से पराजित कर प्रतियोगिता जीत लिया ।मुख्य अतिथि समाजसेवी विवेकानंद पांडेय ने विजेता एवं उप को शील्ड देकर सम्मानित किया। इस प्रतियोगिता में अच्छा प्रदर्शन कर ने नोएडा टीम के प्रमोद कुमार को मैन ऑफ द मैच एवं सीरीज का पुरस्कार दिया गया। इस कबड्डी राज्य अनेक जिले आये कबड्डी प्रतिभागी ने भाग लिया। जो कि वाराणसी गाजीपुर मऊ आदि जिले के ने भाग लिया जिसमें नोएडा और वाराणसी मुख्य फाइनल इन दोनों टीमों के साथ हुआ जिसमें नोएडा प्रथम विजेता घोषित हुई और वाराणसी उपविजेता के रूप में घोषित हुआ और दोनों टीमों को उपहार देकर समाजसेवी विवेकानंद पांडे जी के द्वारा कबड्डी संचालक ने उनके हाथों से पुरस्कार वितरण कराया जिसमें अनेक लोग उपस्थित थे इस दौरान सुनील तिवारी अनूप तिवारी मंटू सिंह सुजीत रवि अनमोल अमित यादव योगी हर सिंह अनिल मिश्रा सुनील मिश्रा आदि गांव वासी उपस्थित थे

मिशन शक्ति अभियान फेज-4 के तहत बालिकाओं/छात्राओं एवं महिलाओं को महिला सुरक्षा एवं महिला सशक्तिकरण के बारे में किया गया जागरूक

अमन लेखनी समाचार

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह के निर्देशन में आज दिनांक 05.11.2023 को मिशन शक्ति अभियान फेज 4 के दृष्टिगत महिलाओं/बालिकाओं के साथ घटित होने वाले अपराधों एवं उनके उत्पीड़न की रोकथाम हेतु जनपद के समस्त थानों पर गठित एन्टीरोमियो टीम/शक्ति दीदी द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्रों के बस अड्डा/सार्वजनिक स्थानों/प्रमुख चौराहों/कस्बों/प्रमुख बाजारों/स्कूल/कॉलेजों/शापिंग मॉल आदि के आस-पास गश्त/चेकिंग करते हुए महिलाओं व बालिकाओं को आत्मसुरक्षा के लिये जागरुक किया जा रहा तथा उनकी सुरक्षा के सम्बंध में वार्ता कर उन्हें आवश्यक जानकारी दी जा रही है तथा विभिन्न हेल्पलाइन नम्बर जैसे वीमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एम्बुलेंस सेवा 108 व साइबर हेल्पलाइन 1930 तथा थानों के सीयूजी नम्बर, जनकल्याणकारी योजनाओं के सम्बंध में विस्तृत जानकारी प्रदान कर जागरुकता पम्पलेट वितरित करते हुए किसी भी तरह की अप्रिय घटना अथवा संदिग्ध व्यक्ति के बारे में संदेह होने पर उक्त नंबर या तत्काल थाना पुलिस को सूचित करने के सम्बंध में जागरूक किया जा रहा है।

प्रभु जी आए हैं मेरे नाव पर सब देखना

राम केवट संवाद का मंचन देख हुए विभोर

श्री विंध्य प्राचीन रामलीला कमेटी का आयोजन

रामलीला के पांचवे दिवस उमड़ी भारी भीड़

अमन लेखनी समाचार

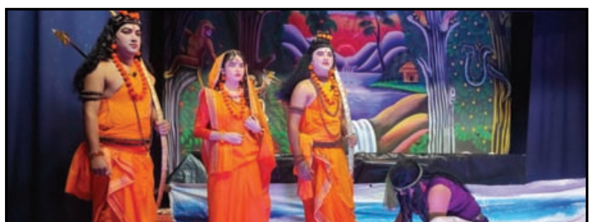

विंध्याचल । आठ दिवसीय रामलीला के पांचवे दिवस भावपूर्ण मंचन देखने को दर्शकों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी शनिवार की शाम को श्री राम और केवट संवाद प्रसंग का मनोहारी मंचन देखकर दर्शक भाव विभोर हो गए इसी क्रम में सीता हरण सहित जटायु मारीच वध का मंचन किया गया श्रीराम के जयघोष से पंडाल गुंजायमान हो रहा था श्री विंध्य प्राचीन रामलीला समिति की ओर से मोती झील मार्ग पर स्थित भंडारा स्थल प्रांगण में रामलीला का मंचन देखने देर रात तक दर्शक डटे रहे कलाकारों ने श्री राम व केवट संवाद प्रसंग का मनोहारी मंचन कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया रामलीला के क्रम में भगवान श्रीराम सरयू नदी के किनारे खड़े केवट से नदी पार करने के लिए नाव में बिठाने का आग्रह करने लगे प्रभु श्री राम ने कहा कि हमें नदी पार करा दो और आगे जाने दो इस पर केवट प्रभु राम के पास आया और बोला कि आप कौन हैं कहां से आए हैं और कहां जा रहे हैं अपना परिचय दीजिए तब प्रभु श्री राम ने केवट को अपना परिचय दिया तो केवट वहां से भाग कर कुछ दूर जाकर खड़ा हो गया और कहा कि आप वही राम है जिनके छूते ही पत्थर की शिला आसमान में उड़ गई मेरी नाव तो लकड़ी की है वह तो छूमंतर हो जाएगी मैं ऐसे अपने परिवार का पालन पोषण कैसे करूंगा मैं आपको नदी पार नहीं करा सकता इस पर प्रभु श्रीराम ने कहां की केवट ऐसा कोई उपाय है जिससे तू हमें नदी पार करा दो तो केवट ने कहा कि हां पहले आप चरण धूल भाव प्रभु के चरण धोने के बाद केवट ने राम को नदी पार कराई नदी के बीच नाउ हिचकोले लेने लगी तो केवट ने गीत गाया प्रभु जी आए हैं मेरे नाव पर सभी लोग देखना गीत गाया नदी पार कराने के बाद प्रभु श्री राम ने सीता के अंगूठी केवट को नाव उतराई दी केवट कहने लगा कि हे प्रभु आप यह क्या कर रहे हैं और नाव उतराई लेने से इनकार कर दिया केवट ने कहा कि मैं आपको बताता हूं मेरा घर तो यहां पर है और आपका बैकुंठधाम है जब मैं आपके धाम आओ तो मुझे पार लगा देना इतना सुनकर केवट को प्रभु श्री राम ने अपने गले से लगा लिया इसके पूर्व रामलीला का शुभारंभ मुख्य अतिथि विंध्याचल थाना प्रभारी अरविंद मिश्रा ने प्रभु श्री राम लक्ष्मण और माता जानकी की पूजन अर्चन भव्य आरती कर किया। श्री राम की भूमिका में कमल मिश्रा, लक्ष्मण का किरदार देवी दीक्षित, रावण की भूमिका में प्रशांत द्विवेदी मन्त्री की भूमिका में मुन्ना बाबू मिश्रा, सीता की भूमिका पूजा वर्मा, केवट की भूमिका में रजत द्विवेदी व्यास की भूमिका में गोपी मिश्रा ने निभाई, लीला मंचन के साथ ढोलक पर रंग नाथ, आगर्न पर राम प्रसाद, शहनाई पर तौलन प्रसाद ने रामलीला मंचन के दौरान कुशल संगत किया। मंच का संचालन कार्यक्रम संयोजक आदर्श उपाध्याय ने किया कार्यक्रम को सफल बनाने में कमेटी के संरक्षक प्रकाश चन्द्र, अध्यक्ष संगम लाल त्रिपाठी, मंत्री इंद्र प्रसाद मिश्र निर्देशक प्रशांत द्विवेदी, उपाध्यक्ष पशुपतिनाथ मिश्रा, उपाध्यक्ष रामेश्वर त्रिपाठी, कोषाध्यक्ष विक्रम मिश्रा निशु व रवि प्रकाश मिश्रा, निरीक्षण लव दूबे, मीडिया प्रभारी संतोष कुमार तथा समिति के प्रमुख रूप से देवी दीक्षित, प्रिंस मिश्रा, शिखर गिरी, मनोज शर्मा, मुकेश मिश्रा, गिरजेश द्विवेदी, त्रिलोकी उपाध्याय अमन सिंह पटेल, दिनेश सोनी, शिवबली राजपूत, उन्नत पांडेय, उत्सव पांडेय, आयुष गोस्वामी, राम चरण, सहित समिति के पदाधिकारी एवं सदस्य सहित पुलिस बल सुरक्षा व्यवस्था में जवान तैनात रहे। एवं सदस्यगण ने अपनी अपनी अहम भूमिका निभाई।

नये सिरे से चुस्त दुरुस्त होगा चोपन उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल

नये चुनाव से पहले शुरू हुआ सदस्यता अभियान

30 नवम्बर तक बन सकेंगे सदस्य और 20 दिसम्बर को होगा नया चुनाव

चोपन, सोनभद्र। प्रदेश के सबसे बड़े व्यापारी संगठनों में शुमार उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल की स्थानीय इकाई चोपन उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल को एक बार फिर धार देने की कवायद शुरू कर दी गई है। करौना काल से उपजी परिस्थितियों के बीच नगर में सुस्त हो चले संगठन को सक्रिय एवं सुदृढ़ बनाने हेतु वर्ष 2024-2025 की सदस्यता हेतु सदस्यता अभियान शुरू किया गया है जिसका शुभारंभ रविवार को पत्रक एवं सदस्यता आवेदन फार्म के वितरण के साथ किया गया। 30 नवम्बर 2023 तक नये सदस्य बनाये जायेंगे और 20 दिसम्बर को वरिष्ठ जनपदीय पदाधिकारियों की उपस्थिति एवं देखरेख में आगामी दो वर्षों 2024-2025 हेतु नया चुनाव उपस्थित सदस्यों के बीच किया जायेगा। इस संदर्भ में चोपन उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल के अध्यक्ष संजय जैन एवं महामंत्री अजय भाटिया ने बताया कि वरिष्ठ पदाधिकारियों से विचार विमर्श के बाद नये सदस्यता अभियान/चुनाव की कार्ययोजना बनाई गई है।पूर्व के वर्षों से इस वर्ष 2023 तक की सदस्यता शुल्क को शून्य कर दिया गया है। सदस्यता ग्रहण करने के इच्छुक व्यापारी सदस्यों को नया सदस्यता फार्म भरकर निर्धारित शुल्क के साथ दिनाक 5नवम्बर से 30 नवम्बर 2023 तक जमा करना होगा। नगर के समस्त व्यापारी बंधुओं से संगठन से जुड़कर सक्रिय सहभागिता करने की अपील की गई है।

स्वीप कार्यक्रम के तहत दिव्यांगजन व्हीलचेयर क्रिकेट प्रतियोगिता आयोजित

मुख्य विकास अधिकारी द्वारा प्रतिभागियों को वितरित किया गया प्रमाण पत्र

अमन लेखनी समाचार

मीरजापुर - स्वीप कार्यक्रम के अंतर्गत राजकीय इंटर कॉलेज मीरजापुर के प्रांगण में दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग एवं जिला प्रशासन के सौजन्य से दिव्यांगजन व्हीलचेयर क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। मुख्य विकास अधिकारी/ प्रभारी अधिकारी स्वीप श्रीलक्ष्मी वीएस ने 18 वर्ष अथवा 18 वर्ष से अधिक के दिव्यांगजन एवं अन्य सभी मतदाता जिनका वोटर आई डी कार्ड अभी तक नहीं बना है वह अपने बी.एल.ओ. अथवा तहसील से सम्पर्क कर अपना वोटर कार्ड बनवाकर लोकतंत्र को मजबूत बनाने का कार्य करें । यह आपका संवैधानिक अधिकार व साथ ही आप का कर्तव्य भी है। प्रत्येक मतदाता के मतदान करने से लोकतन्त्र मजबूत होता है। अतएव आप से अपील है कि लोकतन्त्र के इस महापर्व में अपना योगदान अनिवार्य रूप से प्रदान करें। ताज विकलांग सेवा समिति की टीम, किंग आफ मिजार्पुर एवं मां वैष्णवी फाउंडेशन कछवां की टीम दिव्य शक्ति द्वारा प्रतिभाग किया गया। पहली पाली में किंग आफ मीरजापुर की टीम खेलते हुए 108 रन लक्ष्य रखा, वही पर दूसरी टीम दिव्य शक्ति निर्धारित ओवरों में 88 रन ही बना पाई। मैच का उद्घाटन ज्वाइंट मजिस्ट्रेट के कर कमलों द्वारा हुआ। मैच समापन के उपरांत पुरस्कार वितरण मुख्य विकास अधिकारी/ प्रभारी अधिकारी स्वीप श्रीलक्ष्मी वीएस के कर कमलों द्वारा किया गया। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा अपने संबोधन में मतदाता को अपने मतदान से संबंधित कर्तव्यों के निर्वहन से संबंधित महत्वपूर्ण संदेश दिया गया। कार्यक्रम में जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, विभागीय कर्मचारियों, मीडिया कर्मी, एवं संस्थाओं के साथ तमाम दर्शक गण उपस्थित रहे।

अनपरा पुलिस द्वारा 1 किलो 400 ग्राम नाजायज गाँजे के साथ 1 अभियुक्त को किया गया गिरफ्तार

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक डॉ0 यशवीर सिंह के निर्देशन मे मादक पदार्थों के विक्री एवं विक्री करने वाले तस्करों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम मे अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय व क्षेत्राधिकारी पिपरी के निकट पर्यवेक्षण में थाना अनपरा पुलिस द्वारा आज दिनांक 05.11.2023 को अभियुक्त बसंत लाल बैसवार पुत्र स्व0 लच्छनधारी बैसवार, निवासी पूर्वी परासी वार्ड नं0 07, थाना अनपरा, जनपद सोनभद्र को समय लगभग 13.30 बजे पंचायत भवन के पास पूर्वी परासी से 1 किलो 400 ग्राम नाजायज गाँजा बरामद कर गिरफ्तार किया गया । उक्त बरामदगी/गिरफ्तारी के सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मु0अ0सं0 198/2023 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही की गयी।

छठ घाट एवं बाबा भूतेश्वर दरबार मंदिर में साफ सफाई अभियान चलाया गया

अमन लेखनी समाचार

सोनभद्र।ओबरा नगर के बाबा भूतेश्वर दरबार मंदिर प्रांगण में आज स्वच्छता पखवाड़ा के तहत मंदिर परिसर की समिति कार्यकताओं द्वारा साफ सफाई अभियान चलाया गया जिसमें मंदिर के सभी कार्यकर्ता उपस्थित होकर श्रम योगदान देकर स्वच्छता मिशन अभियान चलाया। वही छठ पर्व को लेकर वार्ड 4 के सभासद संजय कनौजिया जी द्वारा नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि श्रवन पासवान की देखरेख में नगर पंचायत के सफाई कर्मियों द्वारा छठ घाट पर सफाई का कार्य जोरों शोरों पर चलाया गया। सफाई कार्यक्रम के आयोजन में बाबा भूतेश्वर दरबार महारुद्र सेवा समिति के अध्यक्ष विकास कुमार तिवारी, नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि श्रवण पासवान, महारुद्र सेवा समिति के कोषाध्यक्ष अजीत कुमार सिंह, नवाज खान, निखिल तिवारी, सत्येंद्र सिंह, मनोज सिंह, सुशील सफाई नायक, मनोज सफाई नायक इत्यादि मंदिर के कार्यकर्ता एवं नगर पंचायत के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पुरानी-पेंशन बहाली को लेकर राज्य कर्मचारियों ने निकाली शंखनाद रैली

गाजीपुर जिले में राज्य कर्मचारी संयुक्त रैली निकाल कर जिला मुख्यालय पर किया प्रदर्शन, सफाई कर्मी भी रहे शामिल ।पुरानी पेंशन बहाली संयुक्त मोर्चा के बैनर तले पुरानी पेंशन बहाली को लेकर शिक्षक, कर्मचारियों एवं पंचायती राज विभाग के अधीन कार्यरत समस्त ग्रामीण सफाई कर्मचारियों द्वारा शंखनाद रैली निकली गई। जो विकास भवन से कलेक्ट्रेट कचहरी तक गई ।इस दौरान सफाई कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष और पुरानी पेंशन को बहाली को लेकर एक साथ प्रदर्शन किया। जो विकास भवन से कचहरी तक ग ई। पुरानी पेंशन बहाली के लिए संयुक्त मोर्चा अध्यक्ष रोशन लाल ने कहा कि भारत सरकार की नौकरी में 1 जनवरी 2004 से शिक्षकों कर्मचारियों अधिकारियों को दी जाने वाली सामाजिक सुरक्षा यानी पुरानी पेंशन व्यवस्था को समाप्त कर शेयर बाजार पर आधारित नवीन पेंशन व्यवस्था एमपीएस लागू कर दी गई है जो 900 कर्मचारियों के खेत में है ना उद्योग प्रदेश के प्रदेश के हित में है जिला के अंदर बालविंदर त्रिपाठी नेता ने कहा (एमटीएस)कर्मचारियों के साथ सरकार क्या पैसा प्राइवेट कंपनियों के पास जा रहा है जिसे कोई गारंटी नहीं है। जो कि समय से उनको प्राप्त हो सके।

मेघनाथ ने लक्ष्मण को किया ब्रह्मशक्ति से मूर्छित

हनुमान जी ने लाया संजीवनी बूटी, कुंभकरण का प्रभु श्री राम ने किया वध

अमन लेखनी समाचार

मीरजापुर। पड़री थाना क्षेत्र के पैड़ापुर चौकी अंतर्गत धरमदेवां गांव में शनिवार को मंच के माध्यम से बड़ा ही मनोरम व मनोहारी दृश्य रामलीला में कलाकारों ने प्रस्तुत किया। जिसे देखकर दूर दूर से आए हजारों की संख्या में उपस्थित दर्शक मंत्र मुग्ध हो गए। रामलीला के आरंभ में प्रभु श्री राम लंका पर चढ़ाई के लिए सभी सेनाओं को अलग-अलग दिशा में भेज दिए। यह समाचार जब रावण को पता चला तो अपने महाभटों आदि निशाचरों को भेजता है। सभी बंदरों से भयभीत होकर रावण के पास पहुंचते हैं। इसके बाद रावण अपने लड़के मेघनाथ से युद्ध करने के लिए कहा। जिस पर मेघनाथ ने अपनी पत्नी सुलोचना से मिलकर राम दरबार में जाकर सबको युद्ध करने के लिए ललकारते हैं। जिसके बाद लक्ष्मण ने राम से आज्ञा लेकर मेघनाथ से युद्ध करने के लिए गए। जहां मेघनाथ लक्ष्मण का काफी देर तक संवाद हुआ। इसके बाद मेघनाथ ने ब्रह्मशक्ति बाण मारकर लक्ष्मण को मूर्छित कर दिए। यह समाचार पाकर राम काफी दुखी हुए। तभी हनुमान जी लक्ष्मण जी को लेकर राम जी के पास आ गए। लक्ष्मण जी की हालत देखकर राम जी करुण विलाप करने लगे। जिसे देख दर्शकों की आंखें नम हो गई। तब हनुमान जी लंका जाकर वैद्यजी को उनके मकान के साथ उठा लाते हैं। वैद्य जी ने कहा कि द्रोणागिरी पर्वत पर संजीवनी बूटी है। यदि कोई रात ही में इसे ला देगा, तभी लखन जी बच पाएंगे। इसके बाद संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान जी गए। उन्हें बूटी पर्वत पर नहीं समझ में आया तो वह पूरा पहाड़ ही उठा कर लेकर जा रहे थे। जिसे भरत जी ने देखकर अपने बाणों से घायल कर दिए। इसके बाद जब भरत तथा हनुमान जी का वातार्लाप होता है। तब भरत विलाप करने लगते हैं तथा अपने बाण पर हनुमान जी को बैठकर श्रीराम प्रभु जी के पास जाने के लिए कहते हैं तो हनुमान जी ने कहा कि मैं शीघ्र ही पहुंच जाऊंगा। आप मुझे आज्ञा दीजिए। आज्ञा लेकर हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर रामादल में पहुंचते हैं। इसके बाद वैद्य जी ने लक्ष्मण जी को जीवित कर दिया गया?। इस दृश्य को देख दर्शकों के तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा पंडाल गूंजायमान हो उठा। इस खबर को रावण पाया तो वह अपने भाई कुंभकरण के पास गया। जहां कुंभकरण तथा रावण की वार्ता के बाद कुंभकरण राम से लड़ाई लड़ने के लिए चल देता है। जिसका प्रभु श्री रामचंद्र जी के द्वारा वध कर दिया गया। इसी पर लीला का समापन हुआ तथा अगले दिन रविवार को मेघनाथ वध, अहिरावण वध तथा रावण वध का मंचन किया जाएगा। यह जानकारी रामलीला समिति के अध्यक्ष श्यामकांत द्विवेदी ने दिया। जहां रामलीला के डायरेक्टर ओम प्रकाश दूबे मौजूद रहे। वहीं अपनी मुखारबिंदु से व्यास गद्दी पर बैठे दूरदर्शन कलाकार मोहम्मद इस्लाम तथा उनका सह दे रहे नाल वादक विजय कुमार विश्वकर्मा व प्यारेलाल ने अपने कलाओं की जादू बिखेरा। वहीं रामलीला में डांसर रमेश उर्फ बिजुली रानी ने बीच-बीच में अपने नृत्य कला से दर्शकों का मन मोह लिया। रामलीला के कलाकारों में हेमंत मिश्रा, पीतांबर मिश्रा, रामानंद मिश्रा, विभव उर्फ कान्हा द्विवेदी, विनय मिश्रा, संतोष भारती, मोहम्मद दिल्लूलाल, चुन्नीलाल आदि ने रामलीला का मंचन किया। वहीं सोमवार को भारत मिलाप तथा मेले का आयोजन किया जाएगा, यह जानकारी रामलीला समिति के अध्यक्ष श्यामाकांत द्विवेदी ने दिया। वहीं सुरक्षा के मद्देनजर स्थानीय पुलिस मौजूद रही।

सिसौदिया बने विद्युत उपभोक्ता फार्म के सदस्य

अमन लेखनी समाचार/हेमन्त यादव

गरौठा, झांसी। अध्यक्ष उत्तर प्रदेश पावर कार्पोरेशन लिमिटेड लखनऊ एवं प्रबंधन निदेशक दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम लिमिटेड आगरा के निर्देशन के अनुपालन में सीङ्गजीआरङ्गएफङ्ग उपखण्ड स्तर पर विधुत उपभोक्ता फार्म का प्रोज्यूमर नामित सदस्य गोविन्द सिंह सिसौदिया पार्षद गुरसराय को वनाया गया है ।जिस पर क्षेत्र वासियों ने खुशी जाहिर की और मिठाई खिलाकर व फूल माला पहनाकर स्वागत किया। लोगों का कहना है कि सिसोदिया हमेशा समाजिक कार्यों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेते रहते हैं।

अमन लेखनी (हिन्दी दैनिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती अखिलेश सिंह द्वारा अवध एक्सप्रेस प्रकाशन, 434, सिविल लाइन, जेल रोड, उन्नाव, उत्तर प्रदेश से मुद्रित और ग्राम व पोस्ट-बनी, थाना- बन्थरा, लखनऊ-226401 (उ.प्र.) से प्रकाशित।

सम्पादक– श्रीमती अखिलेश सिंह

समाचार सम्पादक – रुद्र प्रताप सिंह

समाचार से संबंधित सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र लखनऊ होगा।

मो. – 9838159555, 9935457982

E-mail address amanlekhaninews@gmail.com

बस्तर, छत्तीसगढ़

रूरल टूरिज्म / नीलम शुक्ला

वैसे अपने देश में घूमने और देखने लायक अनेक पर्यटन स्थल मौजूद हैं। लेकिन अगर आप इनसे कुछ अलग हटकर ग्रामीण जीवनशैली और संस्कृति को देखना-समझना चाहते हैं, ग्राम्यजीवन का आनंद लेना चाहते हैं तो देश के कुछ खास इलाकों का रुख कर सकते हैं। ऐसे ही कुछ प्रसिद्ध स्थलों के बारे में जानिए।

यहां ले सकते हैं आप ग्राम्यजीवन-संस्कृति का आनंद

बीते कुछ वर्षों से रूरल टूरिज्म यानी ग्रामीण पर्यटन का क्रेज लगातार बढ़ रहा है। चाहे पंजाब हो या गुजरात, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश और गोवा का ग्रामीण परिवेश या फिर राजस्थान, केरल, पंजाब, बंगाल और सिक्किम के अंदरूनी गांव, आज तहे दिल से पर्यटकों का पथ निहार रहे हैं। टूरिज्म एजवाइजर बृजेश राठौर कहते हैं, 'आधुनिकता की भाग-दौड़ के बीच हमारे गांव, वहां के खेत-खलिहान काफी पीछे छूट गए हैं। अपनी जड़ों को छोड़ चुके लोग आज गांव की सोंधी महक की तलाश में पहुंच रहे हैं, देश के ऐसे ग्रामीण इलाकों में, जहां उनको सुकून मिल सके। भारत का पर्यटन विभाग भी इस बात से वाकिफ है। यही कारण है कि पर्यटन के इन नए-नए क्षेत्रों के विकास के कारण यहां आने वाले विदेशी मेहमानों की संख्या में दिन पर दिन बढ़ोतरी जारी है।'

छत्तीसगढ़ी ग्राम्यजीवन की झलक बस्तर

छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में आपको ग्रामीण जीवन की झलक मिलेगी। वाल्मीकि के महाकाव्य रामायण में इस क्षेत्र का उल्लेख है। यहां स्थित चित्रकूट झरना, जिसे भारत के नियाग्रा के नाम से जाना जाता है। यहां की नगर पालिका जगदलपुर का भी ऐतिहासिक महत्व है। यहां आपको शानदार झरने, पर्वत, घाटियां, जंगली हरियाली, गुफाएं और धाराएं इस जनजातीय क्षेत्र को और भी मोहक बनाती हैं। यहां की लोक कला, हस्तशिल्प, गोन्चा के त्यौहार और राउत नाचा नामक पारंपरिक जनजातीय नृत्य आपका मन मोह लेंगे।

कब जाएं : इस जगह पर जाने का सबसे अच्छा समय अक्टूबर से मार्च के बीच का होता है।

कैसे जाएं : बस्तर से निकटतम हवाई अड्डा और रेलवे स्टेशन रायपुर है, जो जगदलपुर से 300 किलोमीटर दूर स्थित है।

कुंबलंगी गांव, केरल

खूबसूरत द्वीपीय गांव कुंबलंगी

अगर आपको ग्रामीण भारत के मछली उद्योग की झलक देखनी हैं तो दक्षिण भारतीय राज्य केरल के कोच्चि में स्थित एक छोटे और खूबसूरत द्वीपीय गांव कुंबलंगी जाना चाहिए। यहां आप स्थानीय व्यंजनों का मजा लेने के साथ ही गांव के हरे-भरे धान के खेतों में घूमने का आनंद भी ले सकते हैं।

कब जाएं : आप किसी भी मौसम में इस जगह जा सकते हैं।

कैसे जाएं : कुंबलंगी से निकटतम रेलवे स्टेशन लगभग 25 किलोमीटर दूर एर्नाकुलम में है। कोचीन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा यहां से लगभग 46 किलोमीटर दूर है।

गुजराती संस्कृति दिखाता होदका

गुजराती संस्कृति की झलक देखने के लिए आपको कच्छ में होदका गांव का रुख करना होगा। होदका में शाम-ए-सरहद नामक एक रिजॉर्ट भी है, जो गांव में मिट्टी से बने घरों की तरह दिखता है। गुजरात के कच्छ इलाके में भुज के निकट स्थित यह गांव पर्यटकों को खूब लुभाता है। यहां पर्यटन को बढ़ावा देने में स्थानीय समुदाय ने भी अहम भागीदारी निभाई है। मिट्टी से बने घर यहां पर्यटकों को विशेष रूप से आकर्षित करते है। घूमने लायक यहां और भी बहुत कुछ है। कच्छ के रन में रेगिस्तानी सफारी का लुत्फ उठाया जा सकता है। इसके अलावा यहां प्रवासी पक्षियों को भी निहारा जा सकता है। पर्यटकों को होदका के विलेज रिजॉर्ट में स्थानीय लोगों के साथ रहने का मौका मिलता है।

शाम-ए-सरहद रिजॉर्ट, गुजरात

कब जाएं : अक्टूबर से मार्च तक यहां जाना बेस्ट है।

कैसे जाएं : यह गांव गुजरात के शहर भुज से 63 किलोमीटर दूर है। भुज तक वायुमार्ग या रेल मार्ग से पहुंचकर यहां से टैक्सी ली जा सकती है।

भूटिया संस्कृति का केंद्र सामथर

पश्चिम बंगाल में कलिमपोंग के गांव सामथर में पर्यटक भूटिया और लेपचा समुदायों की संस्कृति को करीब से देख और जान सकते हैं। यहां भूटिया, लेपचा और अन्य स्थानीय ग्रामीणों के घरों में पर्यटकों के ठहरने की व्यवस्था है। पश्चिम बंगाल के सामथर को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने में अहम भूमिका निभाने का श्रेय सेवानिवृत्त जनरल जिमी सिंह को जाता है। जिमी सिंह सामथर के ग्रामीणों को घर बैठे रोजगार दिलाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने सामथर को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया।

कब जाएं : मार्च से जून और सितंबर से दिसंबर सबसे सही समय है।

कैसे जाएं : कलिमपोंग से सबसे करीबी एयरपोर्ट बागडोगरा और करीबी रेल स्टेशन सिलिगुड़ी है। *

क्या है रूरल टूरिज्म

भारत ही नहीं विश्व भर में रूरल टूरिज्म यानी ग्रामीण परिवेश को देखने, वहां समय बिताने को लेकर आजकल देशी और विदेशी पर्यटकों में रुचि बढ़ने लगी है। ग्रामीण पर्यटन के अंतर्गत लोग ग्रामीणों के बीच गांवों में रहकर उनके जीवन का आनंद ले सकते हैं। उनकी संस्कृति और जीवनशैली को जान-समझ सकते हैं। इसे बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार का पर्यटन मंत्रालय और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम इसमें सहायता भी करते हैं। पर्यटन मंत्रालय के अलावा पर्यटकों के गांव में रहने के सपने को पूरा करने में मदद करने का बीड़ा कई गैर सरकारी संगठनों ने भी उठाया है। *

आकाश में भी होती है रंग-बिरंगी आतिशबाजी

दीपावली के मौके पर देश भर में आतिशबाजी की जाती है। लेकिन क्या आप जानते हैं आकाश में भी निश्चित समयांतराल पर धूमकेतु भी रंग-बिरंगी आतिशबाजी करते हैं?

खगोलीय घटना / शिखर चंद जैन

हर वर्ष दिवाली पर आतिशबाजी से आसमान रंग-बिरंगा नजर आता है। लेकिन इस बार 5 नवंबर से 12 नवंबर (यानी आज से दीपावली तक) तक आधी रात में पूर्वोत्तर दिशा के आकाश में आतिशबाजी नजर आएगी। खगोल वैज्ञानिकों के मुताबिक इस अवधि में आसमान में उल्कापिंडों की जगमगाहट देखी जा सकती है।

क्यों दिखती है आतिशबाजी: अंतरिक्ष में हमारे सौरमंडल के ग्रहों के बीच पत्थर और लोहे के असंख्य पिंड मौजूद होते हैं। ऐसा कोई कण या पिंड जब पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में आने पर तीव्र वेग से वायुमंडलीय घर्षण के कारण रात के समय आकाश में चमकता है तो ऐसा महसूस होता है, मानो कोई तारा टूटकर गिर रहा हो। इसी को उल्का पिंड या धूमकेतु कहते हैं। यानी जिन्हें हम टूटा तारा समझते हैं, वे असल में छोटे आकाशीय पिंड होते हैं। आकाश में उल्का पिंडों की आतिशबाजी का नजारा पहले भी कई बार देखा गया है। इनमें से कुछ के बारे में जानिए।

निशिमुरा धूमकेतु : अभी दो माह पहले अगस्त में निशिमुरा नामक हरे रंग के धूमकेतु को आसमान में देखा गया था। यह 12 सितंबर को पृथ्वी के सबसे नजदीकी छोर पर आया था। इस धूमकेतु को खोज जापानी खगोलविज्ञानी हिदेयो निशिमुरा ने की थी। उन्हीं के नाम पर धूमकेतु का नाम रखा गया। हमारे ग्रह के आस-पास परिक्रमा करते हुए यह सौरमंडल में विलीन हो गया। अब इसे दोबारा 400 साल बाद ही देखा जा सकेगा।

ग्रीन धूमकेतु : ग्रीन धूमकेतु या सी/2022 ई-3 को इस साल 1 और 2 फरवरी को देखा गया। अपने अद्भुत हरे प्रकाश के कारण यह चर्चा का केंद्र बन गया। इसे 2 मार्च 2022 को खगोल विज्ञानी फ्रैंक मेसी और ब्राइस बोलिंग ने खोजा था। उत्तरी गोलार्ध के देश में लोगों ने इसे सुबह के समय आसमान में देखा। अब इसे दोबारा 50,000 साल बाद ही देखा जा सकेगा।

कोहोटेक धूमकेतु : 'सदी का धूमकेतु' के नाम से विख्यात कोहोटेक उल्कापिंड की खोज चेक गणराज्य के अंतरिक्ष विज्ञानी डॉक्टर लुबोस कोहोटेक ने मार्च 1973 में की थी। जब इसकी खोज हुई, तब यह सूर्य से 748 मिलियन किमी. दूर था। पहली बार इतनी दूर स्थित किसी धूमकेतु को देखा गया था।

वेस्ट धूमकेतु : वेस्ट धूमकेतु की खोज डेनमार्क के अंतरिक्ष विज्ञानी रिचर्ड वेस्ट ने नवंबर 1975 में की थी। कोहोटेक उल्कापिंड के ठीक 2 साल बाद आसमान में इस धूमकेतु ने छटा बिखेरी थी। कोहोटेक धूमकेतु की लालिमायुक्त छटा देखते ही बनती थी। सूर्य के पीछे से निकलते हुए इस उल्कापिंड को दिन के उजाले में भी आसानी से देखा गया था। बाद में सूर्य के अधिक करीब पहुंचने के कारण चार टुकड़े हो गए और यह बिखर गया।

हैली धूमकेतु : यह पृथ्वी से देखा गया सबसे प्रसिद्ध धूमकेतु है। इसका नाम खगोल विज्ञानी एडमंड हैली के नाम पर रखा गया। यह धूमकेतु सन् 1465, 1531, 1607 और 1682 में देखा गया था। एडमंड ने उसी समय अपनी गणना के बाद बताया था कि यह 1758 के अंत में फिर से दिखेगा। सच में यह 1758 में 25 दिसंबर की रात में दिखाई पड़ा। इसके बाद यह धूमकेतु 1835, 1910, 1986 में भी देखा गया। अब इसे 2061 में फिर से देखा जा सकेगा।

इकेया सेकी धूमकेतु : इस धूमकेतु को 18 सितंबर 1965 में खोजा गया था। इसे दो जापानी खगोल वैज्ञानिकों इकेया कोरू और सेकी त्सुतोमू ने खोजा था। 21 अक्टूबर 1965 को सूर्य के बेहद नजदीक से गुजरता हुआ, यह धूमकेतु इतना चमकीला था कि उसे दिन के उजाले में बिना किसी वैज्ञानिक उपकरण के नंगी आंखों से भी देखा जा सकता था। सूर्य के बेहद नजदीक पहुंचने के कारण यह टूट गया था।

हेलबॉप धूमकेतु : यह घूमकेतु 17 मई 1996 को लोगों को बिना किसी उपकरण के नजर आया था। तेजी से सूरज के सामने से निकले इस धूमकेतु ने बड़ा शानदार नजारा पेश किया, जिसे देखकर हर कोई हैरान रह गया था। इसे लोगों ने अलग-अलग रूपों में 18 महीने तक देखा। संभवतः धूमकेतुओं के इतिहास में यह अब तक का सबसे ज्यादा देखा गया धूमकेतु था। इसकी खोज 23 जुलाई 1995 को एलेन हेल और थॉमस बॉप ने की थी। *

बातचीत / पूजा सामंत

इन दिनों बिदिता बाग सोशल इश्यू बेस्ड फिल्म 'लकीरें' को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म और करियर से जुड़ी खुली बातें बिदिता बाग से।

अब बड़े बैनर्स की फिल्में करने की इच्छा है : बिदिता बाग

फिल्म 'लकीरें' को एक्सेप्ट करने के पीछे क्या खास वजह थी ?

इस फिल्म को एक्सेप्ट करने की सबसे बड़ी वजह थी, इसकी कहानी। फिल्म की कहानी दिलीप शुक्ला ने लिखी है, जिन्होंने 'दामिनी' जैसी जबरदस्त फिल्म लिखी थी। फिल्म 'लकीरें' के संवाद, कहानी जबरदस्त है। मेरा किरदार भी सशक्त है। मैंने फिल्म में एडवोकेट गीता बिश्वास का किरदार निभाया है। यह किरदार परफॉर्मेंस ओरिएंटेड है। मेरे साथी कलाकार आशुतोष राणा, गौरव चोपड़ा, टिया बाजपेयी भी बहुत अच्छे कलाकार हैं। कुल मिलाकर मेरे लिए फिल्म 'लकीरें' एक कंप्लीट पैकेज था। यह फिल्म नहीं करती तो एक बहुत बड़ी गलती होती।

फिल्म में एडवोकेट का किरदार निभाने के लिए आपने कैसी तैयारी की ?

फिल्म के डायरेक्टर दुर्गेश पाठक ने देश के कई शहरों के डोमेस्टिक वायलेंस और मैरिटल रेप पर काफी रिसर्च किया था। उन्होंने लॉ और रिफॉर्म्स की भी जानकारी ली थी, केसेस जाने-समझे थे। जब डायरेक्टर ने पूरा काम गहराई से किया है, तो कलाकारों के लिए कुछ खास बचता नहीं है, लेकिन मैंने अपने संवादों और अभिनय पर पूरा ध्यान दिया।

फिल्म के लीड एक्टर आशुतोष राणा और अन्य कलाकारों के साथ आपके एक्सपीरियंस कैसे रहे ?

आशुतोष राणा की हिंदी गजब की है। मैं कोलकाता से हूं, कुछ साल पहले मेरी हिंदी अच्छी नहीं थी। मैंने अपनी हिंदी बहुत सुधारी। आशुतोष जी से बात करते समय मैं पहले डर रही थी, फिर ध्यान देकर हिंदी बोलती रही। मेरे मन में यह बात भी थी कि मैं बंगाली होकर अपनी हिंदी से उन्हें प्रभावित कर दूं। शुद्ध हिंदी और मुहावरों का जब मैंने प्रयोग किया तो आशुतोष जी चकित रह गए, उन्होंने मेरी तारीफ भी की। बाकी को-एक्टर्स के साथ काम करने का एक्सपीरियंस भी अच्छा रहा। गौरव चोपड़ा तो आवाज के जादूगर और डबिंग मास्टर हैं। टिया बाजपेयी भी बेहतरीन कलाकार हैं। कुल मिलाकर फिल्म 'लकीरें' में काम करने का अनुभव बहुत शानदार रहा। अब मुझे अच्छी, ए ग्रेड और बड़े बैनर्स की फिल्में करने की इच्छा है।

आपने अब तक के फिल्मी करियर में सोशल इश्यू बेस्ड फिल्में की हैं, कोई खास वजह ?

हर दूसरा कलाकार फॉर्मूला फिल्मों में ज्यादा रुचि रखता है। पूरी फिल्म इंडस्ट्री को एंटरटेनमेंट फिल्मों से ही आय मिलती है। आम दर्शक भी ऐसी फिल्में देखना पसंद करते हैं, जिसमें ग्रेंड लोकेशन, चकाचौंध, रंग-बिरंगी ड्रेसेस, कॉमेडी, नाच-गाने, फाइटिंग का तड़का हो। सभी कलाकार ऐसी फॉर्मूला फिल्में ही करेंगे, तो उन अहम मुद्दों का क्या होगा, जिनसे समाज प्रभावित होता है। इसलिए मैं सोशल इश्यू बेस्ड फिल्में करती हूं।

आपके अपकमिंग प्रोजेक्ट्स क्या हैं ?

फिल्म 'लकीरें' के बाद मेरी वॉटर कंजर्वेशन पर एक फिल्म आएगी। दो और प्रोजेक्ट हैं, एक प्रोजेक्ट इस साल दिसंबर और दूसरा प्रोजेक्ट अगले साल जनवरी में रिलीज होंगे। *

एटिकेट्स / कीर्तिशेखर

प्रोफेशनल ग्रोथ में बाधक एंप्लॉइज की ये बैड हैबिट्स

किसी ऑफिस में काम करने वाले एंप्लॉइज आमतौर पर दो हिस्सों में बांटे जा सकते हैं। एक जो दफ्तर की शान होते हैं, यानी ऑफिस एसेट। दूसरे वे कर्मचारी होते हैं, जिन्हें दफ्तर का बोझ समझा जाता है, यानी ऑफिस लायबिलिटी। समझने वाली बात यह है कि वो कौन-सी हैबिट्स होती हैं, जिससे आपकी प्रोफेशनल इमेज खराब होती है?

देर से ऑफिस आना: हर ऑफिस में कुछ एंप्लॉइज बार-बार चेतावनी देने के बाद भी समय पर नहीं आते हैं। कॉरपोरेट सेक्टर ने ऐसे एंप्लॉइज के लिए ही बायोमेट्रिक्स अटेंडेंस रिकॉर्ड वाली मशीन लगाई जाती हैं। इस तरह जो एंप्लॉई, जिस समय ऑफिस में प्रवेश करते हैं, उस समय से ही उनकी ड्यूटी शुरू मानी जाती है। यह व्यवस्था इतनी कारगर साबित हुई है कि जिन ऑफिसों में ऐसे अटेंडेंस की व्यवस्था हुई, वहां 99 फीसदी कर्मचारी समय पर दफ्तर पहुंचने लगे।

मनमाना लंच ब्रेक लेना : मनमाने ढंग से लंच ब्रेक लेना भी दफ्तरों में कुछ कर्मचारियों द्वारा समय बर्बाद करने का एक जाना-पहचाना तरीका है। शायद यही कारण है कि कॉरपोरेट सेक्टर में अब लंच ब्रेक की व्यवस्था आधुनिक तरीके से हो रही है। लंच टाइम होते ही सारे वर्कस्टेशन ऑटोमेटिकली रुक जाते हैं, वर्कस्टेशन पर लाइट बंद हो जाती है। यानी तब वर्कस्टेशन में काम नहीं किया जा सकता है, सिर्फ डायनिंग एरिया में लाइट होती है। लंच ब्रेक का टाइम खत्म होते ही एकदम से सारी लाइटें ऑन कर दी जाती हैं, वर्कस्टेशन शुरू हो जाते हैं। ताकि समय की बर्बादी ना हो। अब ज्यादातर दफ्तरों में सीसीटीवी कैमरा भी लगाया गया है, जिससे पल-पल की गतिविधि रिकॉर्ड होती रहें।

बिना तैयारी डिस्कशन करना : दफ्तरों में जब भी प्रोजेक्ट डिस्कशन होता है तो कुछ कर्मचारी तैयारी करके नहीं आते हैं और टाइम पास करने के लिए टीम लीडर के सवाल पर कुछ भी बोलने लगते हैं। अब इस पर भी कॉरपोरेट कंपनियों में प्रतिबंध लग रहा है। वरिष्ठ अधिकारी ऐसे एंप्लॉइज की बेसलेस या बिना लॉजिक की बातों पर तुरंत रोक लगा देते हैं। इससे फायदा यह हुआ है कि अब मीटिंग्स में बेमतलब की बातें नहीं हो पाती हैं।

स्मार्टफोन का ओवरयूज : कई एंप्लॉइज, दफ्तर तो समय पर पहुंचते हैं लेकिन उनमें एक खराब आदत यह होती है कि वे ऑफिस टाइम में बार-बार स्मार्टफोन पर अपनी पर्सनल मेल देखते रहते हैं या सोशल मीडिया साइट्स पर लोगों की पोस्ट देखने लगते हैं या फोन पर पर्सनल बात करते हैं। इससे कंपनी का बहुत टाइम लॉस होता है। इसी वजह से अब ज्यादातर प्राइवेट संस्थानों में कर्मचारियों का फोन रिसेप्शन पर ही रखवा लिया जाता है, ताकि एंप्लॉइज की एफिशिएंसी प्रभावित ना हो। *

ऑफबीट सिनेमा / हेमंत पाल

एक कहानी, कुछ गाने, बीच में इंटरवल और फिल्म का सुखद अंत! ये फॉर्मूला बरसों से हिंदी सिनेमा में इस्तेमाल होता आ रहा है। लेकिन कुछ गिनी-चुनी ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें इंटरवल नहीं था। ऐसी ही तीन फिल्मों पर एक नजर।

दर्शकों को बांधे रखने वाली बिना इंटरवल की फिल्में

आमतौर पर हिंदी फिल्में बने-बनाए फॉर्मूले पर ही बनती हैं। लेकिन कुछ फिल्मकारों ने लीक से हटकर भी फिल्में बनाने का रिस्क लिया। एक पात्रीय अभिनय वाली फिल्म और एक रात की कहानी पर फिल्म बनाने जैसे प्रयोगों के अलावा बिना इंटरवल वाली फिल्म बनाना भी ऐसा ही अनोखा प्रयोग है। सौ सालों से ज्यादा के हिंदी फिल्म इतिहास में ऐसी फिल्में गिनती की बनीं, जिसमें कोई इंटरवल नहीं था। ऐसा करने का सिर्फ यही मकसद था कि दर्शकों को फिल्म के कथानक के रोमांच से बांधकर रखना। इस प्रयोग को जिस भी फिल्म में अपनाया गया, उस फिल्म में इस बात का भी ध्यान रखा गया कि फिल्म की लंबाई ज्यादा ना हो। याद किया जाए, तो सिर्फ तीन ही फिल्में याद आती है, जिनमें इंटरवल नहीं था।

यूनीक मर्डर मिस्ट्री इत्तेफाक : संभवतः यश चोपड़ा पहले ऐसे फिल्मकार थे, जिन्होंने बिना इंटरवल के 'इत्तेफाक' (1969) बनाने का साहस किया था। इसके पीछे उनकी सोच थी कि दर्शकों को फिल्म की कहानी इतना बांध ले कि वे सीट से ना उठें। वास्तव में ऐसा हुआ भी था। यह एक ऐसी मर्डर मिस्ट्री थी, जिसमें ना तो इंटरवल था और ना कोई गाना। फिल्म का कथानक अंग्रेजी नाटक 'साइनपोस्ट टू मर्डर' से प्रेरित था। इस फिल्म में राजेश खन्ना ने एक पेंटर की भूमिका निभाई थी, जिस पर अपनी पत्नी अरुणा ईरानी को मारने का इल्जाम लगता है। पुलिस से बचने के लिए राजेश खन्ना का किरदार जिस घर में घुसता है, उस घर की मालकिन (नंदा) ने भी अपने पति की हत्या करके उसकी लाश को घर में छुपाया था। फिल्म का रोमांच ऐसा था कि दर्शकों को इंटरवल ना होने का एहसास ही नहीं हुआ। यह फिल्म मात्र 20 दिन में बनी थी और पसंद भी की गई थी।

फिल्म 'इत्तेफाक' में राजेश खन्ना-नंदा

फिल्म 'धोबी घाट' के एक सीन में आमिर खान

चार किरदारों की कहानी धोबी घाट : फिल्म 'इत्तेफाक' के बरसों बाद 2010 में बिना ब्रेक का फार्मूला आमिर खान ने अपनी फिल्म 'धोबी घाट' में अपनाया। सीमित बजट और लीक से हटकर बनी इस फिल्म को आमिर की (तत्कालीन) पत्नी किरण राव ने डायरेक्ट किया था। इसमें आमिर खान के अलावा कोई नामचीन चेहरा नहीं था। लेकिन फिल्म का कथानक इतना सशक्त था कि दर्शक डेढ़ घंटा बंधकर बैठे रहे। यह फिल्म चार अलग-अलग पृष्ठभूमि से आए किरदारों की कहानी है, जो कुछ नया करना चाहते हैं। ये चारों एक-दूसरे से अलग हैं, फिर भी आपस में जुड़े हैं। वे मुंबई की बुराई करते हैं, लेकिन इससे दूर भी नहीं रह पाते। उनके दर्द के पीछे उनका अतीत छुपा है। वे बहुत कुछ करना चाहते हैं, लेकिन मन मसोसकर रह जाते हैं। मान लेते हैं कि यही उनकी जिंदगी और नियति है। फिल्म में मोनिका डोगरा का किरदार जो बैंकर है लेकिन उसे फोटोग्राफी पसंद है। आमिर के किरदार ने अपना जीवन चित्रकारी को समर्पित कर रखा है। किंतु उसका जीवन कला और सोच के बीच बंटा हुआ है। कृति मल्होत्रा ने ऐसा किरदार निभाया, जो अपने भाई से दूर होकर दुखी है। अंदर से दुखी होकर भी वो सबके सामने खुश होने का नाटक करती है। चौथा किरदार प्रतीक बब्बर ने निभाया, जो धोबी है लेकिन उसे हीरो बनने का जुनून है। लेकिन यह नहीं जानता कि जीवन में आसानी से कुछ नहीं मिलता है।

विक्रमादित्य मोटवानी डायरेक्टेड 'ट्रैप्ड' में राजकुमार राव

ठेठ मुंबइया स्टाइल वाली ट्रैप्ड : 2016 में आई फिल्म 'ट्रैप्ड' भी ऐसी ही फिल्म थी, जिसमें इंटरवल नहीं था। इस फिल्म के निर्देशक विक्रमादित्य मोटवानी हैं। फिल्म में मुंबई के एक खाली पड़े अपार्टमेंट में राजकुमार राव का किरदार फंस जाता है। वहां कोई सुविधा नहीं होती। अपने फंसे होने की सूचना देने के लिए राजकुमार राव का किरदार क्या-क्या हथकंडे करता है, यही इस फिल्म का रोमांच था। हालांकि ठेठ मुंबइया स्टाइल की यह फिल्म कमजोर कथानक की वजह से बहुत चल नहीं सकी थी। *

दो इंटरवल वाली हिंदी फिल्में

जहां बिना इंटरवल वाली तीन फिल्में याद आती हैं, वहीं राजकपूर ने दो ऐसी फिल्में भी याद आती हैं, जिनमें एक नहीं दो इंटरवल थे। पहले 'संगम' (1964) और फिर 'मेरा नाम जोकर' (1970) फिल्में ऐसी थीं, जिनमें दो इंटरवल थे। वास्तव में इन फिल्मों की लंबाई इतनी ज्यादा थी कि उसमें दो इंटरवल करने पड़े। लंबी फिल्मों की फेहरिस्त में भीष्म साहनी के उपन्यास पर बनी 'तमस', जेपी दत्ता की 'एलओसी' और राजश्री की 'मैंने प्यार किया' के अलावा 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' का नाम भी लिया जा सकता है। विवादास्पद कहानी होने के कारण 'तमस' को टीवी पर सीरियल की तरह दिखाया गया। *